RNI-MPHIN/2005/14721
Po-Malwa Div/244/2023-25
Desp.02 March, 2024

अंक – 09 (मासिक) वर्ष – 19 मार्च, 2024 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

महिला विशेषांक

नारी शक्ति : राष्ट्र सम्मान

100 करोड़ की लागत से बनेगा अयोध्या में अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन भवन

वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2024
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us @
srimaheshwaritimes.com

बात हम सबकी
सुने हर शनिवार

Contemporary Range of Home Essentials, Crafted by Experts

FANS | LIGHTING
APPLIANCES | SWITCHES

Toll Free : 18001032676 | Email : customercare@rrglobal.com | Website: www.rrglobal.com | Follow us

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-09 ▸▸ मार्च 2024 ▸▸ वर्ष-19

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
श्यामा भांगड़िया, नई दिल्ली

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
रामगोपाल मूंदड़ा (सूरत)
प्रो. कल्पना गगडानी (मुम्बई)
गोविन्द मालू (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
■ **PNB A/c. No. : 0459002100043471**
IFSC- PUNB0045900
■ **ICICI A/c. No. : 030005001198**
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 900/- for Three years
Rs. 3500/- for Life Time (12 Years)

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

(8 मार्च)

जगत् की समस्त नारी शक्ति
को हार्दिक मंगलकामनाऐं
एवं नमन...

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

विचार क्रान्ति

क्रोध से पहले क्षमा

कौरवों के हाथों जुआँ में सारा राजपाट हारकर युधिष्ठिर व द्रौपदी सहित सभी पाण्डव शर्त के अनुरूप वनवास चले तो सबसे पहले द्वैतवन में डेरा डाला। सब अत्यंत खिन्न और आक्रोशित थे। इनमें भरी सभा में चीरहरण का अपमान झेल चुकी द्रौपदी तो प्रतिशोध की आग में धधक रही थी। जब पूरा परिवार साथ बैठा तो द्रौपदी ने क्षत्रिय धर्म का हवाला देते हुए युधिष्ठिर को प्रतिशोध के लिए उकसाना शुरू किया। द्रौपदी ज्ञानी व धैर्यवान थी लेकिन अच्छे से जानती थी कि कौरव दुष्ट हैं, अतः युधिष्ठिर बजाय 13 बरस वनवास काटने के सीधे हस्तिनापुर पर आक्रमण करें और छीना गया राज्य वापस प्राप्त कर लें।

द्रौपदी ने युधिष्ठिर से कहा, 'कौरवों के प्रति अब क्षमा का अवसर नहीं है। अब तेज अर्थात् क्रोध करने का समय है। अतः हे महाराज! अब आप शीघ्र ही तेज का प्रयोग करें।'

द्रौपदी की भावना और बात दोनों ठीक थी किंतु युधिष्ठिर धर्म का महत्व उससे अधिक समझते थे। वे जानते थे कि उन्होंने स्वयं भी जुआँ खेलने का पाप किया है। उसी दुष्कर्म के फलस्वरूप वनवास का कष्ट मिला है तो उसे भोगना होगा। अभी कौरवों को क्षमा करना ही उचित है। फिर क्षमा कायरों का गुण नहीं है बल्कि असल बलवानों का मूल स्वभाव है।

अतः युधिष्ठिर ने देशकाल और परिस्थितियों के अनुरूप धर्म का आश्रय लेते हुए क्षमा को ही उचित बताया। बोले, 'सुशोभने! जो व्यक्ति अपने क्रोध को काबू कर लेता है, उसकी सदा उन्नति होती है। जो क्रोध को रोक नहीं पाता, उसके लिए वह भयंकर विनाशकारी बन जाता है।'

युधिष्ठिर क्रोध के लिए सही समय की प्रतीक्षा के पक्षधर थे। अतः उन्होंने क्षमा की महत्ता बताते हुए कहा, 'येषां मन्युर्मनुष्याणां क्षमयाभिहतः सदा। तेषां परतरे लोकास्तस्मात् क्षान्तिः परा मता।।' अर्थात् जो लोग अपने क्रोध को क्षमाभाव से दबा लेते हैं, उन्हें ही सर्वोत्तम लोक प्राप्त होते हैं। अतः क्षमा ही सबसे उत्कृष्ट मानी गई है।

साधो! महाभारत साक्षी है, क्षमा के अनेक अवसर देने के बाद भी जब कौरवों ने पांडवों को उनका राज्य नहीं लौटाया तो पांडवों के क्रोध की ज्वाला में सारे कौरव भस्म हो गए। जब आवश्यक हुआ तो युधिष्ठिर ने क्रोध किया किंतु उससे पहले क्षमाभाव को ही संकल्प की भांति साधे रहे। सार यह कि अपना बुरा करने वाले के साथ पहले क्षमा की भावना ही रखना चाहिए। क्षमा से हम स्वयं अनेक संतापों से बच जाते हैं जबकि क्रोध सदैव विनाशकारी सिद्ध होता है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

नारी तू नारायणी...

हमारे सभी सनातन धर्म ग्रंथ नारी सम्मान ही नहीं बल्कि नारी शक्ति की यशोगाथा से भी परिपूर्ण हैं। हमारे शास्त्रों में नवदुर्गा रूप में न सिर्फ नारी की अष्ट भुजाओं वाली देवी निरूपित किया बल्कि उसे सहत्र भुजाओं वाली नारायणी रूप में भी गौरवान्वित किया गया। वह अपनी इन असंख्य भुजाओं से न सिर्फ आततायियों का वध ही करती हैं बल्कि वह सृष्टि के लालन, पालन व संचालन में भी अपना योगदान देती हैं। इन रूपों का अर्थ ही नारी की बहुमुखी प्रतिभा व क्षमताओं का प्रदर्शन है। अतः नारी कभी अबला नहीं रही। सिर्फ विदेशी आक्रांताओं के आक्रमण के दौरान उसे कुछ दायरों में प्रतिबंधित किया गया जो कालांतर में नारी की सीमा बन गये। लेकिन स्वतंत्र भारत में फिर नारी शक्ति का शंखनाद प्रारम्भ हुआ और उसने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

यह अंक ऐसी ही महिलाओं को समर्पित है, जिन्होंने हर परिस्थितियों में अपनी अस्मिता को साबित किया है और अपने परिवार को भी गौरवान्वित होने का अवसर दिया है। इन्होंने एक बार फिर इस सच्चाई को स्थापित किया है कि नारी शक्ति है और संगठन के किसी सौपान पर उसे परखा जा सकता है। जब-जब उसे समाज और परिवार ने अवसर दिया है, उसने अपनी दैवीय प्रतिभा और कौशल से सफलता का आकाश छुआ है। आज देश में एक बार फिर महिला शक्ति का प्रादुर्भाव होता नजर आ रहा है। पिछले कुछ दशकों में महिलाओं ने पाताल और आकाश को छूने से लेकर राष्ट्राध्यक्ष के सिंहासन तक अपनी प्रतिभा का जौहर दिखला दिया है। उनके हाथों में अरबों का कारोबार करने वाले उद्योगों की बागडोर है तो गलत दिशा में जा रही राजनीति और समाज की दिशा बदल डालने की कमान भी । वह दिन दूर नहीं जब कन्या जन्म को अभिशाप नहीं वरदान माना जाएगा। शायद आपको भी उस दिन की प्रतीक्षा होगी।

इस अंक में हमने माहेश्वरी समाज की इन महिला विभूतियों से पाठकों को परिचित कराने की कोशिश की है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर अपने आपको योग्य साबित किया है। उनकी समाज में अलग पहचान है। उन्होंने न केवल अपने परिवार का आर्थिक साम्राज्य खड़ा किया अपितु अन्य लोगों को भी रोजी-रोटी उपलब्ध कराकर देश व समाज सेवा में हाथ बांटने की कोशिश की है। इनका हौंसला, इनकी ताकत, इनका दृष्टिकोण निःसंदेह अन्य महिलाओं के लिए ऐसा प्रेरणा पुंज होगा जिसके आलोक में वे भी अपनी प्रगति का रास्ता तलाश सकेगी। नारी में मानवीय संवेदनाऐं प्रकृति प्रदत्त रूप से उमड़ती हैं, वहीं उसकी उत्कृष्ट प्रबंधन क्षमता उसकी विशिष्ट प्रतिभा की कहानी कहती है। इस अंक में नारी के इन्हीं विभिन्न आयामों को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

इस मंगलमय अवसर पर महिलाओं से यह आग्रह है कि वे अपने आपको बदलें। अपने मन में यह भाव स्थापित करें कि हम भी किसी से कम नहीं है। अपनी क्षमता और अनुकूलताओं के अनुरूप कुछ ऐसा करें कि परिवार और समाज आप पर गौरव कर सकें। निश्चित ही इस अंक में भी आप समस्त स्तम्भों के साथ उतनी ही ज्ञानवर्द्धक, रोचक और पठनीय सामग्री पाएंगे जिसकी आपको प्रतीक्षा रहती है। जय महेश!

सरिता बाहेती
प्रबंध सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

जयपुर में श्री गोपीकिशन हुरकट के यहाँ 17 नवम्बर 1972 को जन्मी तथा मार्बल व्यवसायी श्री राधेश्याम भांगड़िया की धर्मपत्नी के रूप में दिल्ली को अपनी कर्मभूमि बना लेने वाली श्रीमती श्यामा भांगड़िया की पहचान एक ऐसी समाजसेवी के रूप में है, जो समाज की सेवा के लिये तन-मन-धन से तैयार रहती हैं। वर्तमान में आप दिल्ली प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष के साथ ही अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन कार्य समिति सदस्य की जिम्मेदारी भी सफलतापूर्वक निभा रही हैं। समाज संगठनों में अपनी दीर्घ सेवाओं के अंतर्गत आप दिल्ली प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन में संयुक्त सचिव (2009-12), कोषाध्यक्ष (2012 - 16) तथा महामंत्री (2016-19) जैसे महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी भी निभा चुकी हैं। अ.भा. मारवाड़ी महिला संगठन, माहेश्वरी क्लब दिल्ली तथा अशोक विहार मंडल दिल्ली से सदस्य एवं एसआरएल मीडिया ग्रुप से सलाहकार के रूप में सम्बद्ध हैं। अपनी विशिष्ट प्रतिभा के कारण आप तीन बार अ.भा. माहेश्वरी महिला समाज की रिपोर्ट रायटिंग तथा स्पीकिंग प्रतियोगिता में विजेता रही हैं। उन्होंने दिल्ली में कई रक्तदान व जागरुकता शिविर तथा विभिन्न पर्व-त्योहारों पर युवा व महिलाओं के लिये सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। कई सामाजिक व राजनीतिक कार्यक्रमों में आप सम्माननीय अतिथि के रूप में आमंत्रित की जा चुकी हैं। वर्तमान में माहेश्वरी महिला मंडल की सतत दूसरी बार अध्यक्ष निर्वाचित होकर भी सेवा दे रही हैं। वर्ष 2020 में प्रथम बार महिलाओं के लिये ऑनलाईन प्रबंधन वर्कशॉप के आयोजन के लिये आपका नाम गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज किया जा चुका है। अपने स्कूली जीवन के दौरान आप उत्कृष्ट खो-खो खिलाड़ी भी रही हैं।

क्यों पूज्यनीय है नारी?

भारतीय संस्कृति में नारी को हमेशा ही पूज्यनीय माना गया है। हमारे कोई भी पुराने प्राचीन ग्रंथ हों सभी में नारी की वंदना की गई है। नारी के सम्मान का अर्थ इसी से स्पष्ट होता है कि नारी शक्ति स्वरूप में नवदुर्गा, महालक्ष्मी, माता पार्वती, ब्राह्मणी आदि के रूप में पूज्य कही गई है। हमारा कोई भी धार्मिक अनुष्ठान बिना देवी पूजा के पूर्ण नहीं होता। इतना ही नहीं कोई भी अनुष्ठान कोई पुरुष अकेले भी पूर्ण नहीं कर सकता, इसके लिये उसकी युगल रूप में सपत्नीक उपस्थिति अनिवार्य है। इसका अर्थ ही यह है कि हमारी संस्कृति में नारी का योगदान न सिर्फ बराबर बल्कि कहीं उससे अधिक ही माना गया है। यही कारण है कि शक्ति उपासना के लिये पुरुष वर्ग को भी नारी रूपी शक्ति स्वरूपा के सामने नतमस्तक होना पड़ता है। माँ के रूप में तो वैसे भी नारी को साक्षात ईश्वर का स्वरूप ही मान लिया गया है।

अब प्रश्न यह उठता है कि नारी का यह सम्मान क्यों है? तो इसका उत्तर यही होगा कि नारी चुहँमुखी प्रतिभा ओर दक्षता से परिपूर्ण होती है। वह सिर्फ किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं होती बल्कि उसकी क्षमता से तो हर क्षेत्र प्रभावित रहता है। यह क्षमता सिर्फ नारी में ही है, जो संतान को जन्म देकर तथा उसका लालन पोषण करते हुए संस्कार देकर उसे परिपूर्ण मानव बनाती है। यह कार्य कोई पुरुष कर ही नहीं सकता। शेष पुरुष प्रधान जो क्षेत्र है आज उनमें भी नारी अपनी सफलता का परचम फहराती हुई अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने में पीछे नहीं है। उसमें श्रेष्ठ प्रबंधन के गुण हैं, जो उसे न सिर्फ घर की देखरेख में मदद करते हैं, बल्कि उसे किसी व्यवसाय की बागडोर सम्भालने में भी प्रकृति प्रदत्त रूप से समर्थ बनाते हैं। उसकी संवदनशीलता श्रेष्ठ टीम भावना का विकास करती है।

लेकिन विडम्बना है कि वर्तमान में कुछ नारी अधिकारों की बातत करने वाले तथाकथित समाजसेवी नारी और पुरुष को प्रतिद्वंद्वी के रूप में खड़ा कर रहे हैं। जबकि नारी व पुरुष दोनों ही एक - दूसरे के बिना अपूर्ण है। वास्तव में आर्थिक उन्नति में नारी का सहयोग व उसका आत्मनिर्भर होना तो जरूरी है, लेकिन यह भी न भूलें कि यह सब हमारे परिवार के लिये है। अतः अपनी परिवारिक जिम्मेदारियों को भी न भूलें। इसे दोनों को मिलकर ही निभानी है और वह भी पूरे सामंजस्य के साथ लेकिन इसमें संतान को संस्कार देने में तो नारी की ही अहम भूमिका रहेगी क्योंकि यह सामर्थ्य तो उसी में है। उसी का स्नेह व ममता ही मानव को सही मायने में मानव बनाती है, जिसमें संवेदना होती है। अतः नारी सम्मत अपने दायित्व को भी न भूलें क्योंकि यह सिर्फ हमारा ही न सिर्फ कर्त्तव्य है, बल्कि अधिकार भी है। इसी से हम पूज्य हैं।

अंत में मैं समाज संगठनों से यही अपील करना चाहूँगी कि वर्तमान में समाज की सबसे बड़ी समस्या संस्कारों का क्षरण है। अतः अन्य प्रकल्पों के साथ इस पर आधारित कार्यक्रमों का रोचक ढंग से जरूर आयोजन करें, जिससे हम अपनी भावी पीढ़ी में संस्कारों का सही रूप में रोपण कर सकें। याद रखें संस्कार बचेंगे तो ही सब कुछ बचेगा।

श्यामा भांगड़िया, (नई दिल्ली)
अतिथि सम्पादक

श्री मात्री माताजी

श्री मात्री माताजी माहेश्वरी समाज की परवाल खांप की माताजी हैं। ग्रामीण इन्हें शीतला माताजी के रूप में भी पूजते हैं।

श्री मात्री माताजी का मंदिर राजस्थान के खींवसर जिला नागौर में बस स्टेण्ड के समीप खींवसर फोर्ट के पास स्थित है। यहां कोई स्थाई पुजारी नहीं है। अपनी मान-मिन्नत पूर्ण होने पर लोग साड़ी, मिठाई व मखाना चढ़ाकर माताजी पूजते हैं।

■ टीम SMT

कहाँ-ठहरें

यहाँ ठहरने के लिये माहेश्वरी समाज का सुविधायुक्त भवन है। यहाँ उच्च स्तरीय ठहरने की व्यवस्था के लिये फाईव स्टार होटल भी हैं।

कैसे पहुँचें

खींवसर नागौर तथा जोधपुर से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। यह नागौर से 43 कि.मी. व जोधपुर से 94 कि.मी. दूर है।

अयोध्या में 11 मार्च को सेवा सदन के भव्य भवन का शिलान्यास

देश के कई गणमान्य एवं राष्ट्रीय संत होगें इस आयोजन के साक्षी

पुष्कर। अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन 10 तीर्थ स्थलों के बाद रामलला की जन्म स्थली अयोध्या में भी भव्य भवन का निर्माण करने जा रहा है। ''सरस्वती देवी - शिवकिशन दम्मानी भवन'' के नाम से निर्मित होने वाले इस सेवा भवन के लिये भूमि क्रय कर ली गई है और इसका भूमिपूजन व शिलान्यास भव्य समारोह के साथ आगामी 11 मार्च को होगा।

इस आयोजन को लेकर गत 04 फरवरी को श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा सदन, पुष्कर की प्रबन्धकारिणी समिति की सेमी - वर्चुअल बैठक अध्यक्ष रामकुमार भूतड़ा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में वरिष्ठ उपाध्यक्ष कैलाश सोनी जयपुर, उपाध्यक्ष जयकिशन बल्दुवा ब्यावर, विजयशंकर मून्दड़ा सरवाड़, महामंत्री रमेशचन्द्र छापरवाल मकराना, कोषाध्यक्ष मनोहरलाल पुंगलिया जोधपुर, कार्यालय मंत्री मधुसुदन मालू, पुष्कर कार्यकारिणी समिति के सदस्य सम्पत बिड़ला, माणक दरक मेड़तासिटी, श्री कृष्ण अवतार भंसाली, सत्यनारायण काबरा जयपुर, जगदीश लोहिया किशनगढ़ सहित विशेष आमंत्रित सदस्य अशोक जैथलिया, अशोक मालानी अजमेर, ओमप्रकाश तापड़िया दिल्ली, शंकरलाल करवा जयपुर, किशन बंग किशनगढ़ आदि मुख्यालय में उपस्थित रहे एवं देशभर से काफी सदस्यगण वर्चुअल माध्यम से जुड़े। बैठक में विषय-सूची अनुसार सार्थक चर्चा एवं निर्णय हुए। प्रारम्भ में अध्यक्ष रामकुमार भूतड़ा ने श्री रामलला की जन्मभूमि अयोध्या में सेवा सदन द्वारा क्रय किये गये भूखण्ड के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं आगामी 11 मार्च, 2024 को भवन निर्माण हेतु भूमि-पूजन एवं शिलान्यास समारोह रखने की जानकारी प्रदान की।

ये रहेंगे इस आयोजन के अतिथि

अध्यक्ष श्री भूतड़ा ने बताया कि भूमि-पूजन एवं शिलान्यास समारोह में राष्ट्रीय संत श्री गोविन्ददेवगिरीजी महाराज, लोकसभाध्यक्ष ओमकृष्ण बिड़ला, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व प्रमुख भामाशाह राधाकिशन दम्मानी ने पधारने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। आशीर्वाददाता के रूप में श्रीरामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के अध्यक्ष महंत श्री नृत्य गोपालदासजी महाराज, रामानुज सम्प्रदाय के जगतगुरु स्वामी श्रीधराचार्यजी तथा युवाचार्य अभयदासजी महाराज, शिवमंदिर ट्रस्ट अयोध्या के स्वामी श्री सत्य प्रकाशानंदजी महाराज आदि उपस्थित रहेंगे। स्वागताध्यक्ष बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज के पूर्व चेयरमेन आनंद राठी रहेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में उ.प्र. सरकार के कृषिमंत्री व प्रभारी मंत्री अयोध्या सूर्यप्रताप शाही, नगर निगम अयोध्या के मेयर महंत गिरीशपति त्रिपाठी, भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू तथा अ.भा. माहेश्वरी महासभा के सभापति संदीप काबरा उपस्थित रहेंगे। भामाशाह तथा सम्मानीय अतिथि के रूप में महासभा के पूर्व सभापति पद्मश्री बंशीलाल राठी, पूर्व सभापति जोधराज लड्ढा, उद्योगपति लक्ष्मीनारायण सोमानी (मुंबई), मनीष मूंदड़ा (जोधपुर-न्यूजर्सी), समाजसेवी बजरंगलाल तापड़िया, लादूलाल बांगड़ (रेवाड़ी), कन्हैयालाल लोया (हैदराबाद), ओमप्रकाश मारू (सूरत), विष्णुप्रकाश पुंगलिया (जोधपुर) तथा राधेश्याम मनियार (अहमदाबाद) आदि जैसी हस्तियाँ शामिल होंगी।

ऐसी रहेगी व्यवस्था

कार्यक्रम का नेतृत्व श्री भूतड़ा के मार्गदर्शन में वरिष्ठ उपाध्यक्ष कैलाश सोनी, महामंत्री रमेशचंद्र छापरवाल तथा कोषाध्यक्ष मनोहरलाल पुंगलिया सहित समस्त पदाधिकारी सम्भालेंगे। समस्त व्यवस्थाओं को सम्भालने के लिये आवास, भोजन, पंजीयन, भूमिपूजन, पांडाल व मंच संचालन आदि विभिन्न समितियों का गठन किया गया है, जो कुशलतापूर्वक व्यवस्था सम्भालेंगी। निर्धारित कार्यक्रमानुसार दशरथकुंड के पास पंचक्रोशी (पुराना परिक्रमा) मार्ग, अयोध्या में भवन निर्माण हेतु क्रय किये गये भूखंड पर 11 मार्च प्रातः 8 बजे भूमिपूजन व शिलान्यास समारोह आयोजित होगा। इस आयोजन के लिये एक दिवस पूर्व 10 मार्च सायं 7 बजे से 10 बजे तक यज्ञ एवं सुंदरकांड तथा पुष्पों की होली का आयोजन होगा। अगले दिन 11 मार्च को प्रातः 7 बजे से पंजीयन होगा। इस आयोजन में शामिल अतिथियों की आवास व्यवस्था आदित्य भवन, वैदेही भवन, अशर्फी भवन, वैदान्ती आश्रम, वेंकटेश निलयम, लाल मौर्या आदि भवनों में रखी गई है। चाय-कॉफी, अल्पाहार व भोजन व्यवस्था आयोजन स्थल पर रहेगी।

युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज जयपुर के अंतर्गत संचालित माहेश्वरी इंटरनेशनल मैरिज ब्यूरो (MIMB) द्वारा पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा की सहभागिता में दो दिवसीय अखिल भारतीय माहेश्वरी युवक-युवती परिचय सम्मेलन 'ORBIT 24' 'उत्सव' जनोपयोगी भवन, विद्याधर नगर, जयपुर में 24-25 फरवरी, 2024 को आयोजित हुआ। मैरिज ब्यूरो चेयरमैन संजय माहेश्वरी ने बताया कि दो दिवसीय 22 वें परिचय सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रकाश चंद्र पोरवाल भीलवाड़ा, विशिष्ट अतिथि विवेक लड्ढा जयपुर एवं स्वागताध्यक्ष दिलीप जाजू ब्यावर के सान्निध्य में हुआ। समाज अध्यक्ष केदार मल भाला, महामंत्री मनोज मूंदड़ा, पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के प्रदेशाध्यक्ष जुगलकिशोर सोमाणी एवं प्रदेशमंत्री राजकुमार धूत सीकर, विवाह प्रकोष्ठ मंत्री सत्यनारायण करवा, संयोजक राजीव बागड़ी एवं अन्य पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर परिचय स्मारिका का विमोचन भी किया गया। परिचय सम्मेलन के प्रथम दिन उपस्थित 175 प्रत्याशियों में से 40 युवतियों और 70 युवकों ने मंच पर इंटरैक्टिव सेशन में अपना परिचय दिया एवं जो प्रत्याशी किसी भी कारणवश नहीं पहुंच सके थे उनके लिए ऑनलाइन वर्चुअल मीटिंग की भी व्यवस्था पहली बार की गई।

सिद्धार्थ को प्रथम पुरस्कार

जयपुर। जिला माहेश्वरी सभा के वरिष्ठ सदस्य गोपाल तामडी तोषनीवाल के सुपौत्र तथा होंगकांग प्रवासी मनीष-पूनम तामड़ी के 11 वर्षीय सुपुत्र सिद्धार्थ माहेश्वरी ने YMCA क्रिश्चियन कॉलेज की एक प्रतियोगिता में 6,892 प्रश्नों के उत्तर देकर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा सहित समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

गौशालाओं को 35 लाख का दान

जोधपुर। राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष वयोवृद्ध श्रीनिवास तापड़िया ने नागौर जिले की इकत्तीस गौशालाओं को कुल पैंतीस लाख रुपयों का दान देकर गौ श्रद्धा प्रकट की।

महिला संगठन ने की धार्मिक यात्रा

दिल्ली। प्रदेश माहेश्वरी महिला द्वारा आयोजित हरिद्वार बारामासी स्नान का नौवा स्नान 26 सदस्याओं के साथ सकुशल संम्पन्न हुआ। इस बार का स्नान माघ की पूर्णिमा व फाल्गुन की एकम का हुआ जिसमें दिल्ली प्रदेश से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मंजू मांधना व बहादुरगढ़ से राष्ट्रीय सह प्रभारी सुमन जाजू का भी साथ रहा। दिल्ली से 24 फरवरी को सुबह 5 बजे बस द्वारा रवाना हुए। कुल 26 सदस्याओं के साथ गंगा घाट हर की पौड़ी पर माघ की पूर्णिमा का स्नान किया। दूसरे दिन 25 फरवरी फाल्गुनी एकम का स्नान हर की पौड़ी पर राम नाम मनका से 108 डुबकियां लगाकर भारत माता मंदिर के दर्शन करने पहुंचे। भंडारे के लिए आटा, दाल, चावल, घी, तेल, नमक, मिर्च, मसाले राशन का सामान दिया और दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। इन दो दिनों में संस्कृति सिद्धा समिति के अंतर्गत स्नान, पूजा, दान धर्म, आरती, फाग के गीत व संचार सिद्धा समिति के अंतर्गत सह संयोजिका रेखा कालानी द्वारा एक क्लास ली गयी। अध्यक्ष श्यामा भाँगड़िया, सचिव लक्ष्मी बाहेती ने उक्त जानकारी दी।

कथक कलाकारों ने बनाया विश्व रिकॉर्ड

सीहोर। सरस्वती कत्थक (डांस) कला केन्द्र सीहोर के 12 वर्ष से ऊपर के 15 कथक नृत्य कलाकारों द्वारा 50 वें खजुराहो नृत्य महोत्सव - 2024 में 1500 कथक नृत्य कलाकारों के साथ एक साथ ताल बद्ध मनमोहक कथक नृत्य प्रस्तुति देकर गिनीज बुक ऑफ़ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया गया। यह कार्यक्रम संस्कृति मंत्रालय मध्यप्रदेश शासन द्वारा गत 19-20 फरवरी को खजुराहो में आयोजित हुआ। इसमें शहर की प्रतिष्ठित कथक नृत्य संस्था की संचालिका रुपाली नवीन सोनी के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में सहभागिता स्थानीय कलाकारों ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा किया गया। संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी एवं खजुराहो के सांसद एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष बी. डी. शर्मा भी उपस्थित थे।

जलने और जलाने का बस इतना सा फर्क है
फिक्र में होते हैं तो खुद जलते हैं बेफिक्र होते हैं तो दुनिया जलती है।

लक्ष्मी देवी नृसिंहदास मूंदड़ा मेडल

जोधपुर। देश की शीर्ष तीन लॉ युनिवर्सिटी में से एक नेशनल लॉ युनिवर्सिटी जोधपुर का 16वाँ दीक्षांत समारोह गत 10 फरवरी को आयोजित हुआ। इस आयोजन में राजस्थान उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश व कुलपति महेंद्र मोहन श्रीवास्तव की अध्यक्षता व उपकुलपति डॉ. हनप्रीत कौर तथा रजिस्ट्रार अंकित सिंहल के साथ अतिथि के रूप में उपस्थित समाजसेवी जगदीशचंद्र एन. मूंदड़ा व उनकी धर्मपत्नी सुधा मूंदड़ा ने सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को ''लक्ष्मीदेवी नृसिंहदास मूंदड़ा'' गोल्ड मेडल से सम्मानित किया। इसके अंतर्गत इस बार का यह गोल्ड मेडल एल. एल. एम. की टॉपर दीपा तथा एल.एल.बी. (ऑनर्स) की टॉपर आद्या गर्ग को प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि यह गोल्ड मेडल जगदीशचंद्र एन. मूंदड़ा द्वारा गत 16वर्षों से अपने माता-पिता की स्मृति में प्रदान किया जा रहा है तथा उन्होंने इसे आगामी 100 वर्षों तक सतत रूप से प्रदान करने की व्यवस्था भी की है।

गट्टानी का हुआ सम्मान

फरीदाबाद। पंजाब हरियाणा प्रादेशिक माहेश्वरी ट्रस्ट के अध्यक्ष चार्टर्ड अकाउंटेंट महेश गट्टानी का एक वैवाहिक कार्यक्रम में नांदेड़ आगमन हुआ। इस सुअवसर पर नांदेड के माहेश्वरी समाज की ओर से उनका महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के संगठन मंत्री एड. चिरंजीलाल दागड़िया, महाराष्ट्र प्रदेश के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष नारायणलाल कलंत्री, मिशन आईएएस 100 के प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर किशनप्रसाद दरक, नांदेड जिला माहेश्वरी सभा के उपाध्यक्ष हरिदास भट्टड, जिला सभा के सेक्रेटरी सी ए गोविंद मूंदड़ा, बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष अशोक भूतड़ा, आदि समाजबंधुओं की उपस्थिति में सत्कार किया गया। इस अवसर पर श्री महेश गट्टानी ने महासभा की विविध योजनाओं को पंजाब एवं हरियाणा प्रदेश के लगभग साढ़े पांच हजार परिवारों तक पहुंचाने हेतु किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। आभार प्रदर्शन अशोक भूतडा ने किया।

नए लेखकों का संबल बनेगा

ऋषिमुनि प्रकाशन

आप अच्छे लेखक हैं तो आपको एक अच्छे प्रकाशक की भी आवश्यकता है, जो आपके बजट में आपकी अनमोल कृति का प्रकाशन कर पाठकों तक पहुँचा सके। ऐसे सभी लेखकों के लिए देश का प्रतिष्ठित प्रकाशन समूह ''ऋषिमुनि प्रकाशन'' समाधान बनकर आया है।

''ऋषिमुनि प्रकाशन'' विगत 30 वर्षों से अपने सुरूचि पूर्ण, सुंदर एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध व प्रसिद्ध है। निरंतर आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए प्रकाशन समूह ने विभिन्न विषयों पर अब तक 100 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर पाठकों के बीच अपनी पेठ बनायी है।

अब समूह ने अपनी नई योजना के तहत अत्यल्प लागत शुल्क लेकर कई सेवाओं के साथ जैसे टाईपिंग, प्रुफ-रीडिग, डिज़ाइनिंग, ISBN No. आदि के साथ नये लेखकों की रचनाओं के प्रकाशन का बीड़ा उठाया है। आप आपनी कविताओं, कथाओं, व्यंग्य, आलेख व धर्म से संबंधित रचनाओं के पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन के प्रति उत्सुक हैं तो कृपया संपर्क कर अपना मनोरथ सिद्ध करें।

सम्पर्क– 90, विद्या नगर, सांवेर रोड़, उज्जैन (म.प्र.) मोबाईल : 094250-91161

www.rishimuniprakashan.com

ऋषिमुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कोई भी पुस्तक आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं।
श्री माहेश्वरी टाईम्स के पाठकों को इनके मूल्य पर विशेष छूट प्रदान की जाएगी।

रामायण पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित

बीकानेर। अयोध्या में राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में जिला माहेश्वरी सभा द्वारा भगवान राम के जीवन चरित्र पर आधारित धार्मिक ग्रंथ रामायण ज्ञान पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन 18 फरवरी को किया गया था। इसमें जिले के समाजबन्धुओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इस प्रतियोगिता का सम्पादन रमेश हुरकट व डॉ. राधेश्याम लाहोटी द्वारा वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोज बजाज के निर्देशन में किया गया। प्रभारी रमेश हुरकट ने बताया कि इस प्रतियोगिता का परिणाम ऑनलाईन घोषित किया गया। इस अवसर पर बीकानेर व्यापार उद्योग मण्डल के अध्यक्ष मनमोहन कल्याणी, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मोहता, पूर्व जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश करनानी, जिलाध्यक्ष ललित झँवर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोज बजाज, जिला संगठन मन्त्री डॉ. राधेश्याम लाहोटी, जेएनवी महिला समिति अध्यक्ष पदमा बजाज आदि उपस्थित रहे।

माहेश्वरी साहित्यकार मंच ने बसंतोत्सव मनाया

जयपुर। माहेश्वरी साहित्यकार मंच द्वारा आयोजित ऑनलाइन लेखन कार्यक्रम 'बसंतोत्सव' में देशभर से 100 से अधिक माहेश्वरी रचनाकारों ने अपनी काव्य रचनाओं से मंच की शोभा बढ़ाई। बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर सभी ने हिंदी साहित्य एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया। मंच से मधु भूतड़ा 'अक्षरा' पिंक सिटी जयपुर ने कार्यक्रम के सभी अतिथियों का स्वागत किया और बसंत ऋतु पर अपनी रचना 'तब समझ लो वसंत है' की कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत की। मंच के वक्तव्य पर द्वारका प्रसाद तापड़िया, आशा मूंदड़ा, गीतू माहेश्वरी, सविता बांगड़ ने वीडियो के माध्यम से गीत छंद के माध्यम से अपनी पवित्र भावनाओं को व्यक्त किया। देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए तमाम साहित्यकारों ने अपनी कलम से मंच को बसंती रंग से भर

दिया। सतीश लखोटिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा श्याम सुन्दर माहेश्वरी ने सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया।

कालानी फाउंडेशन की सेवा का अभिनंदन

जयपुर। कोरोनाकाल में राजेश कालानी फाउंडेशन, जयपुर द्वारा 60,000 नागरिकों को जगह-जगह कैंप लगाकर निःशुल्क वैक्सीन लगाई गई। इस अविस्मरणीय योगदान की चर्चा दिल्ली के गलियारों में भी पहुँची थी। पिछले दिनों जब गृहमंत्री अमित शाह जयपुर पधारे तो फाउंडेशन के ट्रस्टी सुरेश कालानी से भी मिले। अमित भाई ने इस पुनीत सेवा की भूरी-भूरी प्रशंसा के साथ सुरेश जी को मिलने भी बुलाया।

उपलब्धि

खुशी ने किया एमबीबीएस

जैसलमेर। स्थानीय बिस्सा पाड़ा की निवासी खुशी नागोरी पुत्री बृजमोहन नागोरी एम बी बी एस डॉक्टर बनी। इस उपलब्धि पर समस्त परिजनों, रिश्तेदारों ने खुशी जाहिर की।

कृष्णा बने सीए

उज्जैन। समाज सदस्य राजेंद्र बजाज के सुपुत्र कृष्णा ने सीए की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की। समस्त स्नेहीजनों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया।

हर्ष बने सीए

जोधपुर। समाज सदस्य संदीप हेडा और सुनीता हेडा के सुपुत्र हर्ष हेडा ने 24 वर्ष की उम्र में इंडियन इंस्टीट्यूट आफ चार्टर्ड अकाउंटेंट द्वारा आयोजित सीए फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसमें हर्ष ने अपनी 3 वर्ष की आर्टिकलशिप टॉप बिग 4 कंपनी मुंबई से की है।

ईशा को 75% अंक

खण्डवा। स्व. श्री जुगलकिशोर बाहेती की पोती व उमेश-पूर्णिमा बाहेती की सुपुत्री ईशा बाहेती ने बीडीएस प्रथम वर्ष में 75.1% अंक प्राप्त कर यूनिवर्सिटी टॉप किया। समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

इंसान खुद की नजर में सही होना चाहिये, बाकी दुनिया तो भगवान से भी दुखी है।

99वें वार्षिकोत्सव का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर द्वारा सूर्य सप्तमी के अवसर पर 99वाँ वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा सम्मान समारोह गत 16 फरवरी को श्री माहेश्वरी समाज जनोपयोगी भवन अभिनन्दनम मानसरोवर में हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। समाज अध्यक्ष केदार मल भाला ने समारोह के मुख्य अतिथि हेमंत राठी, विशिष्ट अतिथि प्रमोद जाखोटिया, स्वागताध्यक्ष अरविंद राठी, विशेष अतिथि सत्यनारायण मांधना, एडवोकेट जनरल राजेन्द्र प्रसाद लड्ढा सहित समारोह में पधारे हुए सभी समाज बन्धुओं का अभिनंदन किया। इस अवसर पर समाज महामंत्री मनोज मूंदड़ा ने बताया कि माहेश्वरी समाज संस्थापकों की दूरदर्शी सोच के कारण सूर्य सप्तमी के शुभ दिन सन् 1925 ई. में स्थापित ''श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर'' अपनी स्थापना के गौरवशाली 99 वर्ष पूर्ण कर चुका है। साथ ही श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के विभिन्न सेवा प्रकल्पों के बारे में जानकारी भी समाज के पटल पर रखी। संयुक्त मंत्री बृज मोहन बाहेती ने जानकारी दी कि आगामी 07 अप्रेल, 2024 को जयपुर में एम.पी.एस. मैराथन दौड़ का भी आयोजन किया जा रहा जिसके पोस्टर का विमोचन भी किया गया। यह कार्यक्रम प्रथम बार माहेश्वरी जनोपयोगी भवन अभिनन्दन में आयोजित किया गया जिसमें लगभग 1200 समाज बंधु उपस्थित हुए। इस अवसर पर लगभग 40 प्रतिभाओं एवं 76 माहेश्वरी स्कूल में अध्ययनरत माहेश्वरी छात्र/छात्राओं को 1100 रूपये के चेक देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम संयोजक दीपक काबरा थे।

महासभा सभापति का आगमन

सोलापूर। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के सभापति संदीप काबरा के करकमलो द्वारा सह पत्नी सोलापुर जिलासभा के माजी अध्यक्ष गणेशलाल मानधनिया को सम्मान पत्र देकर शुभेच्छा व्यक्त की गई। महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष मधुसुदन गांधी व जिला प्रतिनिधि सहित समस्त सदस्य उपस्थित थे।

राठी परिवार के सम्मेलन की तैयारी

उज्जैन। अखिल भारतीय राठी परिवार का 16-17 मार्च को ओसिया जी में सम्मेलन आयोजित होगा। इसके एडमिन ग्रुप की बैठक गत दिनों घनश्याम राठी नागदा की अध्यक्षता में महाकाल की नगरी उज्जैन में आयोजित हुई। बैठक में नागपुर, भीलवाड़ा, जोधपुर, मुंबई, जयपुर, इंदौर, पुणे, औरंगाबाद आदि कई जगह से राठी परिवार के सदस्य उपस्थित हुए।

महेश अन्न सेवा का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज द्वारा सत्र 2022-25 में आरंभ की गई 'महेश अन्न सेवा' का आयोजन वर्षपर्यन्त किया जा रहा है। इसी क्रम में समाज के भामाशाहों द्वारा गत 20 फरवरी को जे.के. लॉन हॉस्पिटल के बाहर लगाए गए सेवा केंद्र पर लगभग 500 जरूरतमंदों को भोजन प्रसादी एवं मिठाई का वितरण किया गया। इस अवसर पर संयोजक शंकरलाल लड्ढा, राजेश तापड़िया, नीलम तापड़िया, संजय तापड़िया, सविता तापड़िया, संजु एवं पवन लड्ढा, निकिता लड्ढा एवं लड्ढा परिवार सहित समाज के कई गणमान्यजन मौजूद रहे।

विद्यार्थियो को किया अन्नदान

कोयंबटूर। माहेश्वरी युवा परिषद, कोयंबटूर के तत्वावधान में ईरूगुर ग्राम के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के लिए अन्नदान का आयोजन किया गया। इसमें स्कूल के 250 से ज्यादा विद्यार्थियो को एक समय का भोजन करवाया गया। इसके लिये स्कूल प्रशासन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में युवा परिषद के सदस्य गिरीराज फोमरा, पुरूषोत्तम भुराड़िया, लक्ष्मीकांत भुराड़िया, गोविंद मंडोवरा एवं तेजस बागड़ी ने भाग लिया था।

अंकुर न्याती बने कम्पनी प्रेसिडेंट

भीलवाड़ा। अपग्रेड ने 6 फरवरी 2024 से अपने स्टडी अब्रॉड सेगमेंट के नए अध्यक्ष के रूप में अंकुर न्याती की नियुक्ति की घोषणा की है। 'अंकुर ने विनिर्माण, खुदरा, ई-कॉमर्स और शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान के साथ 2 दशकों से अधिक का एक विशिष्ट करियर बनाया है। आईटीसी, यूनिलीवर, फ्लिपकार्ट, ओला, ओला यूके, व्हाइटहैट जूनियर और द मणिपाल ग्रुप जैसे प्रमुख ब्रांडों में उनकी नेतृत्व भूमिकाएं उनके रणनीतिक कौशल और निष्पादन कौशल को उजागर करती हैं। भारत और यूके में उनका व्यापक अनुभव, वैश्विक स्तर पर विकास पहलुओं को आगे बढ़ाने के ट्रैक रिकॉर्ड के साथ मिलकर, उन्हें कंपनी के लिए एक वैल्यू-ऐड के रूप में स्थापित करता है। अपनी नई भूमिका में श्री न्याती भारत और विदेशी बाजारों में अपग्रेड की स्थिति को और बढ़ाने और विदेश में अध्ययन की पेशकश का सबसे बड़ा सूट बनाने के लिए अपनी विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए, विदेश में अध्ययन संचालन का नेतृत्व करेंगे। इसके साथ अंकुर कंपनी के विकास को और समर्थन देने के लिए अपग्रेड पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर नई जिम्मेदारियां संभालेंगे। 'निरंतर नवाचार और रणनीतिक विकास अपग्रेड की आधारशिला के रूप में काम करते हैं। अंकुर धवन ने विदेश में अध्ययन क्षेत्र में बहुत मजबूत नींव रखी है।

राम आएंगे थीम पर नृत्य नाटिका

महू। श्री माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ वार्षिक उत्सव का आयोजन किया गया। इसमें राम आएंगे आधारित थीम पर नृत्य नाटिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में नारी एक रूप से विभिन्न रूपों को गृहिणी होते हुए सामंजस्य कैसे स्थापित करती हैं यह दिखाया गया। नृत्य नाटिका की लेखिका एवं सूत्रधार पदमा सोडाणी थी। तरुणी मंडल द्वारा मारवाड़ी पति-पत्नी की नोंक-झोंक का नाट्य प्रस्तुत किया गया। स्वागत नृत्य प्रियांशी पटवा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में मंडल की वरिष्ठ सदस्या पदमा सोडाणी एवं पदमा सोनी का स्मृति चिन्ह देखकर सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान से राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रभारी कुंतल तोषनीवाल भी उपस्थित हुई। सभी प्रतिभागियों को उपमहिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन माहेश्वरी महिला मंडल अध्यक्ष स्वाति शारदा एवं रजनी सोडानी ने किया। विशेष सहयोग किरण माहेश्वरी, संगीता सोडाणी, रमीला मालानी एवं शकुंतला ढोली का रहा।

सेवा समिति की नई कार्यकारिणी गठित

आर.बी. अटल
अध्यक्ष

प्रवीण कुमार चांडक
सचिव

अजय राठी
कोषाध्यक्ष

अमरावती। श्री महेश सेवा समिति की 2023- 26 के लिए नई कार्यकारिणी का गठन बसंत पंचमी के शुभ मुहूर्त पर किया गया। इससे पूर्व सर्वसम्मति से 15 सदस्यों का निर्विरोध चयन किया गया था। नई कार्यकारिणी में सर्वसम्मति से आर.बी. अटल अध्यक्ष, डॉ. सत्यनारायण कासट उपाध्यक्ष तथा अजय राठी कोषाध्यक्ष चुने गये। अध्यक्ष श्री अटल ने प्रवीण कुमार चांडक को सचिव तथा डॉ. आर. बी. सिकची को सह सचिव मनोनित किया गया।

महिला संगठन नेतृत्व का भ्रमण

अहमदाबाद। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजु बाँगड़ एवं राष्ट्रीय महामंत्री ज्योति राठी ने गत 27 से 29 जनवरी तक त्रि-दिवसीय गुजरात भ्रमण किया। मध्यांचल उपाध्यक्ष उर्मिला कलंत्री, राष्ट्रीय विधान संशोधन समिति प्रभारी मंगल मर्दा तथा गुजरात प्रदेश निवर्तमान अध्यक्ष उमा जाजू ने सिलवासा, सूरत, अंकलेश्वर/भरूच, दाहोद और अहमदाबाद का भ्रमण बड़े सुव्यवस्थित तरीके से करवाया। सभी संगठनों में श्रृंखलाबद्ध संगठन की महत्त्वता बताई गई। पहली बार राष्ट्रीय पदाधिकारियों का माहेश्वरी महिला संगठन सिलवासा तथा कॉटेज अस्पताल में चल रहे निःशुल्क अन्नसेवा प्रकल्प में आने का संयोग बना। अतिथियों ने अपने हाथों से अन्नसेवा क्षेत्र में भोजन परोसा और विशेष दानदाताओं को सम्मानित किया। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की ओर से रुपये 11000/- का योगदान पूर्व अध्यक्ष नीता लाहोटी को अन्नक्षेत्र के लिये दिया।

जब व्यक्ति के पास पैसा होता है तो वह भूल जाता है कि वह कौन है लेकिन जब उसके पास पैसा नहीं होता तो दुनिया भूल जाती है कि वह कौन है।

परिचय सम्मेलन में नाट्य प्रस्तुति

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज जयपुर के अंतर्गत माहेश्वरी इंटरनेशनल मैरिज ब्यूरो (MIMB) द्वारा 22वां अखिल भारतीय माहेश्वरी युवक युवती परिचय सम्मेलन 2024 आराध्य गोविंद देव जी की धरती गुलाबी नगरी जयपुर में आयोजित किया गया। इसमें विवाह की जटिल समस्याओं का समाधान देते हुए श्री महिला परिषद् जयपुर का सभी सदस्याओं द्वारा सामाजिक नाट्य 'उलझे संबंध भंवर जाल में' का मंचन किया गया। इसे समाज के हित में बताते हुए महिला कलाकारों के इस सफल प्रयास हेतु विशिष्ट अतिथि द्वारा प्रोत्साहन के लिए नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसका लेखन एवं निर्देशन के साथ मंच संचालन समाज की जानी-मानी लेखिका मधु भूतड़ा 'अक्षरा' एवं ज्ञान लाहोटी द्वारा किया गया। इस अवसर पर समाज के गणमान्य पदाधिकारी अध्यक्ष केदार भाला, संजय माहेश्वरी, महिला परिषद् की अध्यक्षा ज्योति तोतला, संयोजक राजीव बागड़ी, चंद्र पोरवाल, विट्ठल माहेश्वरी, महेश भूतड़ा, दीपक सारडा, अरुण बाहेती, श्रीलाल राठी सहित देश के हर प्रांतों से आए माता-पिता, बेटे-बेटियां और समाज बंधु उपस्थित रहे।

श्याम बाबा के कीर्तन का आयोजन

कोयंबटूर। माहेश्वरी समाज के वरिष्ठ सदस्य मदन मोहन भुराड़िया, आशा भुराड़िया एंव परिवार द्वारा श्याम परिवार, कोयंबटूर के तत्वावधान में श्याम बाबा के कीर्तन एवं भजनों का आयोजन गत 20 फरवरी को किया गया। कार्यक्रम में 70 से ज्यादा भक्तों ने मधुर भजनों का आनंद लिया। इस अवसर पर समाज के सदस्यों रेणुका माहेश्वरी, गिरीराज चांडक एवं श्री श्याम परिवार के अन्य सदस्यों ने मंत्रमुग्ध भजनों के गायन से सम्पूर्ण माहौल को श्याममय कर दिया। उक्त जानकारी मनोज गग्गड़ ने दी।

रामायण विशारद में निलिमा प्रथम

नागपुर। श्री गीता रामायण परीक्षा समिति, ऋषिकेश पौड़ी गढ़वाल (उत्तरांचल) द्वारा ली गई। श्री रामायण विशारद के परिणाम हाल ही में घोषित किये गये। इसमें श्री तुलसी साहित्य प्रचार केंद्र, नागपूर की छात्रा निलिमा मनोज लोया ने श्री रामचरित मानस पर आधारित परीक्षा (लिखित) में पूरे भारत वर्ष में 97% प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

माहेश्वरी समाज के मूल संस्कारों और रीति रिवाजों से करायेगी पहचान

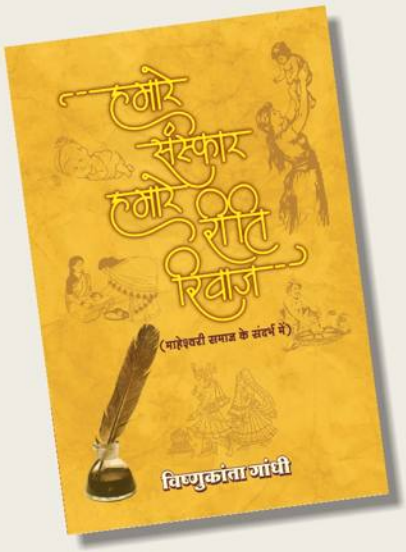

ऋषि मुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

हमारे संस्कार हमारे रीति रिवाज़

जिसमें पाऐगें आप माहेश्वरी समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों के साथ ही विवाह संस्कार, जन्म संस्कार, मृत्यु संस्कार तथा माहेश्वरी परम्पराओं के विशिष्ट पर्वों गणगौर, सातुड़ी तीज तथा ऋषि पंचमी पर केन्द्रीत विशिष्ट जानकारी।

विशेष छूट के साथ उपलब्ध
Rs. 125/-
Rs. 100/-

amazon पर उपलब्ध

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्या नगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)

94250 91161, 91799-28991 rishimuniprakashan@gmail.com

निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर सम्पन्न

भीलवाड़ा। चंदनमल श्री गोपाल राठी चैरिटेबल ट्रस्ट भीलवाड़ा, भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी सभा एवं जीसीएस हॉस्पिटल अहमदाबाद के सहयोग से महेश पब्लिक स्कूल नेहरू रोड भीलवाडा पर निःशुल्क मल्टी स्पेशलिटी चिकित्सा परामर्श शिविर आयोजित किया गया। शिविर के शुभारंभ पर सेमिनार आयोजित किया गया जिसमें प्रमुख उद्योगपति रामपाल सोनी, गोपाल राठी, लादूलाल बांगड़, के जी तोषनीवाल, भीलवाड़ा विधायक अशोक कोठारी, माहेश्वरी जिला सभा के अध्यक्ष अशोक बाहेती, कैलाश कोठारी, सीमा कोगटा, बंशीलाल चेचानी, राजेंद्र कचोलिया आदि मंचासीन थे। सेमिनार में अहमदाबाद से आए डॉ. विपुल प्रजापति ने गणमान्य एवं समाज के पदाधिकारियों को लाइफस्टाइल में बदलाव कर स्वस्थ्य रहने के टिप्स बताएं। निःशुल्क चिकित्सा शिविर में 6 विशेषज्ञ सेवाओं जिसमें कैंसर, रीड की हड्डी, ज्वाइंट रिप्लेसमेंट, पेट रोग, हृदय रोग, किडनी रोग, चर्म रोग, गुप्त रोग आदि के 30 वरिष्ठ जाने माने चिकित्सकों द्वारा रोगियों को निःशुल्क परामर्श दिया गया, जिसका लगभग 1760 रोगियों ने लाभ लिया। शिविर में सभी रोगियों को उपलब्ध निःशुल्क दवाइयां भी दी गई। शिविर में चिकित्सकों के परामर्श से ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, एक्स-रे व ईसीजी कराते हुए 750 रोगियों की निःशुल्क जांच की गई। शिविर में रमेश राठी, सुशील मरोटिया, प्रदीप बल्दवा, राजेंद्र भदादा, राजेंद्र बिडला, रामकिशन सोनी, के जी राठी, सत्यनारायण मंत्री, राजेंद्र कुमार पोरवाल, प्रमोद डाड, अजय लोहिया, कैलाश काबरा, राकेश काबरा, राकेश बाहेती, पंकज समदानी सहित समाज के कई गणमान्य सदस्यों द्वारा सहयोग किया गया।

महेश अन्न सेवा का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज द्वारा सत्र 2022-25 में आरंभ की गई 'महेश अन्न सेवा' का आयोजन वर्षपर्यन्त किया जा रहा है। इसी क्रम में समाज के भामाशाहों द्वारा गत 06 फरवरी, 2024 को जे. के. लॉन हॉस्पिटल के बाहर लगाए गए सेवा केंद्र पर लगभग 500 जरूरतमंद लोगों को भोजन प्रसादी का वितरण किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष केदारमल भाला, संयोजक शंकरलाल लड्ढा, प्रचार मंत्री अरूण बाहेती, गोपाल जाजू, श्यामसुन्दर जाजू, बृजकिशोर सामरिया, दीपक लोईवाल आदि कई गणमान्य प्रबुद्धजन एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

डॉ. राठी को टॉप डेंटिस्ट्री अवार्ड

नागपुर। ख्यात दंत चिकित्सक डॉक्टर बरखा राठी को 20 जनवरी 2024 में मुंबई में आयोजित टॉप डेंटिस्ट्री अवार्ड से सम्मानित किया गया है। फॅमडेंट एक्सीलेंस अवॉर्ड दंत चिकित्सा के क्षेत्र में एक बहुत ही प्रतिष्ठित सम्मान के रूप में माना जाता है। फेमडेंट एक्सीलेंस अवॉर्ड इन डेंटिस्ट्री की शुरुआत 2013 से हुई। वर्ष 2015 में एडवांस डेंटल हॉस्पिटल को बेस्ट टीम अवार्ड से सम्मानित किया गया था। 2022 में डॉक्टर बरखा राठी को एसोसिएट डेंटिस्ट ऑफ़ द ईयर सम्मान से सम्मानित किया गया और वर्ष 2024 में भी उनको डेंटल एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया है। डॉक्टर बरखा राठी डेंटल इंप्लांट सर्जन है। वह अब तक 4500 से भी ज्यादा डेंटल इंप्लांट सर्जरी कर चुकी हैं। उनके मरीज उन्हें 'दि स्माइल डिजाइनर' के रूप में सम्मान देते हैं। दंत चिकित्सा के क्षेत्र में वे अब तक कई अवार्ड हासिल कर चुकी हैं। हाल ही में उन्हें उनकी नवीन इंप्लांट सर्जरी की तकनीक के लिए कॉपीराइट भी मिला है। इस नवीन तकनीक से वह 500 से भी ज्यादा इंप्लांट सर्जरी कर चुकी हैं।

झंवर विशेष प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित

अहमदनगर। समाज सदस्य भरत नंदकुमार झंवर को शिक्षा के क्षेत्र में अभिनव कार्य के लिए महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा की ओर से स्व. सेठ श्री सीताराम सुखदेव बिहाणी (बांगड़ीवाला) राज्य स्तरीय 'विशेष प्रतिभा गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। श्री झंवर गत 11 वर्षों से अहमदनगर में शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। वे नव भारत प्रोफेशनल अकादमी के माध्यम से सामान्य और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

आज की दुनिया में झूठ धीरे से भी बोलोगे तो भी सब सुन लेंगे और सच चिल्लाने पर भी कोई नहीं सुनता।

डॉ. अजमेरा का हुआ सम्मान

अकोला। माहेश्वरी समाज के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्ता, पत्रकार स्व. श्री मदनलाल अजमेरा के सुपुत्र जिला माहेश्वरी संगठन के सदस्य, अंतरराष्ट्रीय द्वारिका रणुजा रुणीचा संगम संस्थान ट्रस्ट बीकानेर राजस्थान के महाराष्ट्र प्रदेश के प्रचार प्रसार मंत्री डॉ. नवलकिशोर अजमेरा को माहेश्वरी समाज ट्रस्ट ने 26 जनवरी को सम्मानित किया। माहेश्वरी भवन में आयोजित गणतंत्र दिवस के 75 वें अमृत महोत्सव समारोह के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय माहेश्वरी कपल क्लब (भारत) भीलवाड़ा द्वारा स्व. श्री रामजस सोडाणी स्मृति में 'जर्नलिस्ट आफ द ईयर' अवार्ड के लिये डॉ. नवलकिशोर एम. अजमेरा का चयन किया गया। इस उपलब्धि पर डॉ. अजमेरा को माहेश्वरी समाज ट्रस्ट के अध्यक्ष विजयकुमार पनपालिया के हाथों ध्वजारोहण अतिथि हेमा खटोड, प्रमुख वक्ता रुपाली चांडक की प्रमुख उपस्थिति में स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर माहेश्वरी समाज ट्रस्ट के प्रधान मंत्री विजय राठी, सदस्य दिपक राठी, प्रगति मंडल के आनंद डागा, वरिष्ठ प्रकोष्ठ के सचिव राजीव मूंदड़ा, महिला मंडल की अध्यक्षा शिल्पा चांडक, नवयुवती मंडल की अध्यक्षा, वरिष्ठ महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्षा मंचासीन थे।

आडवानी को भारत रत्न पर प्रसन्नता

जैसलमेर। प्रधानमंत्री मोदी की लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न से सम्मानित करने की घोषणा से मारवाड़ के जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुरवासियों में मानो दीवाली का दीपोत्सव मनाने योग्य उत्साह है। श्री आडवाणी ने आरएसएस को संगठित करने की शुरुआत जोधपुर से की इसी वजह से उनका लगाव जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर से विशेष रहा। उसी स्नेह को निभाने लालकृष्ण आडवाणी सपरिवार 18 वर्ष पूर्व अपनी 4 दिवसीय निजी यात्रा पर जैसलमेर आए। उनके साथ धर्मपत्नी कमला आडवानी, पुत्र जयंत आडवानी, पत्रवधु गीतिका आडवानी व पुत्री प्रतिभा आडवानी आए। आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने के ऐलान के बाद जैसलमेर के वरिष्ठ नागरिक नारायणदास ने बताया कि राम मंदिर के लिए प्रमुख भूमिका निभाने वाले लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न मिलेगा ये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अच्छा कदम है। नारायणदास ने कहा कि जो राम को लाये हैं, हम उनके लिए भारत रत्न लाये हैं। लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी जैसलमेर यात्रा के दौरान पटुवा हवेली में अचलदास डांगरा के पास में बैठ कर स्नेह भी व्यक्त किया था, जिसकी फोटो अभी भी श्री डांगरा के पास है।

आस्ट्रेलिया प्रशासनिक सेवा में हर्षा

चित्तौड़गढ़। गांधीनगर निवासी रामेश्वरलाल काबरा की सुपोत्री एवं अरविंद काबरा की सुपुत्री हर्षा बाहेती ने आस्ट्रेलिया में विक्टोरिया पुलिस की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि हमारे यहां जैसे आईपीएस होते हैं वैसे ही वहां पर हर्षा इस श्रेणी की परीक्षा उत्तीर्ण कर पुलिस प्रशासनिक सेवा ज्वाइन करेंगी। श्रीमती हर्षा बाहेती युवा संगठन राष्ट्रीय महामंत्री प्रदीप लड्ढा की बहन की ननद भी हैं।

असावा को प्रतिभा गौरव पुरस्कार

चाणेगांव (महाराष्ट्र)। प्रदेश माहेश्वरी सभा ओर से दिए जाने वाला राज्य स्तरीय स्वर्गीय सेठ सीताराम सुखदेव बिहाणी बंगडीवाला विशेष प्रतिभा सन्मान पुरस्कार चणेगाव निवासी विठ्ठलदास बालकिसन आसावा (सोलापूर) को प्रदान किया गया। उन्हें कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये यह सम्मान प्रदान किया गया। समारोह में माजी मंत्री विधायक विजयराव देशमुख, उद्योगपति लक्ष्मीकांत सोमाणी, बंगडीवाला उद्योग समूह के जितेंद्र बिहाणी के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रदेशाध्यक्ष मधुसूदन गांधी (डोंबिवली), प्रदेश मंत्री सत्यनारायण सारडा (जालना), सतीश चरखा (जळगाव), जुगलकिशोर लोहिया (परळी वैजनाथ), भिकुलाल मर्दा (इचलकरंजी), जिलाध्यक्ष जवाहर जाजू (मंगलवेढा), मंत्री किरणकुमार राठी, महासभा प्रतिनिधि चंद्रकांत तापड़िया आदि कई गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

युवा संगठन ने रामभक्तों की सेवा

निजामाबाद। जिला माहेश्वरी युवा संगठन ने अयोध्या धाम में श्री राम लला मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य पर सभी राम भक्तों के लिए नारियल पानी व आइसक्रीम की व्यवस्था की गई। युवा संगठन ने अयोध्या धाम में श्री राम लला मंदिर प्राण- प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य पर मानस परिवार समिति एवं प्रभात फेरी मंडल द्वारा आयोजित प्रभु श्री राम जी की विशाल शोभायात्रा का मारवाड़ी गली निजामाबाद में बड़े ही धूमधाम से स्वागत किया। कार्यक्रम संयोजक दीपक कालानी व विष्णु जाजू, अध्यक्ष गोविंद झंवर, मंत्री राजगोपाल बंग, उपमंत्री मोहित बजाज, संगठन मंत्री संदीप राठी, खेल मंत्री मयूर बंग व सभी युवा साथियों ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी राम भक्तों का स्वागत किया।

सखी संगठन ने मनाई रजत जयंती

अहमदाबाद। माहेश्वरी सखी संगठन द्वारा रजत जयंती कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। अध्यक्ष अनुराधा अजमेरा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और संरक्षक सदस्या राधा माहेश्वरी व इंदिरा राठी का आभार व्यक्त किया। सचिव निक्की राठी द्वारा संगठन की 25 वर्षों की यात्रा का वर्णन वीडियो प्रस्तुति द्वारा खूबसूरती से किया गया। कार्यक्रम '16 संस्कार' - संस्कारों की अवधारणा पर आधारित था। इसमें 70 से भी ज़्यादा सखी कलाकारों ने हिस्सा लिया। टीना राठी ने सफल मंच संचालन कर कार्यक्रम की सफलता को चार चाँद लगाये। कार्यक्रम के दौरान विमला साबू अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन पूर्व अध्यक्ष, उर्मिला कलंत्री (राष्ट्रीय उपाध्याक्ष मध्यांचल अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन), मंजुश्री काबरा (अध्यक्ष - गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन), मंगल मर्दा राष्ट्रीय प्रकल्प प्रभारी-विधान संशोधन सत्य प्रकल्प अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन, कांता मोदानी (सचिव गुजरात प्रांतीय माहेश्वरी महिला मंडल), सुशीला माहेश्वरी (राष्ट्रीय संचार सिद्धा समिति सहप्रभारी), चंद्रप्रकाश कासट (अहमदाबाद जिला अध्यक्ष), कृष्णकांत काबरा, अध्यक्ष माहेश्वरी प्रगति मण्डल, अरविन्द जाजू-अहमदाबाद जिला सचिव एवं मीना चेचाणी, उमा जाजू सहित सभी पूर्व अध्यक्ष, अतिथि एवं गणमान्य व्यक्तियों का शॉल ओढ़ाकर और पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। कोषाध्यक्ष सुमन काबरा, प्रचार प्रसार मंत्री-जया जेठा के साथ दीपा धूत, नीलम मालपानी, वंदना बिड़ला, प्रियंका माहेश्वरी, अलका मोदानी, सविता जैसलमेरिया, रक्षा मनियार, पूजा कासट सहित सभी कार्यकारिणी समिति सदस्य ने उपस्थित रह कर यथोचित सहयोग दिया।

महेश अन्न सेवा का आयोजन

जयपुर। श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर द्वारा सत्र 2022-25 में आरंभ की गई 'महेश अन्न सेवा' का आयोजन वर्षपर्यन्त किया जा रहा है। इसी क्रम में समाज के भामाशाहों द्वारा गत 13 फरवरी को जे. के. लॉन हॉस्पिटल के बाहर लगाए गए सेवा केंद्र पर लगभग 500 जरूरतमंद लोगों को भोजन प्रसादी एवं मिठाई का वितरण किया गया। इस अवसर पर संयोजक शंकरलाल लड्ढा, गिरधारी लाल शारदा, श्याम लाल शारदा, प्रहलाद राय जाजू, गोपाल जाजू, राजकुमार लखोटिया, संगीता लखोटिया, अनीता शारदा, मंजू शारदा, संदीप शारदा एवं शारदा परिवार सहित समाज के कई गणमान्य व प्रबुद्धजन एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

शहीद अविनाश माहेश्वरी के नाम पर मार्ग

अजमेर। महासभा के भारत गौरव वर्ष 2024 के अन्तर्गत अजमेर में कारसेवक अमर शहीद अविनाश माहेश्वरी के माता-पिता के प्रति वंदन कार्यक्रम में सभापति द्वारा अजमेर में शहीद अविनाश की स्मृति को अमर रखते हुए किसी मार्ग एवं चौराहे का नाम अमर शहीद अविनाश माहेश्वरी के नाम पर रखने की मांग नगर निगम अजमेर के उप महापौर नीरज जैन से की थी। नगर निगम अजमेर की बैठक में प्रस्ताव पारित कर इस हेतु स्वीकृति प्रदान कर अजमेर के फॉय सागर मार्ग का नामकरण शहीद अविनाश माहेश्वरी के नाम करने का निर्णय किया गया। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा, मध्य राज प्रादेशिक माहेश्वरी सभा एवं अजमेर जिला माहेश्वरी सभा के सद्प्रयासों के फलस्वरूप यह कार्य हुआ। उक्त जानकारी जिलाध्यक्ष संदीप मूंदड़ा व जिलामंत्री अशोक जैथलिया ने दी।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का गुजरात भ्रमण

सूरत। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा गत 27 जनवरी को गुजरात भ्रमण के दौरान सूरत पधारी राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजू बांगड़ एवं राष्ट्रीय सचिव ज्योति राठी का शांतम सभागृह में भव्य स्वागत कार्यक्रम रखा गया। इसमें युवा टीम द्वारा स्वागत डांस प्रस्तुति एवं परिवर्तन पर नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई। मंजू जी एवं ज्योति जी की पेंसिल स्केच पेंटिंग मिताश्री डागा द्वारा भेंट की गई। गुजरात प्रांत से भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष विमला साबू, मध्यांचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उर्मिला कलंत्री राष्ट्रीय विधान समिति प्रभारी मंगल मर्दा, कॉरपोरेटर रश्मि साबू, निर्वतमान प्रांतीय अध्यक्ष उमा जाजू की गरिमामय उपस्थिति रही। अध्यक्षीय उद्बोधन वीणा तोषनीवाल, जिला कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुति प्रतिभा मोलासरिया, कार्यक्रम संचालन श्वेता जाजू, आभार वंदना भंडारी, अतिथि परिचय रेखा पोरवाल द्वारा दिया गया।

''आनंदामृत'' का हुआ आयोजन

भंडारा (महाराष्ट्र)। माहेश्वरी महिला मंडल भंडारा (महाराष्ट्र) की अध्यक्ष सीमा लाहोटी एवं उपाध्यक्ष बबीता मूंधड़ा के नेतृत्व में शरद पूर्णिमा का उत्सव समुद्र मंथन, महारास एवं विशाल नाट्य कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। चारो युगों द्वारा महारास की महिमा अलौकिक नाट्य द्वारा प्रस्तुत की गई। कृष्णा राधा की रासीलीला से सारा वातावरण वृंदावन बन गया, दर्शकों की तालियाँ की गूंज अमृत के रूप में बरस रही थी। उक्त जानकारी गोवर्धनलाल झंवर ने दी।

357 यूनिट रक्त संग्रहित

सूरत। अयोध्या में प्रभु श्री राम राघव के निजधाम महोत्सव की खुशी व राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के अवसर पर सूरत में माहेश्वरी नवयुवक मंडल, श्री माहेश्वरी सेवा सदन व हेल्पिंग हैंड्स सूरत के संयुक्त सौजन्य से पर्वत पाटिया विस्तार के श्री माहेश्वरी सेवा सदन में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इसमें 357 ब्लड युनिट रक्त संग्रहित हुआ। शिविर के अतिथि विशेष अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के सभापति संदीप काबरा थे। अतिथि स्वागत माहेश्वरी नवयुवक मंडल के अध्यक्ष पवन चांडक व सचिव भगवती प्रसाद गग्गड़ ने मोमेंटो भेंटकर साफा, दुपट्टा पहनाकर किया। माहेश्वरी नवयुवक मंडल के पूर्व अध्यक्ष सुरेश काबरा, सुरेश तोषनीवाल, विनोद बिहानी, योगेश भांगड़िया, अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के कार्यसमिति सदस्य मुरली सोमानी, मिशन आईएएस 100 के पश्चिमांचल प्रभारी कृष्णकांत भट्टड, गुजरात प्रांतीय सभा के कोषाध्यक्ष श्याम भंडारी एवं संयुक्त मंत्री राधाकिशन मुधंडा, सूरत ज़िला सभा अध्यक्ष पवन बजाज व सचिव अतीन बाहेती, सेवा सदन के अध्यक्ष श्याम राठी व सचिव शैलेश चांडक, सूरत भाजपा के महामंत्री किशोर बिंदल, पार्षद रश्मि गिरधारीलाल साबू आदि गणमान्यजनों की भी उपस्थिति सराहनीय रही। सिटी माहेश्वरी सभा, पुणा गांव माहेश्वरी सभा, मगोब सानिया माहेश्वरी सभा, माडर्न टाऊन माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी क्लब, पर्वत बारडोली माहेश्वरी सभा, उधना गड़ोदरा माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी क्लब व माहेश्वरी प्रगति मण्डल व दी इंडियाज ब्लड डोनर्स रजिस्ट्रेशन सहयोगी संस्था थी।

महासभा सभापति का स्वागत

सूरत। गत 26 जनवरी को सूरत जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा अध्यक्ष संदीप काबरा का माहेश्वरी भवन में स्वागत किया गया। साथ ही अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन की सभी पूर्व अध्यक्ष गीता मूंदड़ा, सुशीला काबरा, विमला साबू, शोभा सादानी, आशा माहेश्वरी तथा मंजू बांगड़, ज्योति राठी, किरण लड्ढा, मंगल मर्दा, उर्मिला कलंत्री एवं सभी अखिल भारतीय पदाधिकारियों का भी सूरत जिला माहेश्वरी महिला संगठन की तरफ से सम्मान किया गया। उक्त जानकारी अध्यक्ष वीणा तोषनीवाल व सचिव प्रतिभा मोलासरिया ने दी।

माँ-बेटे हुए सम्मानित

सिडको। डॉ. अशोक कलंत्री की धर्म पत्नी डॉ. सुरेखा कलंत्री और बेटे डॉ. श्रेयस कलंत्री को एक ही दिन समाज के अलग- अलग पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी सभा की ओर से डॉ. सुरेखा कलंत्री को आरोग्य क्षेत्र में दिये गये, उल्लेखनीय योगदान के लिये तथा राज्य सरकार की ओर से अहिल्यादेवी होळकर पुरस्कार दिये जाने पर विशेष प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया। दूसरी ओर माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल की ओर से दिया जाने वाला प्रतिष्ठित एमव्हिपीएम स्कॉलर अवॉर्ड उनके पुत्र डॉ. श्रेयस को मिला है। एलन करियर इन्स्टिट्युट के प्रमुख ब्रिजेश माहेश्वरी के करकमलों से डॉ. श्रेयस को सन्मानित किया गया। सन्मान चिन्ह, प्रशस्तिपत्र तथा एक लाख रुपये पुरस्कार स्वरूप भेंट किये गये।

मारवाड़ी वोट बैंक की स्थापना

बैंगलौर। मारवाड़ी समाज में पहले भी एकता नही थी और अब भी नही है; लेकिन अब हम धन-दौलत अर्जन करने के साथ परोपकारी तो अवश्य हुए है। हम लोग राजनीति तो करते है; लेकिन एक बन्द कमरे में, वह भी किसी को उठाने की या फिर किसी को गिराने की। खुलकर कभी भी राजनीति नही करते लेकिन राजनीति में रूचि तो रखते है। इन सब परिस्थितियों को मद्देनजर रखते हुए, जय किशन झंवर ने 70 वर्ष की उम्र में सरस्वती पूजा के दिन, 14 फरवरी 2024 के दिन अपने बैंगलोर वाले घर से मारवाड़ी वोट बैंक की स्थापना अपने सीमित साधन से की है। इसमें मारवाड़ी समाज की सरकार में हिस्सेदारी और सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता की मांग है। इसके साथ जो मारवाड़ी भाई-बहनों की राजनीति में रूचि है उनको राजनीति में आने की प्रेरणा, समर्थन व हर सम्भव सहयोग देना भी है।

नर्मदा परिक्रमावासियों का स्वागत

धामनोद। माहेश्वरी समाज कांटाफोड़ एवम लोहारदा से आए नर्मदा परिक्रमावासियों का धामनोद में स्वागत अभिनंदन जगदीश मूंदड़ा, शैलेंद्र लड्ढा एवं नारायण मालू द्वारा किया गया।

किले पर तिरंगा और भगवा ध्वज फहराया

मुंबई। हिंदवी स्वराज्य के 350वां वर्ष होने के अवसर पर महाराष्ट्र पर्वतारोहण में अग्रणी संस्था अखिल महाराष्ट्र पर्वतारोहण संघ, मुंबई ने गणतंत्र दिवस पर महाराष्ट्र और कर्नाटक में 350 से अधिक किलों पर भारतीय तिरंगा और स्वराज्य का भगवा झंडा फहराने का संकल्प पूरा किया। साथ ही छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा की पूजा की पहल सभी किलों में लागू की गई। अहमदनगर में मंजरसुम्बा किले का नेतृत्व नव हिम सह्याद्री ट्रेकर्स पर्वतारोही भरत झंवर ने किया। नगर, वांबोरी, मांजरसुंबा गाव, पिंपळगाव माळवी, नवनागपुर, भिंगार के युवक-युवतियों ने एक साथ आकर मांजरसुंबागढ़ में भारतीय तिरंगा और स्वराज्य का भगवा झंडा फहराने का अपना संकल्प पूरा किया।

विद्यार्थी भवन में नई सुविधाओं का उद्घाटन

पुणे। गत 06 जनवरी को माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल के वि. ना. लाहोटी विद्यार्थी भवन में नवनिर्मित सुविधाओं का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। सन् 1962 में स्थापित वि. ना. लाहोटी विद्यार्थी भवन लंबे समय से पुणे में शिक्षा हेतु आने वाले माहेश्वरी छात्रों का पसंदीदा निवास स्थान रहा है। इस विद्यार्थी भवन में शुरुआती दौर में 60 छात्रों की आवास व्यवस्था रही किंतु समयानुसार चरणबद्ध विकास कर यह संख्या 160 छात्रों तक जा पहुँची। पर्याप्त फ्लोअर स्पेस इंडेक्स (एफ एस आय) प्रदान करने वाले बदले हुए सरकारी नियमों का आवश्यक लाभ उठाते हुए मंडल ने केवल छात्र संख्या न बढ़ाते हुए आधुनिकता से परिपूर्ण, मनोरंजन सुविधाओं को ध्यान में रखकर इसका निर्माण किया। इसमें व्यायामशाला, स्पोटर्स एरिया, अभ्यासिका, सुसज्जजित भोजनकक्ष, ऑडियो व्हिज्युअल बहुउद्देशीय हॉल आदि भी शामिल हैं।

लड्ढा बनें राजस्थान के नए महाधिवक्ता

नागौर। वरिष्ठ एडवोकेट राजेंद्र प्रसाद लड्ढा को 19वें महाधिवक्ता के रूप में महामहिम राज्यपाल कलराज मिश्र ने राज्य सरकार को नियुक्ति के लिए अनुमोदित किया। नागौर जिले की परबतसर के रीड गांव में स्व. श्री गंगाप्रसाद लड्ढा के यहां 4 जून 1962 को जन्में श्री लड्ढा ने गांव से स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1981 में B.Com, 1985 में राजस्थान यूनिवर्सिटी से की LLB, 1986 में व फिर CA बनें। 24 अगस्त 1985 को BCR में Advocate के रूप में कराया नामांकन। तब से राजस्थान हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करते-करते 1972 से 1978 तक विभिन्न प्रकार के अनेकों पुरस्कार किए प्राप्त किए। 1980 में CA Institute ने बेस्ट स्पीकर का अवार्ड भी प्रदान किया। पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा ने श्री लड्ढा की नियुक्ति पर हर्ष व्यक्त किया।

अशोक राठी बने अध्यक्ष

अशोक राठी

डॉ. शंकरलाल दम्माणी

दुर्ग। श्री माहेश्वरी पंचायत दुर्ग का चुनाव सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष सहित सभी पदों पर सर्वसम्मति से पदाधिकारी चुने गए। अध्यक्ष अशोक राठी माहेश्वरी स्टील गंजपारा, उपाध्यक्ष व मन्दिर समिति अध्यक्ष मुकेश राठी गंजपारा, उपाध्यक्ष के अन्य 2 पदों पर आनंद राठी गाँधी चौक, रामदेव टावरी महेश कॉलोनी, सचिव डॉ. शंकरलाल दम्माणी ऋषभ ग्रीन सिटी, कोषाध्यक्ष आनंद चाण्डक आदर्श नगर, संगठन मंत्री चंद्रकांत राठी पद्मनाभपुर, सहसचिव गोपाल राठी गंजपारा का चयन समाज के सदस्यों द्वारा किया गया। चुनाव अधिकारी योगेश्वर चाण्डक महेश कॉलोनी दुर्ग थे।

टावरी पुनः बने अध्यक्ष

ब्यावर। श्री समृद्धि क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसायटी लि. ब्यावर के चुनाव गत 14 फरवरी को निर्विरोध सम्पन्न हुए। इसमें सोसायटी के दस वर्षों से लगातार अशोक टावरी अध्यक्ष हैं और इस बार भी अध्यक्ष चुने गए। इसी प्रकार मंत्री पद पर नारायण दास राठी भी दूसरी बार मंत्री बने हैं। इस बार नई कार्यकारिणी में कृष्ण गोपाल राठी भी जुड़े जो श्री सीमेंट लिमिटेड से रिटायर्ड हुए हैं।

दो हाथों से हम पचास लोगों को नहीं मार सकते पर दो हाथ जोड़कर हम करोड़ों लोगों का दिल जीत सकते हैं।

सूरत को प्रदेश सभा बनाने का आग्रह

सूरत। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के सभापति संदीप काबरा गत 26 जनवरी को सूरत में उपस्थित रहे। सुबह श्री महेश्वरी सेवा सदन में रक्तदान शिविर में रक्त दाताओं की हौसला अफजाई के लिए गए। उसके बाद 3:30 बजे जिला सभा ऑफिस पहुँचकर कार्यालय को देखा। सूरत जिला माहेश्वरी सभा कार्यालय मंच पर महासभा कार्यसमिति सदस्य मुरली सोमानी एवं गिरधर गोपाल मूंधडा और कृष्णकांत भट्टर, गुजरात प्रदेश कोषाध्यक्ष श्याम भंडारी, प्रदेश संयुक्त मंत्री राधाकिशन मूंदड़ा, सूरत जिला माहेश्वरी सभा अध्यक्ष पवन बजाज आदि भी मंचासीन हुए। सूरत जिला माहेश्वरी सभा के पदाधिकारी पवन बजाज, अतिन बाहेती, मुरली लाहोटी, नारायण पेरीवाल, विजय भट्टर, विजय चांडक, परसराम मूंदड़ा, महेश खटोड, विष्णु राठी आदि ने सभापति का स्वागत किया। मुरली सोमानी ने सूरत की भावनाओं को उनके समक्ष रखा कि सूरत को प्रदेश का दर्जा मिले व सूरत की महासभा में भागीदारी बढ़ाई जाए। जिला अध्यक्ष पवन बजाज ने सभी का स्वागत किया व सूरत को आगामी महासभा अधिवेशन आयोजित करने का अवसर मिले इसके लिए आग्रह किया।

राम महोत्सव का आयोजन

फरीदाबाद। माहेश्वरी मंडल फरीदाबाद ने 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर माहेश्वरी सेवा सदन फरीदाबाद में सामूहिक सुंदरकांड पाठ के साथ 101 दीप प्रज्जवलन का कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर 150 से ज्यादा उपस्थित समाज बंधुओ ने अयोध्या से प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का लाइव प्रसारण देखा एवं कार्यक्रम के अंत में पूजा अर्चना के साथ सभी समाज बंधुओ ने महाप्रसाद का आनंद उठाया। इस अवसर पर माहेश्वरी मंडल के अध्यक्ष रामकुमार राठी, सचिव महेश गट्टानी, प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर राकेश सोनी, ट्रस्ट अध्यक्ष कमल गुप्ता, महिला संगठन अध्यक्षा पुष्पा झंवर, युवा संगठन अध्यक्ष मोहित झंवर, दुर्गा प्रसाद मुंदड़ा मार्गदर्शक सुशील नेवर, रामनिवास झंवर, परशुराम साबू सहित महिला शक्ति एवं युवा साथियों की सराहनीय उपस्थिति रही। इसी श्रृंखला में 26 जनवरी 2024 को माहेश्वरी मंडल फरीदाबाद ने 75वें गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर एवं राष्ट्रगान के साथ सभी उपस्थितजनों को शुभकामनाएं प्रेषित की गई।

स्त्री चिकित्सा शिविर सम्पन्न

जयपुर। रामजी दास मोदानी फाउण्डेशन, नरायना-जयपुर कुकून हॉस्टिपल जयपुर एवं महिला संगठन जोन-5 के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क जाँच एवं परामर्श शिविर 21 जनवरी, 2024 को कुकून हॉस्पिटल जयपुर में लगाया गया। शिविर में डॉ. पंखुड़ी गौतम (स्त्री रोग विशेषज्ञ) एवं डॉ. निशा मंगल (स्त्री रोग विशेषज्ञ) द्वारा सभी महिलाओं की जाँच की गयी एवं स्वास्थ्य के बारे में परिचर्चा की गयी। मेडिकल स्टॉफ को रामजी दास मोदानी फाउण्डेशन के अध्यक्ष सत्यनारायण मोदानी द्वारा माला पहनाकर स्मृति चिन्ह भेंट किये गये। महिला संगठन जोन-5 की अध्यक्ष रेखा धूत द्वारा भी सभी का स्वागत किया गया। इस शिविर का 50 महिलाओं ने लाभ उठाया। सोनू मदानी द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

निःशुल्क जाँच शिविर का आयोजन

जयपुर। गत 4 फरवरी को रामजीदास मोदानी फाउण्डेशन द्वारा ॐ हॉस्पिटल राजा पार्क जयपुर के सहयोग से निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच व परामर्श शिविर लगाया गया। इस केम्प में B., P., Suger, ECG, Uric Acid, Lipid, Profile, HbAIC की निःशुल्क जांच की गई। आँखों की जाँच भी की गई व मोतिया बिन्द के ऑपरेशन निःशुल्क किये जाएंगे। रामजीदास मोदानी फाउन्डेशन के अध्यक्ष सत्यनारायण मोदानी ने मेडिकल स्टाफ को माला पहना कर मोमेन्टो भेंट किये। हॉस्पिटल के प्रतीक कुमार एवं प्रिया शर्मा ने फाउण्डेशन अध्यक्ष सत्यनारायण मोदानी एवं फाउण्डेशन से सदस्य पुष्प कान्ता मोदानी, सोनू मोदानी, राधेश्याम काबरा आदि का राज. के. सोमानी - जयपुर जिला महिला मंडल अध्यक्ष उमा सोमानी, निर्मला राठी, गोपाल राठी, बृजेश लड्ढा आदि का माला पहनाकर व शाल भेंट कर स्वागत किया गया। राधेश्याम काबरा द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया।

अभिमान को आने मत दो और स्वाभिमान को जाने मत दो क्योंकि अभिमान आपको उठने नहीं देगा और स्वाभिमान आपको गिरने नहीं देगा।

एक शाम प्रभु श्री राम के नाम

कानपुर। राष्ट्रीय महिला संगठन की संस्कृतिसिद्धा आध्यात्म व परंपरा समिति द्वारा प्रभु श्रीराम लला की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर 19 जनवरी 2024 को राष्ट्रीय स्तर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम एक शाम प्रभु श्रीराम के नाम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ आत्म बलिदानी श्री कोठारी बंधुओं व श्री अविनाश माहेश्वरी को माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि प्रदान करते हुए हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री ज्योति राठी द्वारा वर्चुअल प्रांगण में उपस्थित राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजु बांगड़, राष्ट्रीय युवा संगठन के अध्यक्ष शरद सोनी, सम्माननीय संरक्षक एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा विशिष्ट विभूतियों एवं संगठन की सभी सदस्याओं का स्वागत किया गया। इस अवसर पर पांचो अंचल के नेपाल चैप्टर सहित 27 प्रदेशों की भागीदारी रही। इस कार्यक्रम को राम संवाद स्पर्धा के रूप में संदेशात्मक भावनाओं से सजाया गया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम में पूर्वांचल से राम-हनुमान, पश्चिमाचंल से राम-केवट, मध्यांचल से राम-जटायु, उत्तरांचल से राम-शबरी, दक्षिणाचंल से राम-विभीषण संवाद आदि स्पर्धा नृत्य नाटिका के रुप में आयोजित की गई।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर सम्पन्न

जयपुर। रामजीदास मोदानी फाउण्डेशन, नरायना-जयपुर द्वारा क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा, सोडाला एवं झोटवाड़ा के सहयोग से मणिपाल हास्पिटल विद्याधर नगर, जयपुर में निःशुल्क परामर्श एवं जाँच शिविर गत 07 जनवरी, 2024 को मणिपाल हॉस्पिटल में लगाया गया। इस कैम्प में निःशुल्क जाँचे की गयी एवं चिकित्सकों द्वारा परामर्श दिया गया। इस मौके पर जुगल किशोर सोमानी अध्यक्ष पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा, माहेश्वरी समाज जयपुर के महामंत्री मनोज मुंदड़ा, माहेश्वरी महिला परिसर की अध्यक्ष ज्योति तोतला, क्षेत्रीय महिला संगठन जोन-5 की अध्यक्ष रेखा धूत, क्षेत्रीय महिला संगठन जोन-2 की राजोल तापड़िया, क्षेत्रीय माहेश्वरी सभा, टौंक फाटक के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत तोतला आदि मौजूद थे। संयोजक जयन्त बाहेती ने सभी आगुन्तकों का स्वागत किया। कार्यक्रम के अन्त में रमेश माहेश्वरी ने आभार व्यक्त किया।

बायोडाटा अवलोकन कार्यक्रम सम्पन्न

भीलवाड़ा। मासिक बायोडाटा अवलोकन कार्यक्रम का माहेश्वरी समाज संपत्ति ट्रस्ट, नागोरी गार्डन, भीलवाड़ा में ओम प्रकाश लढा मांडलगढ़ तहसील सभा एव सिंगोली धर्मशाला के मंत्री, जिला सभा के उपाध्यक्ष राम किशन सोनी, कैलाश चन्द्र लढा, राम सहाय पटवारी, रमेश राठी और सुनील मूंदड़ा ने दीप प्रज्वलकर शुभारंभ किया। श्रवण समदानी ने बताया कि अभी तक 42000 लोग गूगल ड्राइव और 125000 लोग वेबसाइट पर अवलोकन कर चुके हैं। श्रवण समदानी, सुनील मूंदड़ा, आदित्य बाहेती व अन्य कार्यकर्ताओ ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया। श्रवण समदानी ने बताया कि भीलवाड़ा मुख्यालय के साथ चित्तौड़, उदयपुर, मनासा में भी शाखाएं सेवारत है जिसमें सभी बायोडाटा भीलवाड़ा मुख्यालय की तर्ज पर ही उपलब्ध हैं जहां प्रत्येक रविवार को यह सेवाएं उपलब्ध रहती हैं।

ग्लोबल स्टार्स अवार्ड्स का आयोजन

पुणे। माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल, पुणे, भारत ने हाल ही में पहले माहेश्वरी ग्लोबल स्टार्स अवार्ड्स का आयोजन किया था। इसका आयोजन कला और खेल क्षेत्रों में उत्कृष्ट युवा प्रतिभाओं को सम्मानित करने के लिए हुआ था। इस समारोह में 8 से 22 वर्ष के आयु समूह में 12 अत्यधिक प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान की गई, जिन्होंने अपने आप में अद्वितीय प्रतिभा दिखाई। प्रत्येक को 1 लाख रूपये के सोने के मेडल से पुरस्कृत किया गया। शरद सोनी, ऑल इंडिया माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष के रूप में श्रद्धेय मुख्य अतिथि थे। मिस्टर नितिन न्याती एमडी न्याती ग्रुप मुख्य अतिथि थे। अतुल लाहोटी- एमवीपीएम के अध्यक्ष और शेखर मूंदड़ा- एमवीपीएम के कार्यकारी अध्यक्ष ने भी योगदान दिया। अंजलि तापड़िया परियोजना अध्यक्ष और राज मुच्छाल (परियोजना समन्वयक) ने सफलता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राह संघर्ष की जो चलता है वही तो संसार बदलता है जिसने रातों से जंग जीती है सूर्य बनकर वही निकलता है।

स्पोर्ट्स डे कार्यक्रम सम्पन्न

अहमदाबाद। माहेश्वरी युवा संगठन ने 26 जनवरी 2024 को गणतंत्र दिवस पर पारिवारिक खेल दिवस का आयोजन किया। इस आयोजन की शुरुआत राष्ट्रगान और महेश वंदना के साथ हुई। इसमें विभिन्न खेल जैसे राउंडर क्रिकेट, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज, रेसिंग आदि का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में भागीदारी मिली। इस आयोजन में 350 से अधिक सदस्य शामिल हुए। संगठन के कई पूर्व अध्यक्ष आलोक करनानी, अनिल मनियार, विकास मूंदड़ा, नितिन मूंदड़ा, विक्रम धूत भी इस आयोजन में मौजूद थे। अहमदाबाद माहेश्वरी युवा संगठन की समिति टीम सपना मनियर, बसंत माहेश्वरी, दिनेश भूतड़ा, जय सोमानी, दीपक बागड़ी, संदीप मनियार, श्रीकुमार भंसाली, शिवप्रकाश चांडक आदि ने इस आयोजन को बहुत ही सहज रूप से प्रबंधित किया। समापन समारोह में राउंडर क्रिकेट के टीम 'राउंडर चैंपियन्स' को चैंपियन्स ट्रॉफी और खेल के प्रतिभागियों को रनर अप ट्रोफी और मेडल प्रदान किए गए। संगठन के अध्यक्ष दीपक मनियार और सचिव अभिषेक मालपानी, कोषाध्यक्ष प्रवीण माहेश्वरी, खेल मंत्री वीरेंद्र सारदा आदि ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मंदिर में सजाई झांकी

कोयंबटूर। गत 22 जनवरी 2024 को माहेश्वरी सुरभि भजन मंडल कोयंबटूर द्वारा श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष्य में कोयंबटूर के आर.एस. पुरम स्थित श्री सत्यनारायण मंदिर में राम-लक्ष्मण की झांकी, भजन एंव भोग आरती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मे समाज के भजन मण्डल की 40 से ज्यादा महिला सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम में 108 बार राम मनका, हनुमान चालीसा, राम के भजनों के साथ राम दरबार की भव्य झांकी सजाई गई। राम दरबार के लिए राम-लक्ष्मण-सीता-हनुमान की भुमिका बाल कलाकार कार्तिक मण्डोवरा, हर्षित मण्डोवरा, वन्या गट्टाणी एवं महावीर ने सरलता से निभाई। सभी महिलाओ ने 51 दीपों के साथ राम स्तुति, वंदना एवं आरती की। कार्यक्रम की रुपरेखा दीपा राठी एवं भावना साबू ने बनाई। रुचि बागड़ी, श्वेता भुराड़िया, श्वेता बागड़ी, अनु पनपालिया, श्रद्धा व पुजा चितलांगिया, सीमा मालपानी आदि सदस्यों का विशेष योगदान रहा।

सर्वाइकल कैंसर की दी जानकारी

बूंदी। सामर्थ्य सोसायटी के तत्वावधान में 'नारी तू नारायणी' प्रोजेक्ट के तहत शहर के निकटस्थ ग्राम दलेलपुरा बस्ती में रहने वाली महिलाओं की चौपाल लगाकर सर्वाइकल कैंसर के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान उन्हें इसके निदान के उपाय भी बताएं। सोसायटी अध्यक्ष राशि माहेश्वरी ने बताया कि स्तन कैंसर के बाद सर्वाइकल कैंसर भारत का पहला और सबसे अधिक मृत्युदर वाला जटिल रोग है। इस अवसर पर सोसायटी सदस्य नम्रता शुक्ला, हेमा सोनी, नेहा जोशी, शालिनी सोनी आदि उपस्थित रहे।

बसन्त उत्सव का हुआ आयोजन

उदयपुर। माहेश्वरी महिला गाँव द्वारा बसन्त उत्सव रामा बाग में मनाया गया। अध्यक्षता कौशल्या गरानी व जनक बाँगड़ ने की। अध्यक्ष आशा नरानीवाल ने बताया कि बसन्त रानी, कविता बल्दवा व रनअप इन्द्रा मून्दड़ा व कला गट्टानी रही। रेणु मून्दडा आदि ने बसन्त पर हाउजी गेम खेलाया।

खरी-खरी...

हर चेहरे पर लगा मुखौटा
संकट है पहचान का

भेद समझ पाना मुश्किल है
रुदन और मुस्कान का

स्वार्थ सिद्धि हित जिसने
नैतिक मूल्यों का उत्सर्ग किया

अपने छल कौशल को भी
फल कहता है भगवान का

© राजेन्द्र गट्टानी, भोपाल
94250-16939, 87702-21707

10th MVPM's Maheshwari Scholars Award Honors Bright Minds

Maheshwari Vidya Pracharak Mandal (MVPM) celebrated its **10th Maheshwari Scholars Award ceremony** with great pomp and grandeur on February 10, 2024, at **BN Vaidhya Hall, Dadar, Mumbai.** The event, organized by the Scholars Committee, aimed to recognize and honor exceptional individuals who have demonstrated outstanding achievements in various disciplines.

Chief Guest Dr. Brijesh Maheshwari, Founder Director of Allen Career Institute, and **Guest of Honour Mr. Aakash Moondhra,** Chairman of V Mart, graced the occasion, presenting awards to eight Maheshwari Scholars and eight Promising Scholars. These scholars, hailing from diverse backgrounds and academic disciplines, were acknowledged for their remarkable contributions and potential to make a significant impact in their respective fields.

The ceremony commenced with a warm welcome, followed by an overview of the Scholar Award by Shri Shreegopal Kabra, Chairman of MVPM Scholar Committee, and an address by **Shri Atul Lahoti,** President of MVPM.

The highlight of the event was the presentation of awards to the Promising Scholars, both those present and their family members, as well as the MVPM Scholars. Each awardee was introduced with heartfelt testimonials, showcasing their academic prowess and future aspirations. The awardees were presented the medal and a citation.

The evening concluded with felicitations of the esteemed guests and a vote of thanks by Shri Satyanarayan Somani, Secretary, Scholar Comittee. As the National Anthem played, the audience reflected on the significance of the occasion and the bright future ahead for the Maheshwari community.

The event not only celebrated academic excellence but also fostered a sense of pride and camaraderie among the Maheshwari community, inspiring the next generation to strive for greatness.

Felicitation at the Hands of Chief Guest & Guest of Honor

Scholars with Guest & Dignitaries

MVPM MAHESHWARI SCHOLARS 2023

Anay Navandar
Solapur (Maharashtra)
BTech Pharma,
Institute of Chemical
Technology, Mumbai

Chaitanya Khemani
Siliguri (West Bengal)
158th rank in the UPSC
examination of 2023.

Garima Lohiya
Buxar (Bihar)
AIR 2, UPSC Civil Services
Exam in 2022.

Paridhi Maheshwari
Bhopal (Madya Pradesh)
Master of Science in
Computer Science
from Stanford University
(2021-2023) with a
GPA of 4.13/4.0

Sanjana Marda
Chennai (Tamilnadu)
MBA IIBM. 6 merit
certificates and a Class X
CGPA of 9.4. at Bala
Vidyalaya and later
Bala Vidya Mandir

Shraddha Somani
Solapur (Maharashtra)
All India Rank 43 in
CA final and
All India Rank 36 in
CA Intermediate

Dr. Shreyas Kalantri
Nanded (Maharashtra)
MD, Pursuing Haematology
and Oncology super specialty
training at the Brown Cancer
Center, University of Louisville.

Dr. Siddhi Maniyar
Sangamner (Maharashtra)
Ph.D. in Molecular and
Cell Biology, University
of Heidelberg

MVPM PROMISING SCHOLARS 2023

Rishabh Mundhada
Nagpur (Maharashtra)
MBA, IIM Bangalore.
B.Tech BITS Pilani.

Rushikesh Zawar
Aurangabad (Maharashtra)
Rank 1 from BITS Pilani
B.E. Computer Science
and M.Sc. Biological Sciences.

Sakshi Maheshwari
Burhanpur (MP)
B.Tech Electrical Eng., NIT.
99.84%ile in CAT,
MBA IIM Bangalore.

Sanskriti Somani
Badnawar in Dhar (MP)
B.Tech, IIT BHU. AIR 49
in UPSC CSE 2022,
a perfect 10 CGPA
in Class 10

Shivani Kabra
Mumbai (Maharashtra)
LL.M University of
Cambridge, securing
572/800 with a First-Class
distinction, 16th
position among 172 students.

Shubham Lohiya
Aurangabad (Maharashtra)
Pursuing his Masters in
Computer Science at
Georgia Tech
with a Machine
Learning Specialization

Tejas Sarda
Solapur (Maharashtra)
MBBS, GS Medical College
and KEM Hospital,
Mumbai. UPSC
CSE 2022(IRMS) officer.

Vivek Loya
Udgir (Maharashtra)
BTech in ME with an
8.9 CGPA from (VIT) Pune.
MBA, Faculty of
Management Studies, Delhi.

The Award Function was Sponsored by -

- Patron Sponsors -

Manmohanji Kabra (Quantum)	Shreegopalji Kabra (RR Kabel)

- Associate Sponsors -

Alumni of MVPM Hostels	Dr. BL Maheshwari (Aqua Proof)	VP Mundra (Core Group)
Sudhakarji Mody (Super Tiles)	Satyanarayanji Kabra (Plastibends)	Manishji Sarda (Deserve)

प्रबंधन की क्षमता नारी को प्रकृति प्रदत्त रूप से प्राप्त है। बस इसे पहचानकर यदि वह इसमें अपनी प्रतिभा के पंख लगा दे तो ऊँची उड़ान उड़ने से उसे कोई रोक नहीं सकता। इन्हीं शब्दों को साकार कर रही हैं, जोधपुर निवासी कंचन जाजू जो पुरुष प्रधान वेडिंग प्लानर जैसे क्षेत्र में भी अपना परचम फहरा रही हैं, साथ ही महिलाओं को आत्मनिर्भरता के गुर भी सीखा रही हैं।

वेडिंग प्लानर-एजुकेटर
कंचन जाजू

जब भी किसी उत्कृष्ट विवाह समारोह का आयोजन हो तो जोधपुर क्षेत्र में सबसे पहले कंचन जाजू का ही नाम लिया जाता है। कारण है उनका कुशल प्रबंधन जिसके बलबुते पर अभी तक वे 5 हजार से अधिक शादियों का सफलतापूर्वक आयोजन करवा चुकी हैं। उनकी कंपनी ''बास्क इंटरटेंमेंट प्रा.लि.'' गत 20 वर्षों से श्रीमती जाजू के नेतृत्व में कार्य कर रही है। इसके साथ ही उनके द्वारा स्थापित ''रिजेंट इंस्टिट्यूट ऑफ कॅरियर मैनेजमेंट'' महिलाओं की प्रतिभाओं का विकास कर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में अपना योगदान दे रहा है। श्रीमती जाजू अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता तथा पति स्व. श्री सुरेश जाजू को देती है।

बचपन से चहुंमुखी प्रतिभा

बचपन से ही चहूँमुखी प्रतिभा की धनी रही कंचन जाजू ने नृत्य, गायन, वादन तथा वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताओं में भी राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार जीते। शादी के बाद कुछ नया करने का जुनून मन में था। ऐसे में सामाजिक स्तर पर अपनी प्रतिभा को दिखाने का मौका मिला और समाज में होने वाले सभी धार्मिक, सांस्कृतिक आदि इन सभी कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर अपनी सेवा देना आरंभ किया। वे शादी से पहले ही ऑल इंडिया रेडियो में कैजुअल कंपेयर के रूप में कार्य कर रही थी, तो निर्भय होकर बोलने की प्रतिभा बचपन से ही अंदर थी। समाज से भी भरपूर सहयोग मिला और धीरे-धीरे विवाह समारोह में छोटे-छोटे जो कार्यक्रम होते थे उनमें अपनी प्रोफेशनल सेवाएं देना शुरू किया। मेहनत से लगाया हुआ पौधा कब वट वृक्ष बन गया पता ही नहीं चला। आज राजस्थान

में कहीं भी रिचुअल मैरिज, थीम बेस मैरिज या कुलीन परिवारों में जब शादी का आयोजन होता है, तो उसकी शानदार व्यवस्था, प्लानिंग और तनाव रहित विवाह आयोजन के लिए किसी एक विश्वसनीय सहयोगी का नाम याद आता है तो उसका नाम होता है- बास्क इन्टररटेन्मेंट प्राइवेट लिमिटेड। श्रीमती जाजू इसकी डायरेक्टर हैं। इस उद्योग ने विगत 20 वर्षों से हजारों शादियां अपनी देख-रेख में आयोजित करवाई हैं।

कला-संगीत में भी महारथ

जोधपुर में जब 2019 में ऐतिहासिक अखिल भारतीय माहेश्वरी अधिवेशन हुआ तो उसकी सभी कल्चरल प्रोग्राम की हेड का दायित्व आपको मिला। जितने भी लोगो ने उसमें भाग लिया, वो कल्चरल प्रोग्राम को कभी नही भुला पाये होंगे। आप शुरु से संस्कृति और संगीत से जुड़ी रहीं। आपने म्यूज़िक में एम.ए किया और उसमें वह गोल्ड मेडलिस्ट थी। समाज के तमाम कल्चरल और महेश जयंती समारोह के प्रोग्राम में आपकी उपस्थिति प्रमुख रूप से दर्ज की जाती है। श्रीमती जाजू ने अपने कार्य के दौरान यह महसूस किया कि कोई भी महिला जिसके अंदर कोई भी हुनर हो तो वह अपने जीवन को बहुत ही खूबसूरती से जी सकती है। इसी कड़ी में एवं मैनेजमेंट पर शोध कर उन्होंने एक पुस्तक लिखी जिसका टाइटल है ''रिचुअल्स एंड कल्चर ऑफ़ राजस्थानी एंड पंजाबी वेडिंग्स''। इसी शोध के तहत कंचन को डॉक्टरेटर की उपाधि से नवाजा गया। पिछले 2 वर्ष पूर्व ''रिजेंट इंस्टिट्यूट ऑफ कॅरियर मैनेजमेंट'' की स्थापना की। इस

इंस्टिट्यूट में कई तरह के कोर्सेज चलते हैं जिसमें इवेंट मैनेजमेंट, डिजिटल मार्केटिंग, होटल मैनेजमेंट, ग्राफिक डिजाइनिंग, गायन, वादन, नृत्य आदि शामिल हैं। इन सभी कौशल कोर्सेज को चलाकर महिलाओं को रोजगार तक ले जाने का कार्यक्रम श्रीमती जाजू संचालित करती हैं। आपकी संस्था में बच्चों को विभिन्न तरह के डिग्री, सर्टिफिकेशन ओर डिप्लोमा कोर्स कराये जाते है। आपकी संस्था से 100 से ज्यादा बच्चे नृत्य और एंकरिंग के माध्यम से कोरियोग्राफर और आर.जे. बनकर स्वावलम्बी हो चुके हैं। आपने बहुत से स्किल्ड बेस्ड कोर्सेस उनके लिए तैयार किये है।

सामाजिक जिम्मेदारियों का भी सफल निर्वहन

समय-समय पर उन्होंने बहुत से सामाजिक कार्यक्रमों में अपनी महती भूमिका निभाई है। आपने अभी महिला मंडल के जिला / प्रदेश स्तर के बहुत से दायित्व का निर्वहन किया है। वर्तमान में महिला मंडल जोधपुर को सचिव के रूप में सेवा दे रही हैं। इनका सपना है कि कोरियोग्राफी में महिलाओं की सशक्त भागीदारी हो, वो सीखें ओर हम शादियों में उनके माध्यम से ही अपने महिला संगीत प्रोग्राम ऑर्गेनाइज करें। आप अनेको सम्मान से समय-समय पर सम्मानित होती रही हैं। आपके पति श्री सुरेश जाजू एव आप दोनों के संयुक्त प्रयासों से आज आपकी कम्पनी देश में विभिन्न जगहों पर सैकड़ों शादियों के इवेंट सम्पन्न करा चुकी हैं। इनकी पुत्री ख्याति अपने नाम के अनुसार जोधपुर ही नही सम्पूर्ण राजस्थान में कोरियोग्राफी और एंकरिंग का सशक्त हस्ताक्षर हैं। आज बालिकाओं में कत्थक नृत्य को लेकर बहुत क्रेज है, आप इनके ऑनलाइन कोर्सेस के माध्यम से बैचलर और मास्टर दोनों डिग्री ले सकते हैं। बोर्ड मेंबर ऑफ़ रोटरी क्लब जोधपुर संस्कार के रूप में भी सेवा दे रही हैं। उन्होंने 5000 से भी ज्यादा वेडिंग प्लानिंग के अनुभव के साथ घूमर नृत्य में इंडिया बुक में रिकॉर्ड कोरियोग्राफी करके अपना नाम दर्ज कराया है। अभी तक समय-समय पर कई संगठनों द्वारा नारी सम्मान समारोह में श्रीमती जाजू को कई तरह-तरह के सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

सही
जन्म कुण्डली
ही बता सकती है सही
भविष्य

ऋषि मुनि
वैदिक सॉल्युशन्स

90, विद्या नगर, साँवेर रोड़, उज्जैन (म.प्र.)
94250 91161 rishimuniprakashan@gmail.com

जन्म कुण्डली की सुक्ष्म गणनाओं के लिए विश्वसनीय नाम

भारत के प्रख्यात ज्योतिष विदुषियों द्वारा प्रमाणित सॉफ्टवेयर द्वारा ज्योतिष पत्रिकाओं में अग्रणी

१२ ग्रहों की स्थिति, उनके विवरण, षोड्ष वर्ग, सुदर्शन चक्र, मैत्री चक्र, षडबल एवं भावबल, प्रस्तारक अष्टक वर्ग सारिणी, अष्टक वर्ग सारिणी, विशोंतरी दशा, महादशा, प्रत्यंतर दशा एवं सुक्ष्म दशा सहित, कृष्णमूर्ति पद्धति, ग्रहों के उप स्वामी, ग्रहों की स्थिति लग्नानुसार, वर्षफल, वैदिक ग्रंथों के अनुसार नक्षत्र फल, साढ़े साती विवरण एवं उनके उपाय, रत्न विचार एवं समस्याओं पर उपचार, योग संग्रह, कुण्डली योग का विवरण, परिणाम सहित कुण्डली मिलान।

नारी के सम्मान की वृद्धि के लिये उसका सशक्त होना जरूरी है। इसी सोच के साथ सामाजिक व आर्थिक दोनों ही मोर्चों पर माहेश्वरी नारी को सशक्त बनाने में जुटी हुई हैं, कोलकाता प्रदेश की पूर्व अध्यक्ष तथा स्वयंसिद्धा महिला सशक्तिकरण समिति राष्ट्रीय प्रभारी निर्मला मल्ल।

■ टीम SMT

महिला सशक्तिकरण की सारथी

निर्मला मल्ल

निर्मला मल्ल समाजसेवा के क्षेत्र में न सिर्फ कोलकाता अपितु राष्ट्र स्तर पर एक ऐसा प्रतिष्ठित नाम बन गई हैं, जो नारी सशक्तिकरण की सतत ज्योति जला रही हैं। वे किसी भी पद पर रहीं अथवा नहीं भी रहीं लेकिन उनका लक्ष्य नारी को वह सम्मान दिलवाना है, जिसकी वह हकदार है और इसमें वे सतत रूप से जुटी हुई हैं। उनकी इन्हीं भावनाओं को देखते हुए अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन ने श्रीमती मल्ल को संगठन के अंतर्गत कार्यरत स्वयंसिद्धा महिला सशक्तिकरण समिति में राष्ट्रीय समिति प्रभारी का दायित्व सौंपा है, जिसका श्रीमती मल्ल सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही हैं।

ऐसे प्रारम्भ हुई सेवा यात्रा

नारी की आत्मनिर्भरता व सशक्तिकरण का पाठ श्रीमती मल्ल को बचपन में ही अपने परिवार से मिला। बचपन से ही न सिर्फ व्यापार को निकट से देखा बल्कि उसमें योगदान देते हुए व्यापार के गुर सीखे। इसी ने उन्हें आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया। इसके साथ मायके व ससुराल दोनों ही जगह उन्हें समाजसेवा भी विरासत के रूप में मिली। इन सभी का नतीजा ही है कि स्वयं श्रीमती मल्ल न सिर्फ स्वयं सशक्त हुईं बल्कि समाज की अन्य महिलाओं को भी सशक्त बनाने का बीड़ा उठाकर चल पड़ी हैं।

समाज में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई

समाज सेवा में रुचि के कारण 2015 में वृहत्तर कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष का पद मिला। इस दौरान उन्होंने महसूस किया कि महिलाओं को मुख्यधारा से जोड़ने की आज भी बेहद आवश्यकता है, इसीलिए अध्यक्ष पद पर रहते हुए महिलाओं को स्वावलंबी और आर्थिक रूप से मजबूत करने की दिशा में कार्य किये। 2020-22 में पुनः कोलकाता प्रदेश अध्यक्ष की बागडोर संभालने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक कार्य किए गए। 2023-26 सत्र में राष्ट्रीय समिति प्रभारी स्वयंसिद्धा महिला सशक्तिकरण समिति का पद प्राप्त हुआ। प्रारंभ से एक ही सोच

थी कि लोगों में उनकी खूबियां देखना और उनके मन में विश्वास जगाना। स्वयं सिद्धा का अर्थ ही यही है कि स्वयं को पहचानो अपने मन को जगाओ। सभी में खूबियाँ होती है और इन खूबियों को पहचान बनाते हुए उन्होंने कई महिलाओं को सशक्त बनाने की भरकत कोशिश की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय काल में तीन सिलाई केंद्र खोलें और 111 सिलाई मशीन महिलाओं को देकर सशक्त बनाया। अब वह महिलाएँ और युवतियाँ सिलाई करके अपने परिवार का पालन पोषण कर रही है। आज भी महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिणिक स्तर पर आगे बढ़ाना और निराश्रित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना उनका लक्ष्य है।

नारी सशक्तिकरण में चहुंमुखी योगदान

कर्मण्येवाधिकारस्ते मंत्र जाप सी उज्जवल सी धमकती, कोलकाता के दसों अंचलों का संगम, आजादी के 75 उत्सव की पावन श्रृंखला में अमृत अमर सेवा की। महिलाओं को क्रिकेट, कैरम खेल खिलवाया व सदस्याओं के पंखों में नई उड़ान भरी। कोलकाता माहेश्वरी महिला संगठन के गगन पर विस्तार निरंतर करते हुए राष्ट्रीय महिला संगठन के बैनर तले जारी है। अपने काम से स्वर्ण के साथ ही, आठ डायमंड का ताज भी जड़ा, अपने समाज की कई महिलाओं को रोज़गार दिलवाया और आगे बढ़कर काम दिलवाने की लिख दी नई इबारत। आज भी यही सोच है कि अधिक से अधिक हमारे समाज की महिलाओं को रोज़गार में बढ़ावा देना।

जीवन में यदि उत्साह हो, तो उम्र के हर पड़ाव पर व्यक्ति सफलता की कहानी लिख सकता है। इसी को चरितार्थ कर रही हैं, भोपाल निवासी मनीषा लड्ढा।

■ टीम SMT

समाजसेवा के साथ उद्यम की राह

मनीषा लड्ढा

उज्जैन में जन्मी और सुनील लड्ढा के साथ विवाह के पश्चात भोपाल को अपनी कर्मभूमि बना लेने वाली मनीषा लड्ढा वर्तमान में नयी पीढ़ी की महिलाओं के लिये किसी प्रेरणा से कम नहीं है। उनकी समाज में पहचान एक ऐसी समाजसेवी के रूप में है, जो हमेशा समाज के सेवा को तत्पर रहती हैं। इसके लिये उन्हें रायपुर में श्रेष्ठ सह प्रभारी का अवार्ड भी प्राप्त हुआ। अनाथ बच्चों की आश्रय स्थली ''मातृछाया'' से भी आप सम्बद्ध हैं।

बेटी के साथ मिल की स्टार्टअप की शुरुआत

श्रीमती लड्ढा ने 2015-16 में अपनी बिटिया के साथ मिलकर एक स्टार्टअप किया जो कि विदेशी नाम से है जॅकर बम। इसमें वे गुड़ एवं ड्राई फ्रूट के लड्डू बनाती है। आपका जॅकर बम ऑनलाइन भी अमेजॉन पर भी उपलब्ध है, गोकी पर भी उपलब्ध है और इसकी एक वेबसाइट भी बनी हुई है। यह अपने विशिष्ट उत्पादों से ग्राहकों में लोकप्रिय हो रहा है।

प्रगति की राह पर परिवार

श्रीमती लड्ढा का जन्म 25 अक्टूबर 1970 को उज्जैन निवासी श्री ओमप्रकाश बियानी के यहाँ हुआ था। एम.ए. तक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वर्ष 1991 में भोपाल निवासी श्री कैलाशचंद्र लड्ढा के सुपुत्र सुनील लड्ढा के साथ परिणय बंधन में बंध गईं। उन्होंने समाजसेवा व स्वउद्यम के साथ परिवार को भी इतनी निपुणता से सम्भाला कि पूरा परिवार प्रगति पथ पर आगे बढ़ता ही चला गया। पुत्र मधुर आईआईटी मुंबई से शिक्षा प्राप्त कर वहीं सेवारत हैं। पुत्री महक ने भी मुंबई आईआईटी से ही शिक्षा ग्रहण की और उनका विवाह कर्नाटक कैडर के आईपीएस सिद्धार्थ गोयल के साथ हुआ है। बेटी महक ने भी ''सोनक'' नाम से अपना स्टार्टअप प्रारम्भ किया है।

मन में यदि अपना लक्ष्य प्राप्त करने का जुनून हो तो कोई भी बाधा रोक नहीं सकती। इन्हीं पंक्तियों को साकार कर रही हैं, जोधपुर की फूलकौर मूंदड़ा, जिन्होंने अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने में न तो उम्र या जिम्मेदारियों से हार मानी, न ही कोई बाधा उन्हें रोक पाई। आईये जानें उनकी कहानी।

टीम SMT

सफलता की "प्रेरणा"

फूलकौर मूंदड़ा

रचनात्मक कार्यों में अटूट श्रद्धा रखने वाली फूलकौर मूंदड़ा का जन्म 7 सितम्बर 1948 को स्व. श्री नंदकिशोर एवं स्व. श्रीमती गोदावरी देवी राठी के यहाँ जोधपुर में हुआ। युवावस्था में प्रवेश करते ही श्री मूंदड़ा के साथ 9 दिसम्बर 1965 को वैवाहिक सूत्र में बंध अपने गृहस्थ जीवन का शुभारम्भ किया। अपने दो पुत्रों ललित एवं दीपक मूंदड़ा तथा एक पुत्री उषा को अपने संस्कारों की शीतल छाया में बड़ा किया और शादी के तेरह वर्ष बाद आजीविका के लिए नौकरी की। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन की गाड़ी को सफलता से चलाते हुए आपने एम ए, बी एड, एम कॉम एवं पीएचडी तक की उच्च शिक्षा प्राप्त कर उन महिलाओं के लिए आदर्श प्रस्तुत किया जिनका मानना है कि गृहस्थ जीवन में पड़ने के बाद शैक्षिक योग्यता बढ़ाना मुश्किल होता है। 2008 में आप ओंकारमल सोमानी कॉलेज ऑफ कॉमर्स से प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हुई हैं।

100 से अधिक परिवारों को संवारा

उन्होंने समाज एवं गैर समाज के पिछड़े परिवारों को न सिर्फ यथायोग्य सहयोग दिया बल्कि अपने दिशा-निर्देशों से भी आगे बढ़ाया। परिवारों में बिगड़ते रिश्तों की डोर को टूटने से बचाने एवं पति-पत्नी के संबंधों में आई दरारों को पाटने जैसे असहज कार्यों को भी अपनी सूझबूझ द्वारा बड़ी सहजता से कर पाने में सिद्धहस्त श्रीमती मूंदड़ा विघटन नहीं, सबको एक सूत्र में बांधने में विश्वास करती है। अब तक 100 से अधिक परिवारों के रिश्तों को टूटने से बचाया और उनका मिलाप करवाया हैं। जरुरतमंद व्यक्तियों की मदद करने में भी आप सदैव अग्रणी रही है। आत्यधिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों की भी कभी स्वयं तो कभी इस क्षेत्र में काम कर रही विविध संस्थाओं के माध्यम से मदद करवाकर उनकी राह एवं मुश्किलों को आसान किया है।

समाजसेवा में भी सदैव सक्रिय

पिछले 25 वर्षों से अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन से जुड़ी हैं। श्रीमती मूंदड़ा माहेश्वरी समाज के साथ अन्य समाज सेवी संस्थाओं से भी जुड़ी हुई है। माहेश्वरी समाज जोधपुर, माहेश्वरी महिला संगठन, अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन, रोटरी क्लब, इनर व्हील क्लब आदि इकाईयों से जुड़े होने के साथ श्रीमती मूंदड़ा कम्युनिटी वेलफेयर एंड क्रिएटिविटी ट्रस्ट की ट्रस्टी भी हैं। आप अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला संगठन पश्चिमांचल की राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री व परिवार परिवेदना प्रकोष्ठ के संयोजक पद पर भी अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। रोटरी क्लब, इनर व्हील, अध्यक्ष वैश्य फेडरेशन तथा जाइंट्स ग्रुप ऑफ़ संस्कृत की दो बार 2 अध्यक्ष रह चुकी हैं। 2024 में जाइंट्स कौंसिल लिस्ट में आपको नया फेडरेशन अधिकारी बनाया गया। समाजसेवा में वे वृद्धाश्रम, गौशाला, अनाथ आश्रम, जरूरतमंद गरीब कन्याओं की शादी में आर्थिक सहयोग में निरंतर कार्यरत रहती हैं। आप पद को प्रतिष्ठा नहीं बल्कि सेवा का अवसर मानती हैं। धार्मिक क्षेत्र में भी 12 ज्योर्तिलिंग यात्रा, अष्टविनायक यात्रा, पुष्कर में सहस्त्रधारा रूद्राभिषेक और हवन आदि में अपना तन-मन-धन से सहयोग देती रही हैं।

युवा पीढ़ी को दें संस्कार

आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय, पारिवारिक सहयोग, पिता एवं पति का हर कदम पर साथ जैसे महत्वपूर्ण घटकों को अपनी सफलता का राज बताने वाली श्रीमती मूंदड़ा का मानना है कि वर्तमान में युवा पीढ़ी भटक रही है और उन्हें सही राय देने वालों की कमी है। ऐसे में बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कारों में ढाला जाय तो वे अच्छे नागरिक बन परिवार, समाज व राष्ट्र की उन्नति कर सकेंगे। युवा पीढ़ी को संस्कारवान एवं सेवा भावी बनाना होगा। श्रीमती मूंदड़ा किसी से अपेक्षा करने के बजाय देने में विश्वास करती हैं। उनका मानना है कि समाज से अपेक्षाएं तब रखी जाती है जब हम समाज को कुछ देने की ताक़त रखते है। अतः जो भी परिवर्तन समाज में चाहते हैं उसके लिए शुरुआत स्वयं से करें तो बेहतर होगा। रीति-रीवाजों को लेकर छींटाकसी करना ठीक नहीं है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है उसे सहर्ष स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

जब मानवता की सेवा करने की भावना हो तो, इसमें कोई भी कमी कभी बाधक नहीं बन सकती। इसी सोच को चरितार्थ करते हुए वर्तमान दौर की तनावपूर्ण जीवन शैली के बीच तनाव से मुक्ति की राह दिखा रही हैं, ख्यात विपस्यना विशेषज्ञ विदिशा निवासी शोभा लाहोटी। इतना ही नहीं वे व्यावसायिक रूप से ज्वेलरी उद्योग का भी सफलतापूर्वक संचालन कर रही हैं।

■ टीम SMT

तनावों से मुक्ति दिलाती शोभा लाहोटी

आमतौर पर महिलाऐं शिक्षा की कमी को अपने जीवन की बाधा मान अपने आपको चार दीवारी में कैद कर लेती हैं और अपनी पहचान सिर्फ इसी तक सीमित कर लेती हैं। जबकि प्रतिभा किसी परम्परागत शिक्षा की मोहताज नहीं होती। यह तो ईश्वर का दिया आशीर्वाद है, जो हर किसी में मौजूद है, बस इसे पहचानने भर की जरूरत होती है। अपनी इसी प्रतिभा के बलबूते पर अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब हुई हैं, विदिशा निवासी सुरेश लाहोटी की धर्मपत्नी शोभा लाहोटी। उनकी पहचान एक ऐसी विपस्यना विशेषज्ञा के रूप में है, जो अभी तक हजारों लोगों को तनावमुक्ति की राह बता चुकी हैं। अपने व्यावसायिक कौशल को पंख लगाते हुए श्रीमती लाहोटी वर्तमान में गोल्ड ज्वेलरी उद्योग का भी संचालन न सिर्फ कर रही हैं, बल्कि उन्होंने अपनी बहुओं को भी इसमें अग्रसर किया है।

न्यूनतम शिक्षा से जीवन की शुरुआत

कर्मठ, हँसमुख और समर्पित समाजसेविका शोभा लाहोटी का जन्म 23 जून 1963 को मूर्तिजापुर (महाराष्ट्र) निवासी श्री गणेशदास भट्टड़ के यहाँ हुआ। न्यूनतम शिक्षा प्राप्त कर, समय की दरकार को ध्यान रख कर आप जीवन के अगले पड़ाव की ओर बढ़ी। आपका विवाह 17 जून 1981 को विदिशा निवासी सुरेश लाहोटी (स्टोन क्रशिंग का व्यवसाय) से हुआ और श्री नथमल लाहोटी की पुत्रवधू बन विदिशा आ गयीं। आपने सदा एक संयुक्त परिवार को सकुशल संजोया और नारी शक्ति के इस रूप को बखूबी अंगीकार किया। आपने विपस्यना का अभ्यास कर तनाव ग्रस्त जीवन में संतुलन लाने में विशेषज्ञता हासिल की। और अनेक क्षेत्रों में मानसिक तनाव से पीड़ित रोगियों को परामर्श सेवा भी दी है। आप दिग्दर्शिका संस्था (मानसिक एवं शारीरिक विकलांग बच्चों के लिए पुनर्वास और अनुसंधान संस्था) की सक्रिय कार्यकर्ता रही हैं। आपकी आध्यात्मिक पुस्तक वाचन और बाग़बानी में भी विशेष रुचि रही है।

उन्हीं के पदचिन्हों पर परिवार

आपकी एक पुत्री संजना अभिषेक साबू मुंबई और एक पुत्र शान्तनु लाहोटी (स्टोन क्रशिंग का व्यवसाय) है, जिन्हें आपने उच्च शिक्षा एवं संस्कारों से सींचा। सभी विपदाओ को छोड़ एक नयी सोच और दिशा में आगे बढ़ आपने 2003 से गोल्ड (डायमंड एवं कुंदन) ज्वैलरी का उद्योग शुरू किया। आपने अपनी पुत्रवधू निकिता लाहोटी को भी प्रोत्साहित कर इस उद्योग में अग्रसर किया। पढ़ाई का साथ ना होने पर भी आपने हर कार्य को मुस्कुराते हुए सीख कर सफलता का नया परचम लहराया। आप माहेश्वरी समाज संगठनों से भी जुड़ी और किसी पद की लालसा ना रखते हुए समाज सेवा के हर प्रकल्प में तन-मन-धन से योगदान देकर कार्य को सफल बनाया। आपने अतिथि सम्मान और नेपथ्य की बागडोर संभालने के महत्वपूर्ण कार्यों में मानक भी स्थापित किया है। आपके इस हंसमुख और मिलनसार स्वभाव, हाथों के जायके और सदह उपलब्ध रसोई से आपको कई बार माँ अन्नपूर्णा की उपाधि से सम्मानित किया गया। आप पिछले 9 साल से राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला संगठन के पदों पर कार्यरत हैं। आप सशक्त नारी सम्मान से भी सम्मानित हो चुकी हैं।

यदि सही प्रोत्साहन मिले तो माहेश्वरी नारी प्रतिभा आसमान की ऊँचाई छुने में पीछे नहीं रहती है। इसी का उदाहरण हैं, म.प्र. के धार जिले के कस्बे बदनावर की निवासी संस्कृति सोमानी।

टीम SMT

नारी प्रतिभा का लोहा मनवाती

संस्कृति सोमानी

मध्य प्रदेश के आदिवासी जिले धार के एक छोटे से कस्बे बदनावर की रहने वाली संस्कृति ने प्रतिष्ठित आईआईटी बीएचयू से इलेक्ट्रॉनिक्स में बी.टेक की डिग्री हासिल की। यूपीएससी सीएसई 2022 में प्रभावशाली एआईआर 49, कक्षा 10 में परफेक्ट 10 सीजीपीए और कक्षा 12 में सराहनीय 90.8% के साथ उनकी शैक्षणिक यात्रा स्वयं उनकी प्रतिभा की कहानी कहती है। संस्कृति ने एआईआर 2235 के साथ आईआईटी जेईई में भी अपनी पहचान बनाई। अपनी उपलब्धि में एक पेशेवर पंख जोड़ते हुए, संस्कृति ने कॉर्पोरेट क्षेत्र में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए, गोल्डमैन सैच्स में अपने कौशल का योगदान दिया है। शिक्षाविदों और कॉर्पोरेट जगत से परे, संस्कृति एक बहुमुखी व्यक्ति हैं। उन्होंने न केवल आईआईटी बीएचयू में ''आईआईटी कलर'' पुरस्कार जीता, बल्कि खेल परिषद के संयुक्त महासचिव का प्रतिष्ठित पद भी संभाला। खेल के प्रति उनका जुनून कितना है, इसका उदाहरण इंटर आईआईटी टूर्नामेंट में उनका वॉलीबॉल रजत पदक प्राप्त करना भी है।

प्रथम महिला पायलट बनी

युक्ता बियानी

माहेश्वरी समाज की बेटी कु. युक्ता बियानी ने भारत में प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रथम पायलट बनने का गौरव अपने नाम किया है। नांदेड माहेश्वरी परिवार की सुकन्या कु. युक्ता बियाणी ने 19 साल की उम्र में विमान पायलट बनकर कॅरियर की ऊँची उड़ान भर दी है। आज के युग में छात्र को रॅट रेस में दौड़ाकर दिन रात एक करके माता-पिता एवं संपूर्ण परिवार दो से पांच साल तक परेशान रहता है, वहीं पर माहेश्वरी छात्रा कु. युक्ता ने अलग कॅरियर चुना भी और उसमें सफलता भी प्राप्त की। युक्ता नांदेड़ निवासी समाज सदस्य प्रवीण बियानी व भाग्यश्री बियानी की सुपुत्री हैं।

गौ माता को भारतीय संस्कृति में अत्यंत पूज्य माना गया है। इसके बावजूद विडंबना है कि गौ माता भारी कष्टपूर्ण जीवन गुजार रही हैं। ऐसी ही स्थिति से उबार कर गौ माता को उत्कृष्ट जीवन देने की काम कर रही हैं, सूरत निवासी ज्योति सोनी बूबना।

गौ सेवा का अलख जगाती ज्योति सोनी बूबना

टीम SMT

सूरत में बीमार एवं निराधार, भूखी गायों के सेवार्थ सद्भावना गौ सेवा फाउण्डेशन ट्रस्ट की स्थापना हुई है, जिसकी संस्थापक ज्योति सोनी बूबना हैं। गौ सेवा के कार्यों में 5 सालो से कार्यरत हैं और अपना जीवन सिर्फ गौ माता को संरक्षित करने के लिए इन्होंने समर्पित किया है। दो साल पहले जब बीकानेर एवं राजस्थान के कई क्षेत्रों में लंपीवायरस की चपेट में आकर कई गाय बहुत दयनीय हालत से बीमारी के दौर से गुजरी थी तब भी नागौर और बीकानेर जैसी जगहों पर इन्होंने वैक्सीन और होम्योपैथिक दवाइयां भिजवा कर गौ माता को संरक्षित किया था।

असहाय व बीमार गाय का संरक्षण

रोड पर बीमारी की हालत में या एक्सीडेंट में घायल हुई गायों या लावारिस कंडीशन में पड़ी हुई गायों को तुरंत उपचार करवा कर गौ शाला भेज कर उन्हें संरक्षित करवाने के कार्य में हमेशा अग्रसर रहती हैं। बीमार गायों को पौष्टिक आहार, दवाइयां और सही उपचार मिल सके उसके लिए कई महिलाओं को जोड़कर संस्था बनाकर उन्हें भी गौ सेवागत कार्यों में अग्रसर रहने के लिए वे प्रेरित करती हैं। इंदौर, इचलकरंजी एवं भारत के और भी राज्यों में ये अपनी सेवाए पहुंचाने एवं गायों के संरक्षण के प्रयासों में कार्यरत हैं। गौ माता को कसाइयों द्वारा बचाया जा सके उसके लिए इन्होंने एक गीत के माध्यम से मोदीजी एवं योगीजी से अपील भी की है। आर्टिकल लेखन के कार्यों में भी अग्रसर हैं जिसमें ये गौसेवा के लिए लोगो को प्रेरित कर रही है। इनका सबसे बड़ा लक्ष्य यही है, जिसके लिए इन्होंने एक नारा बनाया है-

'गौ संरक्षण की अलख हमें सब में जगानी है,
जन-जन के मानस पटल पर गौ की छवि बसानी है'

संस्कारों में मिली प्रेरणा

श्रीमती सोनी का जन्म मध्यप्रदेश के कस्बे तराना जिला उज्जैन के निवासी घनश्याम दास जय किशन सोनी परिवार में हुआ। यहां बचपन का 6th क्लास तक का समय बीता। परिवार में दादाजी एवं पापा की 40 गायों की सेवा घर पर थी और दादाजी को तराना के राजा द्वारा रायरतन सेठ की उपाधि प्राप्त थी। उन्हें गौ सेवा करते नित्यप्रति देख कर बचपन से गौ माता के लिए उनके मन में सेवा के भाव विकसित हुए थे। तराना से सूरत आकर पापा ने यहां व्यवसाय किया और श्रीमती सोनी की शादी भी सूरत में श्री गोविन्द भगवती प्रसाद बूबना के साथ हुई। उनके दो बच्चे हैं हर्ष और श्रीया। शुरु से गौ माता का पंचगव्य लेना शुरु किया तो अपने शरीर में आंतरिक ऊष्मा एवं ऊर्जा का जो संचय होता देखा तो गौ सेवा के लिए आस्था और विश्वास और बढ़ गया और करीब 5/6 सालो से गौ सेवा के कार्यों में अपने जीवन का फ्री समय देना शुरु कर दिया। जब से गौ सेवा में समय देना शुरु किया तब से अपने अंदर कई सकारात्मक परिवर्तन एवं जटिल से जटिल कार्यों को पूर्ण होते देखा है।

ऐसे चली गौ सेवा

महिलाओं को जोड़ कर एक संस्था शुरू की जिसका नाम सद्भावना गौ सेवा फाउंडेशन के नाम से रख एक ट्रस्ट बनाया जिसमें करीब 200/250 महिलाओं के साथ मिलकर काम कर रही हैं, जिससे भूखी, निराश्रित एवं बीमार, एक्सीडेंट हुई गायों की सेवा कर रही हैं उन्हें पोषित खाद्य सामग्री नित्यप्रति मिल सकें तथा उनके उपचार आदि की व्यवस्थाएं जुटाने के कार्यों में नित्यप्रति कार्यशील रहती है। यहां बीमार गायों की एक गौ शाला निर्माणाधीन है जिसमें संस्था द्वारा करीब 10/12 लाख रुपए की खाद्य सामग्री, गौ माता के पानी के कुंड, शेड निर्माण, फ्लोरिंग, आईसीयू वार्ड, ऑपरेशन वार्ड, कूलर, पंखे आदि का इंतजाम करवाया गया। यही नही नित्य प्रति गौ माता को 31 किलो पोष्टिक लापसी की व्यवस्था भी संस्था के माध्यम से करवाई जा रही है। सारे पर्व और त्योहार दिवाली, दशहरा, नवरात्री, होली आदि सभी गौ माता के धाम, गौ शाला में जाकर मनाते हैं, साथ ही गौ माता की अच्छी सेहत के लिए वहा विष्णु सहस्त्रनाम आदि के पाठ भी संस्था की महिलाओं द्वारा किए जाते हैं।

गणगौर की उत्कृष्ट फोटो आमंत्रित

माहेश्वरी समाज में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली आपकी पत्रिका श्री माहेश्वरी टाईम्स द्वारा माहेश्वरी समाज के परम्परागत विशिष्ट पर्व ''गणगौर'' के सुअवसर पर आगामी अंक ''गणगौर'' पर्व को समर्पित होगा।

इस हेतु आयोजन से संबंधित फोटोग्राफ समाचार के साथ अवश्य प्रेषित करें। इस आयोजन के अवसर पर प्राप्त फोटोग्राफ में से श्रेष्ठ फोटोग्राफ को 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' के आगामी अंक के कवर पर प्रकाशित कर सम्मानित करेगा। यह सम्मान वास्तव में उस आयोजन को गौरवान्वित करेगा।

-संपादक

* **केवल DSLR केमरे से खींचा हुआ फोटो ही मान्य होगा। मोबाईल केमरे से खींचा हुआ फोटो मान्य नहीं होगा। फोटो E-mail : smt4news@gmail.com पर भेजें।**

नारी को प्रकृति प्रदत्त रूप से कई गुण प्राप्त है, बस उन गुणों को समझकर उनका उपयोग करने की जरूरत भर है। दिल्ली निवासी सरिता शारदा एक ऐसी ही नारी हैं, जो एक आदर्श नारी की प्रकृति प्रदत्त भूमिका का निर्वहन करती हुई एक सफल एन्टरप्रेन्योर, फैशन स्टाइलिस्ट, लेखिका आदि के साथ ईमेज कंसल्टेंट व इमेज पैनोरमा संस्थापक के रूप में भी अपना विशिष्ट योगदान दे रही हैं।

टीम SMT

इमेज पैनोरमा की संस्थापक
सरिता शारदा

राजस्थान के एक छोटे से गांव में जन्मी और दिल्ली में पली बड़ी हुई सरिता शारदा वर्तमान में नारी सशक्तिकरण के दौर की वर्तमान पीढ़ी के लिये किसी रोल मॉडल से कम नहीं हैं। उनकी पहचान एक सफल गृहिणी, मां, पत्नी, सलाहकार, सोशल एंटरप्रेन्योर, फैशन स्टाइलिस्ट, फैशन और मेकओवर लेखिका, इमेज कंसलटेंट और इमेज पैनोरमा की संस्थापक के रूप में है। कई वर्षों से वे खुद को सभी नवीनतम शोधों, हर क्षेत्र में रचनात्मक और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन, बौद्धिक सामग्री बनाने में व्यस्त रखती हैं, जो न केवल उन्हें सशक्त, स्वयं सिद्धा, अलग, बहुप्रतिभाशाली, गतिशील और बहुमुखी बनाते हैं बल्कि उन्हें एक वैश्विक महिला भी बनाते हैं। सरिता स्वास्थ्य व आहार प्रबंधन में डिप्लोमाधारी होने के साथ इमेज कंसल्टिंग इंस्टीट्यूट द्वारा प्रशिक्षित भी हैं साथ ही फैशन डिजायनिंग व टेक्नोलॉजी में एडवांस डिप्लोमा तथा मानव संसाधन एवं प्रशासन में बी.कॉम. की उपाधि भी प्राप्त कर चुकी हैं।

एक सम्पूण ईमेज कन्सल्टेंट

जो व्यक्ति स्वयं अपने आपमें सम्पूर्ण हो वही तो किसी को इसके लिये सही मायने में प्रेरित कर सकता है। अतः उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में एक सकारात्मक और विजयी प्रभाव बनाने में मदद करके जीवन में मूल्य जोड़ने के लिए इमेज पैनोरमा लॉन्च किया। इमेज पैनोरमा का जन्म एक सरल विश्वास के साथ हुआ है कि personal style and comfort को छोड़े बिना भी उन्नत और गतिशील व्यक्तित्व और व्यावसायिक छवि बनाई और हासिल की जा सकती है। Image Panorama यहां आपके Image elements and resources का सर्वोत्तम उपयोग करने और selflove में पड़ने की शिक्षा देकर जीवन में मूल्य जोड़ने के लिए है। यह सभी प्रकार के इमेज मेकओवर के लिए वन-स्टॉप समाधान है। इमेज पैनोरमा, देवियों और सज्जनों, किशोरों, भावी दूल्हा और दुल्हन और होने वाली माताओं के लिए, कॉर्पोरेट कार्यक्रम, व्यक्तिगत और साथ ही समूह परामर्श प्रदान करता है। इसके द्वारा कई समूहों को विभिन्न विषयों के लिए प्रशिक्षित किया गया। इसमें बॉडी लैंग्वेज, सोश्यल सम्पर्क, मेकअप-ग्रुमिंग, कम्युनिकेशन व लीडरशिप स्किल, टाईम मैनेजमेंट आदि शामिल हैं।

हर वर्ग के लोग लाभान्वित

उनके ईमेज पैनोरमा से अलग-अलग जीवन शैली के लोगों के लिए विभिन्न प्रारूपों में solutions and recommendations किया गया ताकि उन्हें एक प्रामाणिक, उचित, आकर्षक Image and personality पेश करने में सक्षम बनाया जा सके। इसका लाभ लेने वालों में प्रोफेशनल मास्टर शेफ, बिल्डर, व्यवसाय मालिक और निर्माता, डॉक्टर, चार्टर्ड अकाउंटेंट, कंपनी सचिव, कैरियर परामर्शदाता आदि शामिल हैं। इसके साथ ही एमएनसी के टीम लीडर, होटल व्यवसायी, स्कूल शिक्षिका, ग्रहिणी व बच्चे आदि तक इससे लाभान्वित हो रहे हैं। फैशन और मेकओवर लेखिका के रूप में उनकी लेखनी ने सभी को मार्गदर्शित किया। इसके अंतर्गत फाईंडे गुड़गाँव, डेली गुर्जियन तथा फोकस 24 जैसे साप्ताहिक समाचार पत्रों के लिये स्तम्भकार के रूप में लेखन किया। उनके आलेख ब्यूटी एंड स्टाइल, रिस्पांसिबल पेरेंटिंग आदि कई पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए हैं। उनके आलेखों को हमेशा ही पाठकों द्वारा सराहा गया।

सेवा से मिला सम्मान

सोश्यल एन्टर प्रेन्योरशिप, इमेज कंसल्टेंसी लेखन आदि ने उन्हें कई बार सम्मानित करवाया। इनमें परफेक्ट यू 21 ऑनर अवार्ड 2023, मणिकर्णिका नेशनल मंडल आर्ट 2023, यूनिक्यू कलेक्शन अवार्ड 2022, वुमन इंस्पायरेशन अवार्ड 2021, शी दी पावर बाय बिरला सीमेंट 2019, माहेश्वरी वुमन ऑफ वर्थ 2019, वुमन ऑफ द ईयर अवार्ड 2017 तथा न्यू ईयर अवार्ड (भारत निर्माण) 2013 आदि शामिल हैं।

स्वयं की पहचान ही सशक्तिकरण

सरिता शारदा वर्तमान में चल रहे नारी सशक्तिकरण के मुद्दे पर कहती हैं, 'कोई भी व्यक्ति सशक्त तब होता है जब वह अपने व्यक्तित्व के तत्वों को पहचानें और उन्हें अपने गुणों के रूप में स्वीकार करते हुए उनका सदुपयोग करता है। उनका उपयोग वह अपने आपको सशक्त करने के लिए तो करता ही करता है, साथ ही साथ अपने संसाधनों से अपने आसपास के लोगों को भी सशक्त करता है। मैंने अपने आप को तब सशक्त महसूस नहीं किया जब मैं पुरुषों के बराबर रही या जब तक मैं अपना हक पाती रही या फिर कामकाजी होने के बहाने अपनी मनमानी करती रही। अपितु मैंने अपने आप को तब सशक्त माना जब मैं ने नारी होने के नाते नारी के गुणों जैसे समर्पण, त्याग, प्रेम व स्नेह त्यादि को व्यवहार में लाते हुए कभी भी अपने आप को बेचारा नहीं समझा बल्कि इनका सही मायने में उपयोग करके मैं जिंदगी के हर पड़ाव पर विजेता रही।

आमतौर पर कला व साहित्य क्षेत्र दोनों लगते एक जैसे हैं, लेकिन इनका आमतौर पर नदी के दो किनारों की तरह संगम नहीं होता। इस स्थिति में भी अपवाद हैं, जयपुर निवासी मधु भूतड़ा ''अक्षरा'' जो कला के साथ-साथ साहित्य सेवा में भी पूरे समर्पित भाव से जुटी हुई हैं।

स्वाति जैसलमेरिया

कला-साहित्य का संगम
मधु भूतड़ा 'अक्षरा'

गुलाबी नगरी जयपुर की मधु भूतड़ा ''अक्षरा'' प्रतिभा की मात्र एक कड़ी ही नहीं अपितु पूरी श्रृंखला हैं। नृत्य, गायन, चित्रकारी, हस्त कौशल सिद्धा के साथ-साथ उम्दा कलम की धनी लेखिका, साहित्यकार, कवयित्री के रूप में समाज एवं राष्ट्र में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करने वाली मधु भूतड़ा 'अक्षरा' ने सामाजिक व राष्ट्रीय विकास हेतु भी अनेकों योगदान दिए हैं। जब उत्कंठा त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होने वाला था तो आपने सह संपादक की भूमिका में देश भर के माहेश्वरी रचनाकारों से मातृत्व भाव को संग्रहित किया। मैग्जीन का विषय था, 'मेरी माँ मेरी प्रेरक - मेरी प्रेरक मेरी सासू माँ'। तब मुझ लेखिका ने भी मेरी प्रेरणादायी दादी सासू जी के ऊपर काव्य के माध्यम से निजी भाव प्रेषित किए, जिसे पाठकों द्वारा बड़ा सराहा गया।

व्यवसाय से कम्प्यूटर इंजीनियर

कोलकाता में जन्मी और फिर जयपुर निवासी महेश भूतड़ा के साथ परिणय बंधन में बंध कर इसी को अपनी कर्मभूमि बनाने वाली अक्षरा ने बी.कॉम. तक शिक्षा ग्रहण की। इसके बाद सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र से सम्बद्ध हो गई। गत 33 वर्षों से अक्षरा प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान ''मंगलम् कम्प्यूटेक लिमिटेड'' का सफलतापूर्वक संचालन कर रही हैं। सोश्यल मीडिया पर हिन्दी कंटेंट राइटर के रूप में भी सशक्त रुप से मौजूद हैं। साहित्य के क्षेत्र में आपकी एक लेखिका तथा कवयित्री के रूप में प्रतिष्ठित पहचान है।

साहित्य सृजन ने दिलाया सम्मान

सहस्त्रों साहित्यिक मंचों पर हमने साथ प्रस्तुति दी, साथ ही ऑफलाइन एवं ऑनलाइन मंच संचालन करने का अनुभव भी बहुत अच्छा रहा। विशेष रूप से समन्वय वाणी फाउंडेशन, अथाई समूह द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में आपकी ओज भरी वाणी से पूरा सभागार ऊर्जावान हुआ, जहां बड़ी संख्या में श्रोताओं के संग देश भर से पधारे कवि-कवयित्री एवं सम्मानीय गणमान्य शामिल रहे। नाथद्वारा में साहित्यिक मंडल, सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था द्वारा हिंदी साहित्य के उन्नयन और संवर्धन हेतु डॉ. भगवती प्रसाद स्मृति सम्मान समारोह में 'काव्य कौस्तुभ मानद उपाधि' से आपको सम्मानित किया गया। हाल ही में आपका प्रथम काव्य संकलन 'एक पहल' भी प्रकाशित हो चुका है, जिसमें परिवार, समाज एवं राष्ट्र पर लिखी कविताओं का अनूठा संसार दिखाई देता है, प्रत्येक कविता चेतना का नव संचार करती है।

कला व सोश्यल मीडिया में भी योगदान

आपने यूरोप के बार्सेलोना में नृत्य प्रदर्शन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। देश भर से अनेकों साहित्यिक संस्थाओं द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। देश भर के मुख्य अखबारों एवं पत्रिकाओं में आपके सैकड़ों लेख एवं कविताएं प्रकाशित हो चुकी हैं। Facebook पर Ek Pehal पेज पर एक लाख + फॉलोअर्स है, जो आपकी कविताओं को खूब पसंद करते हैं, नन्हीं सी कलम का यह बृहद रूप 'अक्षरा' जी के व्यक्तित्व में साफ झलकता है। आप अपनी सफलता का श्रेय अपने पति महेश भूतड़ा, माता पुष्पा देवी बाहेती, पिता स्व. श्री गोपाल बाहेती, मेघा एवं खुशबू दोनों बेटियों के साथ बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद को देती है। सोशल मीडिया पर आप माहेश्वरी साहित्यकार मंच एवं माहेश्वरी विचार मंच की सशक्त एवं सक्रिय एडमिन हैं, इसके साथ समाज में विवाह हेतु बायोडाटा ग्रुप Ek Duje Ke Liye, माहेश्वरी लघु उद्योग, माहेश्वरी मातृशक्ति भी बनाया है।

सेवा ने दिलाया सम्मान

अध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय कपल क्लब, जयपुर के रूप में आप सेवा दे रही हैं। लगभग 500 से अधिक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा काव्य सृजन हेतु सम्मान पत्र प्राप्त हुए हैं, साहित्य संगम संस्थान-आजादी के अमृत महोत्सव में केंद्रीय मंत्री के समक्ष बखूबी मंच संचालन किया। अन्तर्राष्ट्रीय महिला मंच द्वारा-राजस्थान कवयित्री सम्मान भी प्राप्त हुआ। इंटरनेशनल माहेश्वरी कपल क्लब (IMCC) द्वारा माहेश्वरी वुमन ऑफ़ वर्थ एवं प्रबुद्ध राष्ट्रीय साहित्यिक सम्मान से भी अक्षरा सम्मानित हो चुकी हैं।

नारी की कई भुजाओं वाली शक्ति स्वरूपा के रूप में पूजा होती है। वास्तव में वह कई भुजाओं वाली इसलिये है क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की एक साथ क्षमता सिर्फ नारी में है। फिर भी उसका सबसे बड़ा दायित्व माँ के रूप में भावी पीढ़ी को संवारना ही है।

नारी का सबसे बड़ा कर्त्तव्य
नयी पीढ़ी का निर्माण

कृष्णा नवनीत बजाज
भोपाल

माँ देवकी सा त्याग हो या यशोदा सा दुलार हो, जीजा माता सा शिवाजी राजे पे संस्कार हो या सवित्रीबाई फुले सा शिक्षा के प्रति योगदान हो, पन्ना धाय जैसा माटी के लिए बलिदान हो या झाँसी की रानी सा क्रांतिकारी स्वरूप हो, किरण बेदी सा जोश और उज्जवल सोच हो या कल्पना चावला सा अपने सपनों की उड़ान भरने का हौसला हो, अरुणिमा सिन्हा सी एवरेस्ट पर जाने की चाह हो या हर घर में रहने वाली उस गृहणी सा धैर्य। इन सबकी ताक़त को मिला कर परिवार पर आयी हर विपदा से लड़ने का हुनर नारी में है। नारी तेरे रूप अनेक, बस तू अपना मोल समझ, एक दूसरे को आदर्श बना तू एक नए जहां की खोज कर, है नारी तेरे रूप अनेक, बस तू अपना मोल समझ। आधुनिक समय की चर्चा हो या पुराने समय की, महिलाओं का समाज में महत्व अविनाशी है। उनकी भूमिका समाज के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है और उनके योगदान का महत्व अनगिनत है।

समाज में अहम योगदान

महिलाओं का समाज में महत्व अद्वितीय है। उन्होंने हमेशा ही समाज को आगे बढ़ाने और समृद्धि के मार्ग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महिलाएँ समाज के नेतृत्व, शिक्षा, स्वास्थ्य और परिवार के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महिलाओं का शिक्षा में योगदान समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षित महिलाएँ अपने जीवन में स्वतंत्रता, स्वावलंबन, और सकारात्मकता का अनुभव करती हैं और उन्हें समाज में अपने अधिकारों की जागरूकता होती है। शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाती हैं और उनकी स्थिति में सुधार होता है। महिलाओं का नेतृत्व समाज के लिए एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

अद्भुत नेतृत्व व क्षमता

वे अपने नेतृत्व के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाती हैं और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। महिलाओं का नेतृत्व विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है, जैसे कि राजनीति, व्यापार, शिक्षा, और सामाजिक क्षेत्र या स्वास्थ्य उनका योगदान समाज के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक स्वस्थ महिला ही समाज का संरचनात्मक और आर्थिक विकास कर सकती है। उनके स्वास्थ्य का संरक्षण और समृद्धि में निरंतर ध्यान देना चाहिए। महिलाएँ परिवार के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे अपने परिवार की देखभाल करती हैं, उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य का ध्यान रखती हैं।

पूरे परिवार के विकास की भी आधार

आज की सुशिक्षित महिला केवल अपना ही नहीं वह तो पूरे परिवार का विकास करती है। एक महिला का सबसे पुरस्कृत और आदरणीय रूप है माँ। अपने बच्चों को सुसंस्कारित और कुशल बनाने में जो कार्य एक माँ करती है उस दौर में वो मानो स्वयं आग में तपके मानो सोने से एक सुंदर आकर्षित गहने सा मढ़ जाती है। आज के इस आधुनिक युग में जब पश्चिमी सभ्यता का हम पर सबसे ज़्यादा प्रभाव है तब हमें अपनी मज़बूत जड़ो की ओर अग्रसर होते हुए अपनी आने वाली पीढ़ी के उच्च नेतृत्व पर सबसे ज्यादा मनन करना चाहिए। आने वाली पीढ़ी हमारा भविष्य है उनका सही संरूपन करना ही हमारा परम कर्तव्य है।

योग-मुद्रा

रक्तचाप को संतुलित करती है
व्यान मुद्रा

शिवनारायण मूंधड़ा
'वास्तु मित्र'
94252-02721

कैसे बनाएं : अंगूठा, तर्जनी और मध्यमा उंगुलियों के अग्रभाग को मिलाकर शेष दोनों उंगुलियां सीधी रखें। इनसे अग्नि, वायु और आकाश तत्वों का विकास होता है। व्यान प्राण समूचे शरीर में समान रूप से घूमता है। इसका संबंध जल तत्व यानि स्वाधिष्ठान चक्र से है।

लाभ : उच्च एवं निम्न रक्तचाप दोनों में यह लाभकारी है। रक्तचाप को सामान्य बनाए रखने के लिए इस मुद्रा को 30 मिनट तक प्रातःकाल और सायंकाल लगाएं। रक्तचाप के रोग में इसका चमत्कारी और आश्चर्यजनक परिणाम है। यह हृदय रोग में भी लाभकारी है। इससे रक्त संचार ठीक होता है। रक्तसंचार के रोग दूर होते हैं। वात, पित्त, कफ का संतुलन होता है। व्यान मुद्रा वात, पित्त और कफ का नियंत्रण करने वाली सबसे अधिक प्रभावशाली मुद्रा है। इस मुद्रा में अग्नि, वायु तथा आकाश तत्त्वों में संतुलन बनता है और शरीर में नई शक्ति का संचार होता है। इस मुद्रा को दोनों हाथों से करना है।

सप्ताह का कोई एक दिन ऐसा तय किया जाए जिस दिन घर के पुरुष गृहस्थी का सारा काम करें। उस दिन इनके काम में कमी निकालने का अधिकार हाउस वाइफ को ले। संभवत: ऐसे हालात में ही घर के सदस्यों को हाउस वाइफ की अहमियत पता चलेगी। आफिस में काम करने वाली महिलाऐं भी कम चुनौतियों से नहीं जूझती लेकिन यह अफसोसजनक ही कहा जाएगा कि वर्किंग वूमन के मुकाबले हाउस वाइफ के काम को उतना मान-सम्मान नहीं मिल पाता।

एक दिन पुरुष बनकर देखे हाउस वाइफ

कीर्ति राणा, उज्जैन

डायनिंग टेबल पर खाना लग चुका था। हम लोग चूंकि खाने पर आमंत्रित थे, इसलिए हमारी पसंद-नापसंद का ख्याल रखा जा रहा था। मित्र की पत्नी रसोईघर में व्यस्त थीं, एक-एक कर दाल-चांवल, बेसन गट्टे, कड़ी, बाफले, लड्डू, सलाद आदि सामान बच्चों के हाथ भिजवाती जा रही थी। मित्र ने पहला निबाला मुंह में रखा ही था कि बुरा सा मुंह बनाते हुए किचन की तरफ देखते हुए झुंझलाहट भरे स्वर में कहा- पता नहीं तुम्हारा ध्यान कहां रहता है। दाल में बिल्कुल नमक नहीं है।

क्यों नमक कम लग रहा है ना, मित्र ने हमसे पूछा। हमने गर्दन इंकार में हिलाते हुए कहा नहीं, नमक तो ठीक है। हमारे उत्तर से मित्र के चेहरे पर असहमति के भाव साफ नजर आ रहे थे।

सुनो, बेसन गट्टे में भी नमक कम है, ढंग से तो बनातीं। मित्र को मैने टोकने की कोशिश की, वो उलाहना देते हुए कहने लगा यार तुम तो अपनी भाभी का ही पक्ष लोगे, तुम्हें तो लड्डू में भी नमक ठीक लग रहा होगा। उसका यह रवैया मेरे लिए अप्रत्याशित था। हम नमक कम-ज्यादा को लेकर चर्चा में लगे हुए थे इस बीच मेरी पत्नी खाना छोड़कर कब रसोइघर में पहुंच गई यह तब पता चला जब मित्र की पत्नी रुंधे गले से अपना दर्द व्यक्त करते हुए कह रही थी इनकी तो आदत हो गई है सबके सामने मेरे काम में मीन मेख निकालने की। काम में कभी हाथ तो बंटाते नहीं, बस हुकम फर्माते रहते हैं। बात-बात में हमेशा यहीं कहते रहते हैं तुम घर में दिन भर करती क्या हो एक काम तो ढंग से होता नहीं।

इन दोनों सहेलियों के बीच चल रही इस बातचीत और माहौल से भूख तो खत्म हो चुकी थी। खाने की टेबल से उठकर ड्राइंग रूप में आकर बैठे, सौंफ-सुपारी का दौर चला और खाने की तारीफ करते हुए हमने मित्र परिवार से विदा ली। रास्ते में पत्नी की बातों से ही पता चला कि मित्र की पत्नी सुबह से लेकर शाम तक कीचन में भिड़ी रहती है। काम वाली बाई भी चार दिन से बिना बताए नहीं आ रही तो कपड़े-बर्तन का अतिरिक्त काम भी कर रही है। दाल-सब्जी में नमक कम होने को लेकर मित्र ने जिस तरह जलील किया था भोजन में वैसी कमी थी नहीं।

इस सारे प्रसंग के हम साक्षी रहे थे, तो लगने लगा कि ऐसे किस्से तो हर परिवार में घटित होते रहते हैं, पर कई परिवारों में रोचक तरीके से बात संभाल ली जाती है। एक मित्र की पत्नी चाय तो बहुत अच्छी बनाती लेकिन शकर कम रह जाती तो पति बड़े प्यार से कहते इस चाय में तुम्हारी अंगुली घुमा दो मिठास बढ़ जाएगी। पत्नी तुरंत चम्मच और शकर का डिब्बा लाकर रख देती। एक अन्य परिवार में ससुर खाना खाकर उठते और बड़े प्यार से कहते बहु तुमने तो बराबर डाला होगा लेकिन मुझे सब्जी में नमक कुछ कम लगा तो ऊपर से डाल लिया बहु के लिए मीठा सा इशारा ही काफी होता था।

गृहस्थ परिवार का जीवन भी तो चीनी कम, नमक कम के उतार-चढ़ाव वाला ही है। परिवार में गृहस्थी की गाड़ी वहीं बेहतर तरीके चलती हैं, जहां एक-दूसरे की कमी तलाशने की अपेक्षा उस कमी को सुंदर तरीके से हल करने की पहल की जाए। कमी निकालना तब अच्छा हो सकता है, जब उसे दूर करने में मदद की जाए। सुबह से शाम तक रसोइघर से लेकर घर के अन्य कामों में व्यस्त रहने वाली पत्नी का समाज में हाउस वाइफ के रूप में परिचय तो इस तरह से कराते है, मानो घरेलु महिला होना बड़ा गुनाह है। कहने को नारी समाज को आधी दुनिया कहा जाता है लेकिन इस आधी आबादी में भी उन महिलाओं को घर-परिवार समाज में कुछ अधिक सम्मान मिलता है, जो वर्किंग वूमन कहाती है। यह जितना काम, तनाव आफिस में झेलती है उतनी ही व्यस्त परिवार की जिम्मेदारी घरेलु महिलाएं उठाती है। पर आफिस जाने वाली बहन, बेटी, बहू को जितना सम्मान मिलता है उतना इन्हें नहीं मिल पाता। ऑफिस या कारोंबार में व्यस्त रहने वाले पति 'दिन भर करती क्या हो घर में' जैसे उलाहने देते वक्त यह भी नहीं सोचते कि घर को स्वर्ग समान सुंदर बनाए रखने के प्रयास मै हाउस वाइफ अपने दुख दर्द को भी खूंटी पर टांग देती है।

शायद ही किसी दिन परिवारों में हाउस वाइफ के लिए अवकाश जैसी स्थिति बन पाती हो। काम वाली बाई तो बिना बताए छुट्टी मना सकती है लेकिन घरेलु महिलाएं तो बीमारी मैं भी तब तक काम मैं भिड़ी रहती है जब तक बिस्तर ना पकड़ ले। सब्जी में नमक कम होना, चाय फीकी होना, खाना गर्म ना होना जैसे उलाहने देकर हर रोज मजाक उड़ाना बहुत आसान है,किसी दिन एक कप चाय बनाकर नाश्ता बनाकर खिलाइए हाउस वाइफ को। भोजन बनाकर खिलाना तो तारे जमी पर लाने जैसा लगेगा तब गोल रोटी तक नहीं बेल पाएंगे। अभी महिला दिवस पर नारी शक्ति के गुणगान की औपचारिकता दिखाई गई किन्तु कुछ देर के बधाई संदेश बाद में महिला दिवस का मखौल उड़ाने में बदल गए थे। मुझे लगता है समाज में नारी सम्मान का उपदेश देने से अधिक बेहतर यह होगा कि पहले हम घर-परिवार मे नारी का सम्मान करने की आदत डालें। बात बात पर मखौल उडाना, ह्रास-परिहास एक सीमा तक तो ठीक है लेकिन इसकी अति अनचाहे ही महिला वर्ग के बीच हमारा मान-सम्मान घटाने का कारण भी बन जाती है। महंगे गिफ्ट होटल में पार्टी के दिखावे से बेहतर यह हो सकता है कि सबकी पसंद का ख्याल रखने वाली फिर वो हमारी माँ, बहन, पत्नी ही क्यों न हो उसे एक कप चाय बनाकर ही पिला दें। सप्ताह में क्या एक दिन ऐसा तय नहीं कर सकते कि उस दिन घर के पुरुष किचन संभाले और खान-पान में कमी निकालने का अधिकार हाउस वाइफ को मिल जाए?

राह जिंदगी की...

प्रो. कल्पना गगडानी मुंबई

कसोटी आत्म सम्मान की

8 मार्च- अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस। यूँ तो हर दिन को यू. एन. ओ. ने एक विशिष्ट दिवस की संज्ञा दी है परंतु देखने वाली बात ये भी है कि उसका प्रयोजन उस चीज की महत्ता को समझना और समझाना रहा है। उसके बारे में जानना, जागरूकता बढ़ाना, उसे जीवन में और ब्रह्मांड में न्याय और अधिकार दिलाना, उसकी जबाबदारी का अहसास कराना आवश्यक है।

महिला दिवस भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। महिलाओं का सर्वांगीण विकास प्रगति, अधिकार और अवसर को वह इस दिन के माध्यम से जानना समझना और समझाना चाहता है।

अतः इस दिवस के उपलक्ष्य में हमें भी अपने देश में, अपने माहेश्वरी समाज में 'राह जिंदगी की' पर महिलाओं के विषय में विचार विमर्श करना चाहिये। सभी दृष्टिकोण से सोचना समझना चाहिये।

महिलाओं को सशक्त बनाने में सबसे बड़ा योगदान आज तक रहा है 'शिक्षा' का। उसकी शिक्षा उसमें ज्ञान के साथ-साथ आत्मविश्वास भरेगी। ये हमारी खुशकिस्मती है कि हमारे यहां महिला शिक्षा का प्रतिशत बहुत अच्छा है और दिन प्रतिदिन यह बढ़ता जा रहा है। इसे हमें शत-प्रतिशत पहुंचाना होगा। इस शिक्षा को व्यावसायिक शिक्षा से भी अधिक से अधिक मात्रा में जोड़ना होगा। शिक्षा प्राप्ति के पश्चात दूसरा महत्वपूर्ण जरिया है महिलाओं की आर्थिक आत्म निर्भरता। जब महिलायें आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होगी तब ही वे अपना खोया हुआ आत्म सम्मान पा सकेंगी। इस दिशा में भी प्रगति हुई है, आजकल की पढ़ी- लिखी लड़कियां आगे आर्थिक आत्मनिर्भरता की और बढ़ रही हैं। देश-विदेश में नौकरी कर रही हैं या अपना स्वतंत्र व्यवसाय भी खोल रही हैं। परिवार और सामाजिक संस्थाओं का ये दायित्व है कि इस दिशा में उन्हें आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करें। शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भर बन महिला की जबाबदारी उसके परिवार के प्रति अधिक बढ़ जाती है। परिवार को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के साथ-साथ उसे हर दिशा में समृद्ध बनाने की उसकी जिम्मेदारी भी अब और अधिक बढ़ गई है। उसका कार्य क्षेत्र बढ़ने से अपनी दोनों भूमिकाओं में सामंजस्य बैठाने का कार्य भी उसे करना होगा तभी वह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से सशक्त हो पाऐंगी।

दुनिया के बदलाव की गति अब बहुत तेज हो गई है। वैश्विकता एवं संचार क्रांति ने एक करके सब कुछ बदल दिया है और आगे भी इसी रफ्तार से बदलाव आयेगा। महिला पर मातृत्व की जो जबाबदारी है, परवरिश का जो भार है, वह जटिल होता जा रहा है। अतः महिलाओं को संपूर्णता प्राप्त करने के लिये अपने लीडरशिप गुणों का विकास और विस्तार करना होगा। आने वाले बच्चों को संभालने के लिये आज की परिस्थितियों को समझते हुए बच्चों का योग्य पालन पोषण कर उन्हें एक ओर मजबूत बनाना, तो दूसरी ओर संवेदना के स्तर पर उनका साथी बन उनकी समस्याओं को समझना और उनके सहज सरल निराकरणों को अपने दायरे में ढूंढना भी होता है। इस तेजी से बदलते परिवेश में पारिवारिक संबंधो पति-पत्नी संबंधों, पुत्री-पुत्री संबंधों में भी बहुत बदलाव आया है। समय की मांग को समझते हुए महिला को इन सब संबंधो में सेतु की भूमिका निभानी होती है। सेतु की मजबूती, पुख्तापन उसकी सबसे बड़ी खूबी होती है। महिलाओं को बुद्धि विवेक से इस बड़ी चुनौती को समझना और संभालना होगा।

महिला दिवस के प्रयोजन से यह भी समझना होगा कि महिला होने के नाते यदि हम कुछ अधिकार मांग रहे हैं तो हमारे कुछ कर्त्तव्य भी तो हमें निभाने होंगे। परम्परा से हमारी जो कुछ जवाबदारियां हैं यथा संतान उत्पत्ति, ग्रह नियोजन क्या शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता उससे मुक्ति का मार्ग है? या ये दोनों उन कार्यों में हमारे सहायक बनें। जिस दिन हमने यह समझ लिया, आने वाली लडकियों को समझा दिया, हम महिला को महत्व दिला सकेंगे।

माहेश्वरी समाज की सबसे पुरानी
और सफल वैवाहिक सेवा

www.maheshwari.org

हमारी अन्य सेवाएं
www.jain2jain.org
www.agarwal2agarwal.org

निःशुल्क
पंजीकरण
9312946867

राहु और केतु को ज्योतिष में छाया ग्रह कहा गया है। अर्थात ऐसे ग्रह जिनका खुद का कोई अस्तित्व नहीं होता, जिससे ये जिन ग्रहों के साथ होते हैं वैसा फल देते हैं। इन सिद्धांत के अनुसार तो ये अर्थहीन ही हो जाऐंगे, लेकिन ऐसा नहीं है, मात्र ये दोनों ही ऐसे ग्रह हैं, जो ऐसे आश्चर्यजनक परिणाम देने में समर्थ हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। आइये देखते हैं, कब देते हैं ये कैसा फल ?

भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति के कारक

राहु-केतु

दीपिका माहेश्वरी
हनुमानगढ़ (राज.)
96108 55577

राहु और केतु ज्योतिष शास्त्र के दो ऐसे ग्रह हैं जिनका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है, लेकिन फिर भी वे हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। कलयुग में राहु और केतु की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। जन्म कुंडली में राहु और केतु की दशा या उनका प्रभाव व्यक्ति के जीवन को एक नई दिशा दे सकता है। राहु और केतु की दशा में लोग ऐसे अनुभवों से गुजरते हैं जिनकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। वैदिक ज्योतिष में राहु केतु की तुलना सर्प से की गई है। राहु को उस सर्प का सिर और केतु को उसका पूंछ माना है। राहु और केतु छाया ग्रह हैं क्योंकि उनका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है, वे आत्मा रूप में जीवित रहते हैं। ये वो आत्माएं हैं जिनकी बहुत सी अधूरी इच्छाएं होती हैं और ये इच्छाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं, वे भौतिकवादी इच्छाएं हो सकती हैं, जो भौतिक शरीर से संबंधित हैं जैसे कि किसी विशेष व्यक्ति से प्यार करना, विशेष प्रकार का भोजन करना, एक विशेष जीवनशैली जीना, या ऐसे कोई भी इच्छा हो सकती है जिसे शारीरिक स्तर पर व्यक्ति महसूस करता है। यूं तो राहु और केतु दोनों ही राक्षसी एवं पाप प्रवृत्ति के हैं, पर फिर भी दोनों के स्वभाव और प्रभाव में काफी अंतर है। ज्योतिष में राहु और केतु को शनि देव का अनुचर माना जाता है।

कैसी है इनकी स्थिति

राहु-केतु की भूमिका एक पुलिस अधिकारी की तरह होती है। शनि के आदेश पर राहु-केतु कर्मों का फल देते हैं। सिर राहु है तो केतु धड़ है। राहु बुद्धि भ्रष्ट करता है, तो केतु दिमाग रहित ग्रह है। केतु बिना सोचे-समझे काम करने को प्रेरित करता है, जो कई बार नुकसानदायक साबित हो जाता है। राहु ज्ञानेन्द्रियों से जुड़ा है, तो केतु कर्मेन्द्रियों से। राहु के तीन नक्षत्र वायु, तत्व, राशि मिथुन, तुला और कुंभ में आते हैं। राहु सुख चाहता है और उसकी प्राप्ति के लिए अनैतिक तरीकों का भी सहारा लेता है। धनु और वृश्चिक राशि राहु की नीच राशि है, जबकि मिथुन और वृषभ राशि में राहु उच्च स्थिति में आ जाता है। वैदिक ज्योतिष में राहु को शनिवत कहा गया है और शनि के समान फल देने वाला माना गया है। इसलिए शनि की राशि मकर और कुंभ में होने पर राहु बुरा फल नहीं देता। राहु कुंडली के एकादश भाव एवं कुंभ राशि में शुभ फलदायी माना जाता है। एकादश भाव में स्थित राहु अचानक धन प्राप्ति व व्यक्ति की इच्छाओं की पूर्ति करता है।

कब होते हैं ये शुभ - अशुभ

शुभ स्थिति में राहु धन लाभ कराने के साथ विदेश यात्रा भी करा देता है, तो वहीं अशुभ स्थिति में राहु की दशा दिमाग में भ्रम और संशय की स्थिति पैदा करती है और व्यक्ति कल्पनाओं के जाल में फंस जाता है। राहु की अशुभ स्थिति में व्यक्ति को बीमारियां अचानक से घेर लेती है, वहीं शुभ स्थिति व्यक्ति को फर्श से अर्श पर भी ले जाती है। जीवन में अचानक से होने वाली हर शुभ-अशुभ घटना के पीछे राहु ग्रह का हाथ होता है। राहु विदेश का कारक ग्रह है इसलिए अगर राहु प्रभावित व्यक्ति विदेश में जाकर रहने लगे या किसी ऐसे दूर स्थान पर चला जाए जो उसके जन्म स्थान से एक अलग संस्कृति को दर्शाता है तो राहु निश्चित तौर से अपनी दशा में व्यक्ति को शुभ परिणाम देने लगता है। केतु ग्रह की बात करें तो वैदिक ज्योतिष में केतु को एक सौम्य ग्रह माना गया है। केतु आध्यात्मिकता का प्रतीक ग्रह है, केतु को योगसाधना, अध्यात्म, वैराग्य, मोक्ष, तंत्र-मन्त्र व ज्योतिष का कारक माना गया है, किसी चीज़ को बारीकी से समझना और आत्म चिंतन केतु की सबसे प्रमुख प्रवृत्ति है।

केतु बनाता है अच्छा चरित्र

केतु के तीन नक्षत्र अग्नि, तत्व, राशि मेष, सिंह और धनु में स्थित होते हैं, जो नैतिकता को दर्शाती है। इस राशि और नक्षत्र से प्रभावित केतु हमेशा नैतिक तरीके से कार्य करेगा। केतु की दशा में व्यक्ति के कार्य करने का तरीका बड़ा ही सीधा सपाट (Straightforward) होता है। ज्योतिष शास्त्रों में कहा गया है 'कुजवत केतु' अर्थात नैसर्गिक रूप से केतु मंगल के समान फल देता है। राहु के समान केतु किसी भी भाव में ग्रह के साथ बैठा हो तो उस भाव और साथी ग्रह के प्रभाव तथा शुभ-अशुभ फल में चार गुना की वृद्धि कर देता है। केतु ग्रह को अशुभ माना जाता है लेकिन यह शुभ फल भी देता है। धनु व वृश्चिक राशि केतु की उच्च राशि है, जबकि मिथुन एवं वृषभ राशि में यह नीच होता है। कुंडली के धर्म त्रिकोण भाव 1,5,9 में सदैव अच्छा फल प्रदान करता है। इसके साथ मोक्ष त्रिकोण यानि अष्टम एवं द्वादश भाव का केतु भी अच्छे फल प्रदान करता है। ऐसा केतु व्यक्ति को मुक्ति के मार्ग पर लेकर जाता है अगर केतु गुरु ग्रह के साथ स्थित हो तो राजयोग का निर्माण होता है, गुरु केतु युति कुंडली में हो तो व्यक्ति बहुत आध्यात्मिक व धार्मिक प्रवृत्ति का होता है, अगर कुंडली में केतु बली हो तो यह जातक के पैरों को मजबूत बनाता है व पैरों से संबंधित कोई रोग नहीं होता। शुभ मंगल के साथ केतु की युति जातक को साहस प्रदान करती है।

केतु का कमजोर पहलू

व्यक्ति के जिस भाव में जिस ग्रह के साथ बैठा होगा उसे ग्रह से जुड़े चीजों को प्रदान करने में बहुत सारी रूकावटें देगा। मेरे अनुभव में नवग्रहों में केतु एक मात्र ऐसा ग्रह है, जिसकी दशा में व्यक्ति एक प्रकाश, एक गुरु की खोज में लगता है, जो जीवन में उनका मार्गदर्शन कर सके। नवग्रहों में केतु ही अकेला एक ऐसा ग्रह है जो सांसारिक मोह माया से दूर ले जाकर व्यक्ति

को शांति का अनुभव कराता है। केतु चाहता है कि आप सबसे अलग होकर अपना अस्तित्व खोजें, खुद के साथ कुछ समय बिताएं, ध्यान करें, आध्यात्मिक रुचि बढ़ाएं। आध्यात्मिकता और वैराग्य के प्रतिनिधि ग्रह केतु की दशा अंतर्दशा व्यक्ति को आध्यात्मिक प्रगति के साथ-साथ सफलता के शिखर पर पहुंचाती है। आमतौर पर केतु की दशा को असाध्य रोग और समस्याओं का कारण माना जाता है, लेकिन अगर केतु की दशा में भी एक बार व्यक्ति अपने अकेलेपन का आनंद लेना शुरु कर दें तो यकीन माने केतु की दशा ही जीवन की आनंदमय दशा बन जाती है। राहु और केतु की दशा जीवन के चरम छोर को दर्शाती है।

उन्नति के लिये इनकी कृपा जरूरी

अतः इनकी दशा के अनुभवों एवं परिणामों में सकारात्मकता पाने के लिए कुछ ऐसे कार्य एवं उपाय किए जाएं तो मायावी ग्रह राहु केतु भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर पहुंचाने की सीढ़ी बन जाते हैं क्योंकि मजबूत राहु चतुराई और एकाग्रता देता है, जबकि मजबूत केतु अंर्तज्ञान शक्ति और आध्यात्मिकता विकसित करता है। व्यक्ति विशेष की एक विशेष उम्र पर राहु-केतु का प्रभाव देखने को मिलता है। राहु का प्रभाव व्यक्ति विशेष की 42 वर्ष की आयु पर दिखाई देता है, जो अचानक भाग्य का निर्माण करता है। राहु 42 से 48 वर्ष की आयु के दौरान होने वाली अचानक अच्छी या बुरी घटनाओं के लिए जिम्मेदार ग्रह है। केतु राहु से भी देरी से भाग्योदय करते हैं। केतु 49 से 50 वर्ष की उम्र में भाग्यफल देते हैं। केतु का असर भी 49वें वर्ष में ही नजर आता है केतु शिखर और ऊंचाई का प्रतीक है, इसलिए केतु के समय में किसी ऊंचे स्थान पर बने धार्मिक स्थल और मंदिर के दर्शन करें। केतु परिवर्तन का प्रतीक है, इसलिए एक ही स्थान पर बैठने के बजाय यात्रा करें। केतु आत्म-साक्षात्कार देता है, इसलिए केतु के समय में ध्यान करें। केतु ऊंचाई से संबंधित है, जो चीज आपको ऊंचाई पर ले जाती है वह केतु का प्रतिनिधित्व करती है। घर की सीढ़ियां भी केतु को दर्शाती हैं, इसलिए उन्हें हमेशा साफ रखना चाहिए।

कैसे प्राप्त करें अच्छा फल

राहु और केतु की महादशा में शुभ फल प्राप्त करने के लिए बुध और चंद्रमा को मजबूत करना चाहिए। बुध बुद्धि और विवेक का कारक है, जबकि चंद्रमा भावनाओं और मन का कारक है। इन दोनों ग्रहों को मजबूत करके राहु से मिलने वाले वहम और संशय की स्थिति से निपटा जा सकता है। राहु और केतु बुरी आत्माओं के प्रतीक हैं और इनके दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए महाकाल शिव, भैरव जी और देवी सरस्वतीजी की आराधना करनी चाहिए। अमावस्या शनिवार और पितृपक्ष राहु और केतु से जुड़ी पूजा-पाठ और दान-पुण्य के लिए विशेष रूप से प्रभावी होते हैं। राहु और केतु के नक्षत्र विशेष में किए गए दान से इनसे बनने वाले सभी दोष दूर हो जाते हैं। राहु और केतु के दुष्प्रभावों को दूर करने के लिए जरूरतमंदों को भोजन और वस्त्र दान करें, पक्षियों को सप्त धान्य खिलाए, मछलियों और काली चीटियों को भोजन दें। मां दुर्गा, हनुमान जी और गणेश जी की आराधना करें, दो रंगी कुत्ते को रोटी खिलाएं। योग, साधना, ध्यान, प्राणायाम, मंत्र साधना, ज्योतिष और गूढ़ विधाओं का अध्ययन करें। पाप ग्रह राहु-केतु के दुष्प्रभाव को जीवन में से समाप्त करने का आज के समय में सबसे उत्तम उपाय है जरूरतमंद और भूखे प्राणियों को तृप्त करना। इसके लिए प्रतिदिन पक्षियों को भोजन दें। सतनाजा पक्षियों को डालें। प्रत्येक शनिवार को साबुत उड़द दान करें। किसी अपंग अपाहिज या गरीब, जरूरतमंद व्यक्ति को अपने हाथ से भोजन और वस्त्र का दान करें। मछलियों व काली चीटियां को भोजन दें। अगर केतु ग्रह की समस्या से जूझ रहे हों तो मां दुर्गा, हनुमान जी और गणेश जी की आराधना करें। दो रंगी कुत्ते को रोटी खिलाएं। योग, साधना, ध्यान एवं प्राणायाम मंत्र साधना ज्योतिष एवं गुण विधाओं का अध्ययन व्यक्ति को केतु की दशा समय में आध्यात्मिक उन्नति एवं प्रगति के चरमशिखर पर पहुंचा देता है। राहु की 18 वर्ष और केतु के 7 वर्ष की दशा व्यक्ति को सही दिशा, श्रेष्ठ अनुभव और मार्गदर्शन प्रदान करती है।

जानकारी

पानी, तेल या दूध का कुल्ला करने के चमत्कारिक फायदे

हमारी परम्पराएँ और घरेलु ज्ञान इतना ज़बरदस्त है कि अगर हम इन पर थोड़ा भी ध्यान दें तो बिना दवा के भी स्वस्थ रह सकते हैं।

आज आपको ऐसी ही एक विधि से परिचित करवा रहें हैं जिसका नाम है कुल्ला। कुल्ला एक ऐसी विधि है जिससे आप बिना दवा के जुकाम, खांसी, श्वांस रोग, गले के रोग, मुंह के छाले, शरीर को डीटोक्सिफाय करने, गर्दन के सर्वाइकल जैसे रोगों से मुक्ति पा सकते हैं। आइये जानते हैं कुल्ला करने की सही विधि और इसके चमत्कारिक लाभ।

पानी का कुल्ला

मुंह में पानी का कुल्ला तीन मिनट तक भर कर रखें। इससे गले के रोग, जुकाम, खांसी, श्वांस रोग, गर्दन का दर्द जैसे कड़कड़ाहट से छुटकारा मिलता है। नित्य मुंह धोते समय, दिन में भी मुंह में पानी का कुल्ला भर कर रखें। इससे मुंह भी साफ़ हो जाता है।

मुंह में पानी का कुल्ला भर कर नेत्र धोएं। ऐसा दिन में तीन बार करें। जब भी पानी के पास जाएं मुंह में पानी का कुल्ला भर लें और नेत्रों पर पानी के छींटे मारें, धोएं। मुंह का पानी एक मिनट बाद निकाल कर पुनः कुल्ला भर लें। मुंह का पानी गर्म ना हो इसीलिए बार-बार कुल्ला नया भरते रहें।

भोजन करने के बाद गीले हाथ तौलिये से नहीं पोंछे। आपस में दोनों हाथों को रगड़ कर चेहरा व कानों तक मलें। इससे आरोग्य शक्ति बढती है, नेत्र ज्योति ठीक रहती हैं।

गले के रोग, सर्दी जुकाम या श्वांस रोग होने पर थोड़ा गुनगुना पानी ले कर इसमें सेंधव (सेंधा) नमक मिला कर कुल्ला करना चाहिए, इससे गले, कफ, ब्रोंकाइटिस जैसे रोगों में बहुत फायदा होता है।

तेल का कुल्ला

सुबह-सुबह बासी मुंह में सरसों या तिल का तेल भर कर पूरे 10 मिनट तक उसको चबाते रहें, ध्यान रहे ये निगलना नहीं है, ऐसा करने से मुंह और दांतों के रोग तो सभी ठीक होंगे ही, साथ में पूरी बॉडी डी टोक्सिफाय होगी। अनेक रोगों से मुक्त होने की इस विधि को तेल चूषण विधि कहा जाता है। आयुर्वेद में इसको गण्डूषकर्म कहा जाता है और पश्चिमी जगत में इसको आयल पुल्लिंग के नाम से जाना जाता है।

दूध का कुल्ला

अगर मुंह में या गले में छाले हो जाएँ और किसी भी दवा से ठीक ना हो रहें हो तो आप सुबह कच्चा दूध (अर्थात बिना उबला हुआ ताज़ा दूध) मुंह में कुछ देर तक रखें और ध्यान रहे इस दूध को आपको बाहर फेंकना नहीं है। इसको मुंह में जितना देर हो सके 10 से 15 मिनट तक रखें, कुछ देर बाद बूँद-बूँद कर के ये गले से नीचे उतरने लगेगा। इस प्रयोग को दिन में 2-4 बार कर सकते हैं। आपको मुंह, जीभ और गले के छालों में पहले ही दिन में आराम आना शुरू हो जायेगा।

पर्व ''होली'' का जिक्र होते ही हमारे मन-मस्तिष्क में अजीब प्रसन्नता व उत्साह भर उठता है, इस कल्पना के साथ कि हम अपने मित्रों को इस दिन स्नेह के रंग से सराबोर करेंगे। वाकई में यह पर्व न सिर्फ वर्तमान में दुनिया के कई देशों में मनाया जा रहा है बल्कि पौराणिक काल से यह किसी न किसी रूप में अवश्य ही मौजूद रहा है।

स्नेह के रंगों में भिगोने का पर्व

होली

सभी के उत्साह के कारण होली एक अंतराष्ट्रीय, सामाजिक व धार्मिक त्यौहार माना जाता है। यह बच्चे, बड़े, नर-नारी सभी द्वारा जातिभेद भुलाकर, द्वेषभाव भुलाकर प्रेम व भाईचारे से मनाने का पर्व है। यह मित्रता, एकता, आनंदोल्लास, सद्मिलन व सद्भावना का प्रतीक है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन सम्पूर्ण भारत वर्ष में होलिका दहन का विधान है। बस वर्तमान दौर में पानी की बचत व केमिकल के दुष्प्रभाव से बचने के कारण इसमें कुछ परिवर्तन दिखाई दे रहा है। हर कोई पानी में घुलने वाले की बजाए सूखे रंग से होली खेलना चाहते हैं। यह वक्त की मांग है। ''जल है, तो कल है।'' अतः आइये इस पर्व पर लें, जल संरक्षण की भी शपथ। वर्तमान में इस पर्व की विशेषता यह भी है कि इसका आयोजन अब देश की सरहदों से पार कई अन्य देशों में भी हो रहा है।

आम मान्यताओं में होली पर्व

ब्राह्मणों द्वारा सभी दुष्टों तथा रोगो को शांत करने का वसोर्धारा होम भी इसी दिन किया जाता है। इसलिये इसे होलिका भी कहा जाता है। एक मान्यता मे इस पर्व का सम्बंध 'काम दहन' से भी है। भगवान श्री शिवजी ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्मकर दिया था, तभी से इस त्यौहार का प्रचलन हुआ। प्रचलित मान्यताओं के अनुसार यह त्यौहार हिरण्यकश्यप की बहन होलिका और पुत्र प्रहलाद की स्मृति में भी मनाया जाता है। कहा जाता है, हिरण्यकश्यप की बहन राक्षसी होलिका वरदान के प्रभाव से नित्य अग्निस्नान किया करती थी और जलती नहीं थी। हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रहलाद विष्णुभक्त था। हिरण्यकश्यप ने उसे मारने के लिये कई उपाय किये परंतु प्रहलाद को कुछ भी नहीं हुआ। इसलिये अपने पुत्र प्रहलाद को अपनी बहन की गोद में देकर अग्निस्नान करने को कहा। जिस दिन होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर अग्निस्नान करने वाली थी, उसी दिन सभी लोगों ने अग्नि प्रज्जवलित करके अग्निदेव से प्रहलाद की रक्षा के लिये प्रार्थना की। अग्नि देवता ने प्रार्थना स्वीकार करके होलिका के अग्निस्नान के समय प्रहलाद को तो बचा लिया और होलिका उस अग्नि में भस्म हो गयी। अतः फाल्गुन पूर्णिमा को भक्त प्रहलाद की स्मृति में और असुरों के विनाश की खुशी में यह पर्व मनाया जाता है।

भविष्य पुराण में ''ठोठा उत्सव''

भविष्य पुराण में महाराज युधिष्ठर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा- भगवान, फाल्गुन पूर्णिमा को उत्सव क्यों माना जाता है?' तो उन्होंने बताया - सत्ययुग में एक दानवीर, शूरवीर-सर्वगुण संपन्न रघु नामक राजा थे।एक दिन नगर के लोग राजद्वार पर एकत्रित होकर 'त्राहि-त्राहि' पुकारने लगे। पूछने पर बताया कि 'ठोठा' नामक एक राक्षसी प्रतिदिन हमारे बालकों को कष्ट देती है और उस पर किसी मंत्र-तंत्र, औषधी आदि का प्रभाव भी नहीं पड़ता। यह सुनकर राजा ने पुरोहित महर्षि वशिष्ठ मुनि से उस राक्षसी के विषय में पूछा। तब वशिष्ठ मुनि ने बताया कि माली नामक एक दैत्य है, उसकी एक पुत्री है, जिसका नाम है ठोठा। उसने उग्र तपस्या करके शिवजी को प्रसन्न कर वरदान लिया है कि देवता, दैत्य, मनुष्य आदि मुझे न मार सकें और शस्त्र-अस्त्र से भी मेरा वध न हो। शीतकाल, उष्णकाल, वर्षाकाल में, भीतर अथवा बाहर कहीं पर भी मुझे किसी से भय न हो। इन्होंने बताया कि केवल 'अडाड' मंत्र के उच्चारण से ही वह शांत हो सकती है। इससे पीछा छुड़ाने का उपाय भी वशिष्ठ मुनि ने बताया कि फाल्गुन मास की पूर्णिमा को सभी निडर होकर नाच गा कर उत्सव मनायें और बालक लकड़ियों की बनी हुई तलवार लेकर युद्ध के लिये दौड़ें और उत्सव मनायें। सुखी लकड़ी, सुखे उपले, सुखे पत्तों आदि के अधिक से अधिक ढेर लगायें। उस ढेर में रक्षोध्न मंत्र से अग्नि लगाकर हवन करें। इस प्रकार रक्षा मंत्रों से हवन करने से उस दुष्ट राक्षसी का निवारण हो सकेगा। जब राज्य में ऐसा उत्सव मनाया गया, तो इससे उस राक्षसी का विनाश हुआ। तबसे इस लोक में ठोठा का उत्सव प्रसिद्ध हुआ।

वेदों में ''नवान्नेष्टि यज्ञ''

होली का आरम्भ ज्ञात हो पाना बड़ा ही कठिन है किंतु वेदों व पुराणों में भी उल्लेख आता है। अतः इसे वैदिक कालीन पर्व माना जा सकता है। वैदिक काल में इसे 'नवान्नेष्ठि यज्ञ' पर्व भी कहा जाता था। इस हवन में खेतों की फसल का नया अन्न यज्ञ में हवन करके प्रसाद लेने की परम्परा भी है। उस अन्न को 'होला' कहते हैं। इसी से पर्व का नाम होलिकोत्सव पड़ा। अतः वास्तव में देखा जाए तो यह एक वैदिक पर्व है या कहें एक वैदिक महायज्ञ। यही कारण है कि इस पर्व पर होली में गेहूं की बालियाँ सेके जाने का विधान आज भी है।

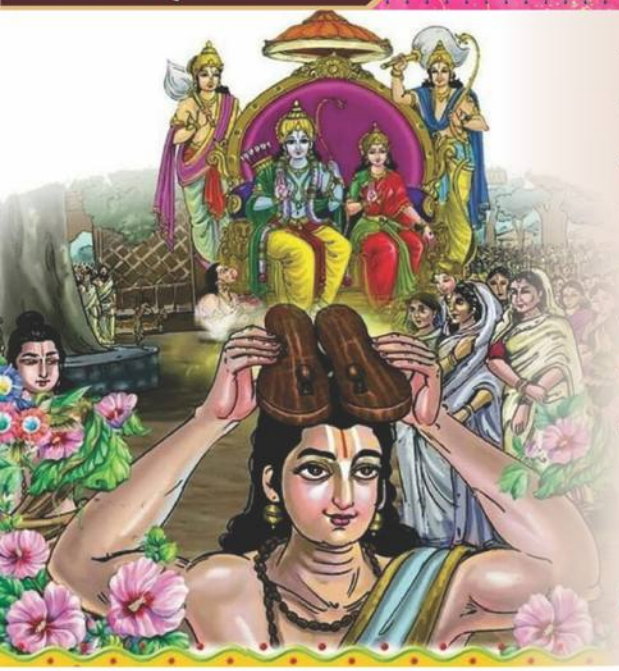

कुछ समय पूर्व जब वे घर से रवाना हुए तो उनके मन-मस्तिष्क में ऊल-जलूल कल्पनाओं एवं आशंकाओं का बवण्डर घूमने लगा था। पूरे मार्ग यही सोच रहे थे कि आज कोर्ट में बुरी गत होगी। कोर्ट के नजदीक आते-आते उनकी हालत और खराब होने लगी थी। रणजीत राक्षस की तरह अट्टहास कर उनके हौसले को पस्त करने लगा था।

हरिप्रकाश राठी
जोधपुर
94141-32483

आरोह-अवरोह

शहर के आयकर कार्यालय के बाहर एवं अंदर हंगामा मचा हुआ था।

जितने मुँह, उतनी बातें। जो सुनता, भौंचक्का रह जाता। लोगों को अपने कानों पर विश्वास नहीं होता। हो सकता है खबर गलत हो, यह भी हो सकता है उन्होंने गलत सुन ली हो अथवा कहने वाला भी तो गलत हो सकता है। वे आगे बढ़कर किसी अन्य से समाचार की पुष्टि करते।

अंततः यह समाचार सही था। कुछ लोगों ने जब यहाँ तक कह दिया कि वे खुद आँखों से देखकर आ रहे है तो अब संदेह की कोई गुंजाइश नहीं रह गयी थी।

यह कोई साधारण खबर नहीं थी। सहायक कमिश्नर पुरुषोत्तम माहेश्वरी रंगे हाथों रिश्वत लेते हुए पकड़े गए थे। क्या जनता क्या स्टाफ, सभी ने दांतों तले अंगुली दबा ली।

इस घटना के पहले पुरुषोत्तमजी के नाम का अर्थ एवं पर्याय था-'ईमानदारी'। लोग उनके नाम की कसमें खाते। गत तीस वर्ष से आयकर विभाग में बेदाग कार्य करने का रिकार्ड था। पुरुषोत्तमजी की ईमानदारी के बारे में कभी कोई अन्यथा मजाक भी कर लेता तो सुनने वाला विश्वास नहीं करता। जनता ही नहीं उनके स्टाफ वाले भी दम ठोककर कहते, ''धरती पाताल में समा सकती है, लेकिन पुरुषोत्तमजी का ईमान नहीं गिर सकता।'' सारे महकमे में उनकी ईमानदारी असंदिग्ध थी।

फिर ऐसा कैसे हो गया? बहुधा देखा जाता है कि ईमानदार अधिकारी कानून की अव्यावहारिक पंक्तियाँ बताकर काम नहीं करते अथवा कानून का आईना बताकर लोगों को डराते-धमकाते रहते हैं। लेकिन यहाँ तो बात उल्टी थी। पुरुषोत्तमजी बढ़-चढ़ कर कार्य करते। 'यथा नाम तथा गुण' के अनुरूप वे सचमुच पुरुषोत्तम थे।

बाहर खड़ी जनता एवं उनके अधीनस्थ कर्मचारियों में अब कानाफूसी होने लगी थी। उनके उच्चाधिकारी भी यह सब जानकर हैरान थे। लेकिन यह बात उतनी ही सत्य थी जितना आसमान पर उगा हुआ सूर्य।

पुरुषोत्तमजी की केबिन के बाहर एक कोने में खड़े चार आदमी जिनमें दो अधीनस्थ कर्मचारी एवं दो विभाग में आवश्यक कार्य से आये अन्य व्यक्ति थे, आपस में बतिया रहे थे।

''कमाल हो गया! पुरुषोत्तमजी ने फकत पांच हजार में ईमान बेच दिया। वे तो आँख के इशारे से लाखों कमा सकते थे। शायद खाते भी हों। सच कहा है बहुत सयाना कौआ एक दिन विष्ठा में चोंच मारता है।'' एक कर्मचारी बोला। अफसरों की तौहीन करने का अधिकार एवं अवसर कब-कब तो मिलता है।

''यकीन नहीं आता, यार! यह तो हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और वाली बात हो गई। पुरुषोत्तमजी तो डेढ़ सयाणे निकले। उन-सा चतुर कौन होगा। खाता रहा एवं ईमानदारी का ढोल भी पीटता रहा। यह तो दोगला निकला।'' दूसरे कर्मचारी ने सुर में सुर मिलाया।

''कुछ लोग ईमानदारी का मुखौटा पहने रहते हैं। छुटपुट लोगों को मना कर देते हैं, लेकिन कुछ खास लोगों से लेते रहते हैं। उन लोगों से लेते समय फिर छोटी-बड़ी रकम का भेद नहीं देखते। हो सकता है यह किसी बड़ी रिश्वत का एडवांस हो।'' दो में से एक व्यापारी बोला।

अब दूसरे व्यापारी की बारी थी, वह कौन-सा चुप रहने वाला था।

''मुझे समझ नहीं आता, मैंने खुद मेरे सीए के मार्फत उन्हें अनेक बार लाखों रुपये देने की पेशकश की लेकिन उन्होंने हर बार विनम्रता से मना कर दिया। हमें क्या पता था उनकी औकात पाँच हजार की थी, अन्यथा छोटी रकम से सेंध लगाते। हम तो वाकई कच्चे निकले नहीं तो अब तक जाने कितने काम निकलवा लेते। दुनिया ठीक कहती है खाते सभी हैं पर सबके लटके-झटके, स्टाइल अलग है। घर आई लक्ष्मी कोई छोड़ता है क्या? फिर पुरुषोत्तमजी ठहरे बनिये। वे तो पूर्ण श्रद्धा एवं आदर के साथ उन्हें ग्रहण करते हैं। बनिये को तो प्राण अथवा लक्ष्मी दोनों में से एक का चयन करना हो तो वह पहले प्राण छोड़ेगा।'' कहते-कहते दूसरे व्यापारी ने जोर से अट्टहास किया।

ऐसी ही अनेक बातें अलग-अलग झुण्डों में बँटे लोगों के बीच हो रही थी। अब तक प्रेस वाले भी कैमरामेन के साथ पहुँच चुके थे। उनके लिए भी यह हॉट खबर थी। पुरुषोत्तमजी के केबिन में एण्टीकरप्शन वाले आवश्यक कार्यवाही कर रहे थे। कुछ सिपाही भीतर एवं कुछ बाहर खड़े थे।

अभी कुछ समय पहले ही ठेकेदार रणजीतसिंह ने उन्हें भ्रष्टाचार निरोधक विभाग से ट्रेप करवाया था। रणजीत की फाइल कई दिनों से आयकर विभाग में अटकी थी। पुरुषोत्तमजी ने इस फाइल को जाँचा तो हैरान

रह गये। भारी अनियमितताएं थी। ठेकेदार वर्षों से करवंचना कर रहा था। अब तक जाने कैसे बच गया। करोड़ों बकाया बन रहा था। वह लगातार विभाग को चूना लगाये जा रहा था।

कुछ दिन पहले उसकी पुरुषोत्तमजी से बात भी हुई थी, "सर! जैसे भी हो ले-देकर निपटा दीजिए। दुनिया जैसे चल रही है, उसे वैसे ही चलने दीजिए। हम ठेकेदार हैं। आप तो हुक्म कीजिए। बस मुँह खोल दें। शराब, शबाब अथवा जो भी रकम आप उचित समझें, इशारा कर दीजिए। लेट्स मेक बिजनिस। फाइल तो हमारी आपको सेटल करनी होगी।" उस दिन रणजीत ने सारे पत्ते एक साथ डाल दिए थे।

रणजीत की बात सुनते ही पुरुषोत्तमजी आग बबूला हो गये, "शायद तुम मुझे जानते नहीं। मैं सरकार का नमक खाता हूँ। सरकारी वेतन से मेरा परिवार पलता है। अपने फ़र्ज एवं नमक के साथ मैं किसी कीमत पर गद्दारी नहीं कर सकता। नियमानुसार जो भी रकम हर्जाने के रूप में बनती है, तुम्हें जमा करवानी होगी। तुम्हें खुद इससे सुकून मिलेगा। तुम्हारी फाइल में इतनी विसंगतियां है कि मैं चाहता तो तुम्हारे विरुद्ध आपराधिक मामला भी दर्ज करवा सकता था लेकिन मेरी तुमसे कोई दुश्मनी नहीं है। लोभ एवं लालच के वशीभूत लोग ऐसे कार्य कर लेते हैं जैसे कि तुमने किये हैं, लेकिन तुम अब भी हर्जाना देकर अपनी फाइल ठीक करवा सकते हो। जरा सोचो, अगर तुम्हारे जैसे सम्पन्न एवं सामर्थ्य वाले लोग इस तरह एवं इतनी चोरी करने लगे तो साधारण करदाताओं को क्या समझायेंगे? तुम्हारे आयकर से ही सड़कें बनती है, राष्ट्र के विकास कार्य होते हैं, स्कूल एवं अस्पताल खुलते हैं। इन सुविधाओं का धनी-गरीब हर वर्ग हिस्सेदार बनता है। इसी धन से सरकार निर्धनों एवं असहायों के लिए अनेक योजनाओं को अंजाम देती है। इसी धन से राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा होती है। क्या राष्ट्र के कमजोर वर्ग एवं सुरक्षा के प्रति तुम्हारा कोई दायित्व नहीं? लोग तो अपने अर्थोपार्जन का एक हिस्सा जकात तक में दे देते हैं, तुम्हें अपनी आय से कर देने में क्या एतराज है?" कहते-कहते पुरुषोत्तमजी की आँखें लाल हो गई।

"सर! मैं यहाँ उपदेश सुनने नहीं आया हूँ। रणजीत को भीख माँगने की आदत नहीं है। मैं जो करता हूँ, दम ठोककर करता हूँ। मुझे सारे पत्ते खेलने आते हैं।" कहते-कहते रणजीत ने मानो युद्ध का बिगुल बजा दिया।

उसकी बातें सुनकर पुरुषोत्तमजी सकते में आ गये। चोरी और सीनाजोरी। बोल तो ऐसे रहा है जैसे कर चोरी उसका जन्मसिद्ध अधिकार हो। सरकारी अधिकारी तो बस घास खोद रहे हैं। इस बार उन्होंने मोर्चा संभाला, गंभीर होकर बोले, "बेहतर होगा तुम यहाँ से चले जाओ, तुम्हें घर पर नोटिस भेज दिया जायेगा।"

"सर! मैं आपको पुनः चेता रहा हूँ, फाइल तो आपको सेटल करनी होगी। ध्यान रखें, ठेकेदारों से उलझना ठीक नहीं है, हम कच्ची गोलियाँ नहीं खेलते हैं।" रणजीत ने चेतावनी के लहजे में कहा।

"तुम अपना काम करो। हमें तुम जैसों से निपटना आता है।" कहते-कहते पुरुषोत्तमजी ने मानो आग में घी डाल दिया।

घायल बघेरे की तरह रणजीत पाँव पटकते हुए तेजी से चला गया। उसके विचारों की गणित इससे भी तीव्र गति से चल रही थी।

उसी रणजीत ने आज उन्हें एक विश्वासपात्र सेवक द्वारा ट्रेप करवाया था। आज सुबह जब पुरुषोत्तमजी केबिन में आकर बैठे, रणजीत के सेवक ने उन्हें एक लिफ़ाफ़ा देते हुए कहा, "मेरे बॉस ने यह पत्र आपके लिए भेजा है।"

पुरुषोत्तमजी आज जाने किस उधेड़बुन में थे, इतना भी नहीं पूछा किसने भेजा है। ईमानदार व्यक्ति के हृदय में संशय होता भी नहीं। बहुधा हम लोगों को वैसा ही समझने की गलती कर बैठते है, जैसे हम हैं। हमें हमारे ही चश्मे से देखने की आदत पड़ जाती है। ईमानदार व्यक्ति स्वाभाविक रूप से लापरवाह हो जाते हैं।

उन्होंने पत्र खोलकर अंदर से जो कुछ निकाला तो हक्का-बक्का रह गये। उनके हाथ में एक-एक हजार के पांच नोट थे। वे कुछ कहते तब तक भ्रष्टाचार निरोधक दस्ता भीतर घुस चुका था। वे रंगे हाथों पकड़े गये।

पुरुषोत्तमजी के ऊपर की सांस ऊपर एवं नीचे की नीचे रह गई। चेहरा उतर गया। घटना इतनी अप्रत्याशित थी कि उनकी बोलती बंद हो गई। शब्द गले में अटक गये। वे कुर्सी से चिपक गये। उनका बदरंग चेहरा उनकी बर्बादी बयां करने लगा था। जैसे राहू चन्द्रमा का अमृत पीकर ही शांत होता है, दुष्ट ठेकेदार पुरुषोत्तमजी की छाती में कील गाड़कर ही तुष्ट हुआ।

दुनियाँ में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने नाखून के लिए दूसरों का गला काट लेते हैं।

आज बाज ने एक निर्दोष कबूतर को झपट लिया था।

अब तक लोग इकट्ठा होने लगे थे। सभी दूर खड़े पुरुषोत्तमजी को आश्चर्य से देख रहे थे। उनकी दशा ऐसी थी जैसे किसी व्यापारी ने अपना मूलधन गंवा दिया हो। कुम्हलाये चेहरे को देखकर लगता था जैसे अपमान के अथाह गड्ढे में गिर पड़े हों।

गैरतमंद आदमी की गैरत चली जाये तो फिर क्या शेष रह जाता है?

दूसरे दिन प्रेस ने इस खबर को मुखपृष्ठ पर छापा। जीवन भर सर ऊँचा करके जीने वाले पुरुषोत्तमजी के चेहरे पर कालिख पुत गई। वर्षों की कमाई इज्जत क्षण भर में धूल में मिल गई। जमानत मिलने से फिलहाल छूट तो गये, लेकिन घर से निकलना दूभर हो गया। वे जनता और स्टाफ की नजरों में ही नहीं, पत्नी, बच्चों एवं यहाँ तक कि खुद की नजरों में गिर गये। मन बेचैन रहने लगा, रातों की नींद उड़ गई।

जीवन की इतनी घोर प्रवंचना किसे शांत रहने देगी?

इस घटना को एक माह होने को आया लेकिन पुरुषोत्तमजी का मन अशांत ही रहा। घर में मानो विपत्ति एवं विषाद ने डेरा डाल दिया। रातें कालरात्रि की तरह डरावनी हो गई। उनका वजन गिर गया, खून सूखने लगा एवं चेहरे की कांति फीकी पड़ गई।

दुःख के समुद्र में डूबा एवं दुर्देव का मारा हुआ इंसान कहे भी तो किसे? उसकी कुढ़न, घुटन एवं क्लांत मन आश्रय के लिए पत्नी की ओर ही तकता है। आज रात पत्नी को कह रहे थे, "निकिता! मैं तो कहीं का नहीं रहा। क्या मैं यह कालिख मिटा पाऊँगा? मैंने ऐसे कौन से पाप किए जिसकी ईश्वर ने यह सजा दी? क्या ईश्वर मनुष्य की नेकियों, सत्कर्मों एवं ईमानदारी का यही सिला देता है? मैंने रिश्वत ली होती तो मैं स्वयं को मना लेता लेकिन यह सजा तो मैं रिश्वत न लेने की भुगत रहा हूँ। जीवन में ऐसे कठोर दिन आएंगे, ऐसी तो कल्पना भी न की थी। क्या मनुष्य को वह पाप भी भुगतने पड़ जाते हैं जो उसने कभी नहीं किए? यह सब इन्हीं आँखों के आगे हुआ पर अभागे शरीर ने प्राण नहीं छोड़े। काश! मैं पेशी होने से पहले ही मर जाऊँ।" कहते-कहते पुरुषोत्तमजी बच्चे की तरह सुबक पड़े। निकिता ने उन्हें संभाला। चेहरे से आँसू पोंछते हुए बोली, "विश्वास रखो, उसके घर देर है

अंधेर नहीं। दुर्भाग्य से हमारे परिवार पर यह वज्र आन पड़ा है। आप हौसला रखें, सब ठीक हो जायेगा।''

''अब क्या ठीक हो जायेगा निकिता! मैंने इतना भी नहीं सोचा कि इस तरह लिफाफा हाथ में लेना प्राणघाती बन सकता है। अक्ल घास चरने चली गई। इतना तो पूछ सकता था तुम्हारे बॉस कौन हैं? बुद्धि विपरीत हो गई।'' कहते-कहते वे विह्वल हो उठे, हृदय में हाहाकार मच गया, दिल से प्रभु को पुकारने लगे, ''प्रभु! मुझ पर रहम कर! मैं सब कुछ सह सकता हूँ पर इस कलंक का बोझ मुझसे नहीं उठ सकेगा। यह तेरा कैसा इंसाफ है?

भाग (2)

भरत जब सारथी के साथ अयोध्या पहुँचे तो सारे नगर में भयानक चुप्पी पसरी थी। अनुज, शत्रुघ्न उनके समीप ही बैठे थे। राजमार्ग पर सर्वत्र श्मशान की तरह सन्नाटे साँय-साँय कर रहे थे। घोड़ों की टापों अथवा कभी-कभी बोलने वाले कौओं की आवाज को छोड़कर सर्वत्र शांति थी। नगरजन ही नहीं पशु, पक्षी, वन, बाग तक शोभाहीन लग रहे थे।

उनका रथ तेज गति से राजपथ पर चल रहा था। नगरजन उन्हें देखकर सिर नीचे कर लेते। ऐसा लग रहा था मानो नगर पर विद्युतपात हुआ हो। सभी के चेहरों की दशा ऐसी थी जैसे कोई दुर्दांत राक्षस सारा धन छीन ले गया हो।

भरत का मन असंख्य आशंकाओं से भर उठा। उन्होंने तुरंत आंकलन कर लिया कि कोई भारी अनर्थकारी घटना घट चुकी है।

महल पहुँचकर उन्होंने अपने विश्वासपात्र सेवक को बुलाया। उसने बताया कि माता कैकेयी के दो वर माँगने की वजह से यह अनर्थ हुआ है तो वे सहम गये। उन्हें जब पता चला कि देवतुल्य अग्रज राम, अनुज लक्ष्मण एवं भाभी जानकी के साथ वनगमन कर चुके हैं तथा पिता दशरथ का इसी दुःख में निधन हो गया है तो उनके कानों में शीशा पिघल गया। चेहरे की दशा ऐसी हो गई जैसे कमलों के वन को पाला मार गया हो।

भरत स्वाभाविक रूप से सच्चे एवं सरलमना व्यक्ति थे। उन्होंने स्वप्न में भी न सोचा था कि उनके कारण ऐसा अनर्थ होगा। उनके सारे अंग शिथिल हो गये, हृदय भयानक संताप से जलने लगा।

प्रतिष्ठित एवं सच्चे व्यक्ति के लिए कलंक मृत्युतुल्य होता है।

अब उन्हें समझ में आया कि नगरजन उन्हें देखकर क्यूँ मुँह फेर रहे थे। इससे भी अधिक चिंता उन्हें इस बात की थी कि गुरुजन, प्रियजन, माता कौशल्या एवं स्वयं अग्रज राम ने यह अवश्य सोचा होगा कि यह दुष्ट भरत की कूटनीति है। उनका सोचना उचित भी है। मैं कैसे इन सबको सिद्ध करूँगा कि मैं निर्दोष हूँ, निरपराध हूँ? क्या मैं इन सबको मुँह दिखा सकूँगा? न जाने कौन-से पाप किये थे जिनका ऐसा कठोर फल मिला। मैं अकारण कुलघाती, अपयश का भागी एवं प्रियजनों का द्रोही हो गया। तीनों लोकों में आज मुझसे अधिक अभागा कौन है? हे ईश्वर! मैं किस-किस को जाकर समझाऊँगा, मैं कितना हतभाग्य हूँ! उन्हें लगा जैसे अपमान के विषैले बाण चहुँ ओर से उन पर आघात कर रहे हैं। ओह, मेरी यह दशा मेरी ही माँ कैकेयी के द्वारा हुई। माँ तो सुख की गंगोत्री होती है, पुत्र-यश में वृद्धि करती है, लेकिन यहाँ तो सब उल्टा हो गया।

वे माँ कैकेयी के पास आये तब उनका चेहरा लाल एवं आँखें अंगारे बरसा रही थी। उसे देखते ही भभक पड़े, ''माँ तुमने यह क्या कर दिया? पापिनी! तुमने सभी तरह से कुल का नाश कर डाला। माँ होकर भी मुझे अपयश का पात्र बना दिया। इससे तो अच्छा होता पैदा होते ही मुझे मार डालती। तुम्हारे हृदय में ऐसा बुरा निश्चय आया कैसे? वचन मांगते हुए तुम्हारी जीभ गल क्यों नहीं गई? राजा ने तुम्हारा विश्वास कैसे कर लिया? तुमने अपने ही पुत्र को नगरजनों, प्रियजनों एवं राम का विरोधी घोषित कर दिया। राम तो जनता के प्राण हैं। क्या इतना जनविद्रोह मैं सहन कर सकूँगा? क्या तुम्हारा पुत्र यह कलंक धो सकेगा?'' कहते-कहते क्रोध से उनके सारे अंग जल उठे।

इसके पश्चात् वे सीधे माता कौशल्या के पास आये। चरण छूकर उनके समीप ऐसे खड़े हो गये जैसे ब्रह्महत्या का अपराधी खड़ा हो। क्या कौशल्या उन्हें क्षमा करेंगी? ऐसी कौन-सी माँ है जो अपने प्राण प्रिय पुत्र के वनगमन एवं नवोढ़ा पुत्रवधू के बिछोह एवं कष्टों का कारण बनने वाले दुष्ट को क्षमा कर दें। वे बिलखकर कौशल्या के चरणों में गिर पड़े, ''माँ! मैं निर्दोष हूँ। तुम्हें कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मुझे इस योजना का किंचित भान नहीं था। बिना कारण मेरे मत्थे चढ़े इस पाप का मैं क्या प्रायश्चित करूँ? मैंने नीति शास्त्र में पढ़ा है कि माता, पिता एवं पुत्र के हत्यारे कठोर पाप भाजक होते हैं। मैंने यह भी सुना है कि नगर जलाने वाले, स्त्री एवं बालक की हत्या करने वालों के पाप सर चढ़कर बोलता है। मैं यह भी जानता हूँ कि विद्वद्जनों, मित्रों एवं निर्धनों का उपहास करने वाला दुर्दांत पाप का भागी होता है। अधर्म पर चलने वाले, चुगलखोर, कपटी, कुटिल, कलहप्रिय, लोभी, क्रोधी, अभिमानी एवं धर्मशास्त्रों की निंदा करने वालों को भी उनका पाप नहीं छोड़ता। वह परछाई की तरह उनका पीछा करता है। इसके अतिरिक्त भी ऐसे अनेक पाप हैं जो मनुष्य मन, वचन, कर्म से करता है एवं जिनका दुष्परिणाम वह समय-समय पर भोगता है। हे माँ, मुझे यह सारे पाप एक साथ लग जाएँ अगर इस अनर्थ में मेरी जरा भी सम्मति हो।''

विह्वल कौशल्या ने उठाकर उन्हें गले से लगा लिया, अंक में भरकर बोली, ''चन्द्रमा अमृत की बजाय विष बरसा सकता है, असंभव संभव हो सकता है, मगर तुम राम के प्रतिकूल नहीं हो सकते।''

कौशल्या के शब्दों ने उनके घायल मन पर मरहम लगाया। उनसे विदा लेकर वे सीधे गुरु वशिष्ठ के पास आए। उनकी आँखों में आँसू उमड़ रहे थे, चेहरे का रंग उड़ चुका था। गुरु के चरणों में प्रणाम कर बोले, ''गुरुदेव मेरे भाग्य का उत्कर्ष तो देखो कि मैंने सूर्यवंश में जन्म लिया, ऐसा वंश जिनकी पीढ़ियों का गुणगान सारा जगत करता है। दशरथ जैसे प्रतापी राजा मेरे पिता हुए, राम-लक्ष्मण जैसे देवतुल्य भ्राताओं से ईश्वर ने मुझे नवाजा फिर यह विडंबना कैसे हो गई? कैकेयी मेरी माँ क्यों हो गई? उनकी दशा देखकर वशिष्ठ ने उन्हें समझाया, ''भरत! भावी प्रबल है। मनुष्य का अधिकार कर्ममात्र में है। उसकी स्वतंत्रता, स्वायत्तता एवं चयन कर्म करने तक ही है। फल तो मनुष्य को प्रारब्ध के अनुसार मिलते हैं, प्रारब्ध जिसे कोई और लिखता है, जो हमारे जन्म-जन्मांतरों के पाप-पुण्यों के आधार पर बनता है। मनुष्य यहाँ जन्म-जन्मान्तर के पाप भोगता है। हानि, लाभ, जीवन, मृत्यु, यश, अपयश सभी विधाता के हाथ हैं, मनुष्य का इन पर कोई वश नहीं। भाग्य के इन आरोह-अवरोह को कौन समझ सकता है?'' यह समझाते हुए उन्होंने भरत को पिता का अंतिम संस्कार करने का निर्देश दिया।

पिता का दाह संस्कार कर वे नगरजनों, गुरुजनों एवं प्रियजनों के साथ राम के पास आए। कदाचित राम के क्षमा करने एवं पुनः अयोध्या चलने से उनका कलंक मिट जाए

लेकिन राम ने उन्हें यही कहा, ''हमारे पिता ने वचन पालन करने के लिए प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। क्या अब हम उनके वचन तोड़कर उन्हें छोटा करें? प्रजा राजा की अनुगामिनी होती है, अगर राजाओं के ही वचन टूटने लग गये तो आम आदमी के लिए तो एक दूसरे को वचन देने का कोई अभिप्राय ही नहीं रह जायेगा। तुम व्यर्थ ही इतना शोक कर रहे हो। राम भरत पर अविश्वास कर ही नहीं सकता। भरत नाम है सच्चाई, सरलता एवं ईमानदारी का। तीनों लोकों में तुम-सा बड़भागी पुण्यात्मा नहीं मिल सकता। निःसंदेह आने वाली पीढ़ियाँ तुम्हारी सच्चाई एवं ईमानदारी की दुहाई देंगी। मैं शिव को साक्षी रखकर कहता हूँ कि यह पृथ्वी तुम जैसे सत्यनिष्ठ एवं ईमानदार लोगों के कारण ही अपनी धुरी पर ठहरी है। तुम्हारे जैसे पुण्यात्मा पृथ्वी का शृंगार हैं।''

प्रभु श्री राम के स्नेह सरोवर में डुबोये अमृत वचन सुनकर भरत का क्लांत मन शांत हुआ। सचमुच इस जगत में ऐसा कौन है जो जीवन के किसी मोड़ पर अकारण अपयश का पात्र नहीं बना, लेकिन इंसान का मन अगर निर्मल है, प्रयासों में ईमानदारी है तो उसका अपयश कितने दिन ठहर सकता है? कुहरा चन्द्रमा को कब तक ढक सकता है?

प्रभु श्री राम की पादुकाओं को सिर पर रखकर भरत अयोध्या लौट आए।

भाग (3)

अदालत खचाखच भरी थी। इससे भी अधिक भीड़ अदालत के बाहर थी। पुरुषोत्तमजी जानते थे कि भ्रष्टाचार निरोधक विभाग वाले हर संभव उन्हें अपराधी सिद्ध करने का प्रयास करेंगे। सरकारी वकील प्रश्नों के ढेर लगा देंगे। मेरी बेगुनाही का मैं क्या प्रमाण दूँगा?

कुछ समय पूर्व जब वे घर से रवाना हुए तो उनके मन-मस्तिष्क में ऊल-जलूल कल्पनाओं एवं आशंकाओं का बवण्डर घूमने लगा था। पूरे मार्ग यही सोच रहे थे कि आज कोर्ट में बुरी गत होगी। कोर्ट के नजदीक आते-आते उनकी हालत और खराब होने लगी थी। रणजीत राक्षस की तरह अट्टहास कर उनके हौसले को पस्त करने लगा था।

पुच्छल तारा ज्यों-ज्यों बढ़ता है जगत में विनाश की आशंका बढ़ जाती है। उनकी कल्पनाओं का पुच्छल तारा इसी प्रकार उनके हताश मन के आकाश पर फैलने लगा था। बार-बार स्वयं की लापरवाही एवं विधाता की करनी को कोस रहे थे। प्रभु! यह तुमने कैसा विपत्ति का बीज बो दिया। उनके पैर डगमगा रहे थे। दशा ऐसी थी जैसे पिंजरे से छूटा हुआ कबूतर बिल्ली के सामने आन पड़ा हो।

वे अदालत नहीं साक्षात यम की दाढ़ में जा रहे थे। उनकी आशाओं के सारे दीप बुझ चुके थे। मात्र एक अंतरज्योति ही उनके अंधेरे कोने में उन्हें साहस दे रही थी – यह गुनाह मैंने नहीं किया है।

नियत समय पर अदालत प्रारंभ हुई। सबकी नजरें रह-रहकर पुरुषोत्तमजी पर टिक जाती थी। प्रभुनाम का अवलंब लिए पुरुषोत्तमजी चुपचाप बैठे थे। त्वचा जल रही थी, शरीर कांप रहा था। एक-एक क्षण कल्प के समान बीत रहा था।

जिरह प्रारंभ हुई। सरकारी वकील ने अपने तर्क रखे, भ्रष्टाचार विभाग ने अपनी बात कही। सारे साक्ष्य पेश किए गए। हर साक्ष्य दमदार था। पुरुषोत्तमजी को एक-एक साक्ष्य उनकी अरथी के सामान की तरह लग रहा था। उनके वकील ने भी उनका पक्ष रखा लेकिन उसके तर्क एवं पलड़ा कमजोर दिखने लगा था। कुल मिलाकर केस का दारोमदार रणजीत एवं उसके सेवक की गवाही पर टिका था।

रणजीत जब गवाह के कटघरे में आया तो पुरुषोत्तमजी उसे ऐसे देख रहे थे जैसे फाँसी के तख्ते पर खड़ा अपराधी जल्लाद की ओर देखता है।

रणजीत ने बोलना प्रारंभ किया तो उसकी बात सुनकर सभी हैरान रह गये। भीड़ चित्रलिखे से उसको देखती रह गई। वह कह रहा था, ''जज साहब! मनुष्य क्या सोचता है एवं क्या हो जाता है। कभी-कभी परिस्थितियाँ मनुष्य के सारे अहंकार को क्षणमात्र में ध्वस्त कर देती है। मैंने भी यही सोचा था कि मेरी गवाही के बाद पुरुषोत्तमजी का जेल जाना तय है। उनकी सारी हेकड़ी एवं ईमानदारी पस्त हो जाएगी। लेकिन मेरा सोच भ्रामक सिद्ध हुआ। कोई है जो इस संसार को चलाता है। वस्तुतः इस घटना के बाद मैं एक दिन भी शांति से नहीं सो पाया। उनका खून मेरी आत्मा पर चढ़ गया। दिन-रात मेरी आत्मा मुझसे प्रश्न करने लगी, नराधम! क्या एक ईमानदार आदमी को झूठी सजा दिलवाकर तुम चैन से सो सकोगे? इतना ही नहीं इस घटना के बाद मेरे एक मात्र पुत्र को मस्तिष्क ज्वर हो गया। अभी वह अस्पताल में अंतिम श्वासें गिन रहा है। मैं सीधे अस्पताल से आ रहा हूँ। मैं वहाँ से चला तब मेरी पत्नी बिलख कर कह रही थी, आज कोर्ट में आप झूठ नहीं बोलेंगे।

कोर्ट में निस्तब्धता छा चुकी थी। रणजीत कहे जा रहा था, ''मुझ पर आसमान गिर जाए, पाताल के गर्त में जाना पड़ जाए अथवा सारी उम्र जेल में सड़ूँ पर सच्चाई यही है कि मैंने पुरुषोत्तमजी को झूठा फँसाया है। मेरे काम के लिए मना करने एवं पेनेल्टी जमा करने के लिए बाध्य करने के पश्चात् मेरा मन प्रतिशोध से भर उठा। मैंने उन्हें अपने सेवक के मार्फत फँसा तो दिया लेकिन यह भूल गया कि एक कचहरी आसमान में भी है, जहाँ से इंसाफ खुदा के नूर के साथ उतरता है, जहाँ हर व्यक्ति को उसके कर्मों का सिला मिलता है। देर से ही सही, लेकिन वहाँ से न्याय मिलता अवश्य है। वह रहीम है, शरणागत वत्सल है लेकिन साथ ही एक कठोर न्यायाधीश भी। ईमान वालों पर उसकी रहमत बरसती है तो बेईमानों पर उसका अज़ाब। यह आकाश ईमान के अदृश्य खंभों पर ही खड़ा है। अब मेरी आँखों से धुंध छँट गई है। मैं डंके की चोट पर कहता हूँ कि पुरुषोत्तमजी जैसे लोग समाज के नगीने हैं, राष्ट्र के गौरव हैं। ईमान के ऐसे ही दीये मनुष्यता को आलोकित करते हैं।'' कहते-कहते रणजीत कटघरे में ही बिलख पड़ा। उसका चेहरा प्रायश्चित के आँसुओं से नहा गया। रणजीत के सेवक ने कटघरे में आकर उसके तथ्यों की पुष्टि की।

अदालत में सभी मंत्रमुग्ध थे। पुरुषोत्तमजी की दशा ऐसी थी मानो मुर्दे को प्राण मिल गए हों।

विद्वान् न्यायाधीश ने न सिर्फ पुरुषोत्तमजी के पक्ष में निर्णय दिया, विभाग से उन्हें पदोन्नत करने एवं सरकार से पुरस्कृत करने की भी अनुशंसा की। सुख का सूर्य अब दुख के बादलों को फाड़कर आसमान की छाती पर चमक रहा था।

अदालत से बाहर आते ही लोगों ने उन्हें फूलमालाओं से लाद दिया। विभाग के कर्मचारियों ने उन्हें कंधे पर बिठा लिया।

आज एक बार फिर सत्य की जीत हुई।

आज फिर कोई प्रभुकृपा की पाँवरिया मस्तक पर रखकर अपने घर लौट रहा था। आज फिर किसी की आँखों में आँसू एवं हृदय में ईमान का समुद्र छलछला रहा था- ठीक वैसे ही जैसे कभी भरत अयोध्या लौटे थे – अपने अक्षुण्ण यश के साथ।

आज नारी सशक्तिकरणकाल में भी भले ही महिलाएं गृहलक्ष्मी/गृहस्वामिनी/होम मिनिस्टर कहलायें पर फिर भी गृह के अहम फैसलों में उनकी सहमति अथवा राय मायने नहीं रखती। आज भी अधिकतर घरों में जब कोई विशेष चर्चा हो अथवा कोई विशेष कार्य पर निर्णय लिया जाना हो तो महिलाओं से उनकी राय नहीं पूछी जाती और कभी-कभी तो उन्हें उन विशेष निर्णयों के बारे में बताया ही नहीं जाता। सिर्फ घर के पुरूष वर्ग ही उन विशेष निर्णयों में भागीदार होते हैं। आज भी पढ़ी-लिखी युवतियों को पुरुष वर्ग की अपेक्षाकृत कम ही आंका जाता है। होम मिनिस्टर यानि गृहस्वामिनी का सम्मान सिर्फ नाम के लिए ही दिया जाना कितना उचित है? अगर गृहलक्ष्मी का नाम मिला है तो स्त्रीवर्ग उस सम्मान की भी अधिकारी होनी चाहिए। उसके विचार घर के फैसलों में क्या अहम नहीं होने चाहिये? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

गृहस्वामिनी से सलाह लेना कितना उचित-अनुचित?

गृहस्वामिनी की सलाह में छिपा परिवार का भला

गृहस्वामिनी का यह अर्थ कतई नहीं है कि वो सिर्फ घर-परिवार का ध्यान रखने के लिए है बल्कि पूरे परिवार में गृहस्वामिनी ही वह कड़ी होती है, जिसके कारण परिवार का हर सदस्य एक-दूसरे से जुड़ा रहता है। घर-परिवार का छोटा हो या बड़ा निर्णय गृहस्वामिनी की भागीदारी उतनी ही ज़रूरी है जितनी अन्य पारिवारिक सदस्यों की। अनेक परिवारों में तो गृहलक्ष्मी से सलाह न लेकर परिवार की ब्याहता बहन-बेटियों से सलाह मशविरा लिया जाता है, जो सर्वथा अनुचित है। जो स्त्री अपने परिवार को प्राथमिकता देते हुए परिवार के लिए पूर्णरूप से समर्पित होती है, उसके ही फैसले और निर्णय शत-प्रतिशत परिवार के हित में होंगे। यही नहीं गृहस्वामिनी के निर्णय अन्य सदस्यों की तुलना में अधिक व्यवहारिक होंगे क्योंकि परिवार में वही एकमात्र ऐसी सदस्य होती है, जो हर एक सदस्य से सीधे तौर पर जुड़ी होती है। उसकी परिवार के हर सदस्य से किसी ना किसी बहाने से पारस्परिक बातचीत रोजाना होती ही है। जो स्त्री विवाह के पश्चात अपने ससुराल के लिए अपना पीहर परिवार, अपना नाम, पहचान, कॅरियर को दूसरी प्राथमिकता देने लगती है उसके निर्णय किसी भी रूप में परिवार का अहित नहीं करेंगे। इसलिए निश्चिंत होकर गृहस्वामिनी को भी ससम्मान पारिवारिक निर्णयों में भागीदार बनाना चाहिए। जिस परिवार में स्त्री को यथोचित मान-सम्मान-प्यार मिलता है, देवी-देवता भी वहीं वास करते हैं।

❐ **सुमिता मूंधड़ा,** मालेगांव

नारी परिवार की धुरी

नारी सिर्फ परिवार का एक हिस्सा नहीं वरन परिवार की धुरी है, जिसके बिना तो सुव्यवस्थित घर की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वो घर को सुचारू रूप से चलाते हुए अपनी कार्यकुशलता से आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हुए सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है। अगर सच कहा जाए तो वह घर परिवार के लिए एक चलता-फिरता बैंक भी बन जाती है। कभी भी कोई बड़ी परेशानी आ जाए तो भले ही वह अभावों में जी रही हो, लेकिन छुपा कर जमा किये रुपयों से चुटकियों में समाधान निकाल लेती है। लेकिन फिर भी जब बात घर की जायदाद या कोई भी अहम फैसलों पर निर्णय का आती है, तो उसकी राय या उपस्थिति दोनों ही जरूरी नहीं समझी जाती। उसे केवल खुश करने के लिए गृहस्वामिनी का झूठा दर्जा दे दिया जाता है। इसमें गलती सिर्फ पुरुष वर्ग की नहीं होती, घर की बड़ी नारियों की भी है जिन्होंने पुरुष वर्ग को छूट दे रखी है कि लुगाई से पूछने व बताने की जरूरत नहीं। मतलब नारी ही नारी की दुश्मन बनी हुई है। मेरे विचार में अगर घर के बड़े बुजुर्ग अपने बेटे और बहू में फर्क न करते हुए, घर के बड़े अहम फैसलों पर अपने बेटे के साथ बहू को भी समान दर्जा देते हुए उससे परामर्श करके उनकी सहमति व स्वीकृति लेना जरूरी समझें तो घर सुचारू रूप से चलता है और आपसी प्रेम भी प्रगाढ़ होता है।

❐ **साधना-तनसुख राय राठी,** गुवाहाटी (असम)

निर्णय क्षमता पर निर्भर

गृहस्वामिनी से सलाह लेना उचित-अनुचित इसका निर्णय उसकी क्षमता उम्र, शिक्षा या पद पर निर्भर नहीं है। उसके लिए अनुभव, संबंधित लोगों का स्वभाव तथा परिस्थिति की पहचान जरूरी है। एक ही निर्णय सब जगह पर ठीक नहीं हो सकता। जब नई बहू आती है तो परिचर्चा में घर के सभी लोगों के साथ उसे भी शरीक करना चाहिए। वह उच्च शिक्षित हो या ना हो, लेकिन इससे उसे सबके स्वभाव की पहचान होगी। घर की स्थिति तथा आवश्यकता क्या है इनका भी परिचय होगा। इससे वह आगे योग्य निर्णय ले सकेंगी। आजकल तो लड़कियां शादी के बाद भी मायके विशेषतः मां के विचारों के प्रभाव में होती हैं। दोनों जगह की परिस्थिति, जरूरतें, प्राथमिकताएं अलग अलग होती हैं। उसे सबके साथ घुल मिल जाने के लिए समय लगता है और उसकी इच्छा भी जरूरी है। इन बातों के लिए समय देना चाहिए। स्त्रियां अनुभव से ज्यादा सिखती हैं, इसलिए उनकी राय लेना योग्य है। निर्णय भले ही सर्वसम्मति से लें, पर राय लेने से उसका भी आत्मविश्वास बढ़ेगा। उसका निर्णय परिवार के निर्णय से अलग रहा तो भी विचारणीय हो सकता है और अनुकरणीय भी हो सकता है। आजकल स्त्रियाँ बाहर भी काम करती हैं। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर और अनुभव से समृद्ध होती है। इसलिए इस बात का घर में उपयोग कर लेना योग्य है। निर्णय प्रक्रिया में सहभागी होने से आपदा के समय वह निर्णय लेने के काबिल रहेगी और आत्मनिर्भर बनेगी।

❐ **कमल काबरा,** बुलढाणा (महाराष्ट्र)

गृह स्वामिनी की सलाह उचित

आज हम उस दौर से गुजर रहे हैं जब लड़कियाँ - लड़कों से ज्यादा पढ़-लिख रही हैं और हर क्षेत्र में पुरुषों से दो कदम आगे ही चल रही हैं। ऐसे समय में हम यह मान लें कि गृह स्वामिनी सिर्फ घर के अंदर ही बंद होकर सिर्फ बच्चों और किचन तक ही सीमित रहे तो यह उन पढ़ी-लिखी लड़कियों पर अन्याय होगा। आज कार्य का कोई भी क्षेत्र हो बच्चियों ने अपने बुद्धि और मेहनत से हर क्षेत्र में देश और परिवार का झंडा ऊँचा किया हैं। हर क्षेत्र की बारीकियों को बच्चियां बखूबी समझ रही हैं और उस पर अपने कौशल्य से समाधान निकाल भी रही हैं। जैसे उदाहरण के तौर पर जो क्षेत्र सिर्फ पुरुषों के नाम से जाने जाते थे वहां पर भी अभी देश और दुनिया की लड़कियों ने अपना सिक्का जमा दिया है। आज विज्ञान हो, क्रिकेट हो, चाहे किसी बड़ी कंपनी की कमान अपने हाथ मे लेना हो, चाहे गाड़ी चलाना हो या हो इंजीनियर या चार्टेड अकाउंटेंट की स्पर्धा वाली परीक्षा या खेल प्रतियोगिता हर क्षेत्र में आज लड़कियाँ जब लड़कों से कही कम नहीं है, तो फिर कैसे हम हमारी गृह स्वामिनी की सलाह को अनदेखी कर सकते हैं। और अगर करते है तो यह उन गृह स्वामिनियों से ज्यादा हमारी कमजोरी साबित होंगी। आज हर घर में जो भी छोटे-मोटे निर्णय या फैसले लिए जाते है उनमें हर स्त्री वर्ग का उतना ही सहभाग होता है जितना घर के मुखिया या घर के पुरुषों का और तभी यह संसार रूपी गाड़ी सरपट दौड़ती भी है और अच्छे निर्णय सब की सम्मति से लेने से परिवार का नाम भी रोशन होता है। आज कल वैसे तो माहौल सभी घरों में लगभग गृह स्वामिनी की सलाह या राय से चलने लगा है और यह उचित भी है।

❐ **सपना श्यामसुंदर सारडा,** सुरेंद्रनगर गुजरात

हर मसले पर सलाह उचित

नारी सब पर भारी यह मात्र एक जुमला भर नहीं है बल्कि वर्तमान परिदृश्य में एक सच्चाई के रूप में सामने आई वास्तविकता है। चूंकि आज की नारी पुरुष वर्ग से किसी भी रूप में, किसी भी क्षेत्र में कमतर नहीं है, ज्यादातर केसेज में पुरुषों के समकक्ष बल्कि कई जगहों पर तो पुरुषों से भी आगे अपना वर्चस्व रखती है। नारी तु नारायणी, यह महावाक्य तो सदियों से चला आ रहा है, जो यह दर्शाता है कि प्राचीन काल में भी संभ्रांतजनों में तो नारी का अपना अस्तित्व किसी से भी कम नहीं था। आज जबकि भारत जैसे विश्व के सबसे बड़े राष्ट्र, जो न केवल जनसंख्या के लिहाज से सबसे बड़ा है बल्कि हर क्षेत्र में गुरुत्तर होता जा रहा है, उसके समूचे आर्थिक हिसाब किताब रखने की जिम्मदारी एक नारी (वित्तमंत्री) के कंधों पर है। जब एक नारी संसार के सर्वशक्तिमान देश के वित्तीय ढांचे को सफलतापूर्वक संचालित कर सकती है, तो घर चलाने में गृहस्वामिनी के प्रभाव को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है? जीवन के हर क्षेत्र में जब महिलाओं के महत्त्व को सबकी स्वीकार्यता मिल चुकी है तो गृहलक्ष्मी से घर के हर छोटे-मोटे मसले पर सलाह लेना पूर्णतः उचित है। इसमें दो राय हो ही नही सकती।

❐ **सुरेन्द्र बजाज,** जयपुर

नारी भी सम्मान की अधिकारी

नारी को दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी का अवतार माना जाता है, वह पूजनीय है। यह खबरें केवल अखबारों की सुर्खियों में सिमट कर रह जाती हैं। वास्तविकता कुछ और ही है, अधिकांश परिवारों में आज भी महत्त्वपूर्ण निर्णय पुरुष लेते हैं और महिलाएं उपेक्षित रह जाती हैं। जब कि समय प्रबंधन हो, चाहे अर्थव्यवस्था, नारी जिस कुशलता से प्रबंधन कर सकती है, उतना कोई और नहीं कर सकता। रिश्तों को सींचने से लेकर समाज में अपनी अलग पहचान बनाने तक हर कार्य में वह पारंगत होती है किंतु अनेक आवश्यक मुद्दों में उसकी राय नहीं ली जाती, यह अनुचित है। खासकर पूंजी निवेश संबंधित मसलों में उसे उपेक्षित रखा जाता है, घर के आय-व्यय का समुचित ब्योरा भी उसे बताया नहीं जाता जो कि गलत है। प्रकृति प्रदत्त नारी संवेदना, समर्पण, त्याग के गुणों से सुशोभित है, अपनी घर गृहस्थी के प्रति उसकी समर्पित भावना इतने चरम पर होती है कि कई बार वह खुद का अस्तित्व भी भूल जाती है। आज नारी हर क्षेत्र का ज्ञान रखती है। परिवार का शुभचिंतक गृह लक्ष्मी से बेहतर और कोई नहीं हो सकता इसलिए किसी भी निर्णय की तह तक पहुंचने से पहले गृहस्वामिनी की राय और सहमति अवश्य लेनी चाहिए। उसके निर्णयों का दायरा केवल चौके चूल्हे तक सिमटकर ना रहे।

❐ **राजश्री राठी अकोला,** महाराष्ट्र

हर फैसले में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका

गृहस्वामिनी मतलब, बेटी, बहन, बहू, पत्नी, गृहलक्ष्मी का सफर तय करने के बाद मिलने वाला पद। अपने इस सफर मे उसके पास अनुभवो का अंबार होता है। घर के अहम फैसलों में उसकी सहभागिता आवश्यक है। यदि उसकी सलाह के बिना अहम फैसले लिये जाते है तो अपनी उपेक्षा के कारणों का सूक्ष्म अवलोकन जरूरी है कि कहां हमारी दूरदृष्टिता एवं सकारात्मकता में संकीर्णता है। अपनी सकारात्मक सोच, धैर्य और निष्पक्षता के दम पर ही वह अहम फैसलों को सुखद परिणाम दे सकती है। अगर पुरुष अपने अहम के चलते गृहस्वामिनी की उपेक्षा कर रहा है तो विरोध से अपने अस्तित्व का अहसास कराना अति आवश्यक है। कभी-कभी धैर्य, त्याग, अपनेपन व प्रेम के अभाव में रिश्तों की नींव कमजोर हो जाती है। ऐसे में मतभेद मनभेद बन जाते है। सार यही है कि अपनी स्वस्थ सोच से सभी के मन में समाते हुए गृहस्वामिनी की गरिमा को बरकरार रखें, ताकि हर महत्वपूर्ण फैसलों में उसकी सलाह एवं सहभागिता उचित एवं अनिवार्य समझी जाये।

❐ **अयोध्या चौधरी,** अलीराजपुर म.प्र.

यह नारी का हक

गृहलक्ष्मी का घर आँगन में प्रवेश लक्ष्मी स्वरूप माना जाता है। कहा जाता है, जिस घर में नारी को प्रेम, मान, सम्मान मिलता है वह घर स्वर्ग सा तुल्यनीय होता है। गृहलक्ष्मी सारे घर की धुरी होती है। सारे घर को प्रेम के इत्र से महकाती, चहकाती है, घर में खुशियों का भंडार भर देती है। गृहलक्ष्मी में लाखो खासियत हो, पर अहम फैसलों में उसे नादान, नासमझ, लापरवाह कहकर दरकिनार कर दिया जाता है। जो कि उसके खुशहाल जीवन में टीस का कारण बनता है। हर खुशियों के बावजूद भी आँखे नाखुश नजर आती है। ये सोचने वाली बात है। जब नारी होम मिनिस्टर बनकर सारे घर चला सकती है, तो अहम फैसलों में गृहलक्ष्मी की राय गलत कैसे हो सकती है? ये तो सोचने वालो के नजरिये की बात होती है। हो सकता है कभी वो भावनाओ में आकर फैसला लें, कभी फैसला गलत भी हो सकता है। किन्तु उन्हें अहम फैसलो में शामिल करके, गृहलक्ष्मी का सम्मान उनकी अहमियत पर चार चाँद लगा देते हैं, जो कि उनकी जीवन भर की पूंजी होती है।

❐ **किरण कलंत्री,** रेनुकूट (उत्तप्रदेश)

वह ही तय करे कितनी लायक

कटु है किन्तु सत्य है, कितनी ही बार बोलते सुना है - हमारी होम मिनिस्टर ही सब तय करती है, उनसे ही हमारी दुनिया चलती है, ये तो साक्षात लक्ष्मी है और वो जगत जननी मोह में बंधी रहती है। हां सच है कि रसोई का सामान, साग-सब्जी, चादर, साबुन, तेल सब उसके हिसाब से आता है, लेकिन जहां बात आए घर के कुछ महत्वपूर्ण फैसले जैसे कि बचत-निवेश, ऋण लेना-देना हो, नई कार लेनी हो, नया व्यवसाय या नौकरी की बात हो या चाहे मोबाइल ही क्यों नहीं, शादी-ब्याह जैसे बड़े आयोजन की तैयारी हो...'तुम्हें अनुभव नहीं इन सब बातो का', कहकर उसे जाने अनजाने दरकिनार कर दिया जाता है। स्त्री की शक्ति और बुद्धिमता में ना पहले कोई कमी थी जब वो पूर्ण रूप से घर ही संभालती थी और न आज। आज तो नारी पढ़ लिखकर हर क्षेत्र में आगे है ही, लेकिन फिर भी उसके भावुक होने या अनुभवी ना समझने के कारण उसे महत्वपूर्ण निर्णय में शामिल नहीं किया जाता है और यहीं वो अपने को अकेला, उपेक्षित महसूस करती है। उस पर ये डर की कहीं उसके द्वारा दी गई राय गलत हो गई तो कटाक्ष का सामना करना पड़ेगा। गलती किसी से भी हो सकती है। किंतु अधिकांशतः यह देखा जाता है, कि सब इसी अभिलाषा में रहते हैं, कि उसका निर्णय गलत साबित हो और वे विजयी हो जाए। अगर सही मायने में आप स्त्री उसका अधिकार, उसके हिस्से की जगह घर में देना चाहते हैं तो जरूरी है, ये उसे तय करने दीजिए कि वो किस लायक है या नही ना कि आपकी विशेष टिप्पणी।

❐ **नेहा बिन्नानी 'शिल्पी'**, कांदिवली, मुंबई

उसे उचित महत्व देना जरूरी

गृह स्वामिनी यानी सरस्वती का रुप तो फिर उससे राय लेना कैसे अनुचित हुआ? नारी के ज्ञान और अनुभव की हमेशा परीक्षा ली जाती है। जब गृह स्वामिनी ओहदा दिया है, तो कोई शक ही नही है। स्वामिनी का मतलब है घर की मालकिन तो उनकी राय मशविरा लेना चाहिए। क्योंकि एक महिला हमेशा सहजता, समझदारी, शालीनता की पराकाष्ठा पर रहती है। माना यह पुरुष प्रधान देश है लेकिन घर संसार की गाड़ी किसी वर्ग से नहीं चलती है। हर जगह हर क्षेत्र में मिलकर फैसले लेना चाहिए ताकि किसी बाहर वालों से पूछने की आवश्यता ही ना पड़े। सोने पे सुहागा है कि आज के युग में पढ़ी लिखी महिला हैं। सरस्वती और लक्ष्मी दोनों का उनके सर पर हाथ होता है। घर के लिए क्या उचित-अनुचित है, यह गृह स्वामिनी से बेहतर और कोई नही बता सकता। पुरुष भी जानते हैं महिलाओं की काबिलयत कितनी है, मगर कहीं-कहीं उनका अहं आड़े आ जाता है। आप शादी से पहले अपने घर की बहु सर्वगुण संपन्न देखते हैं, फिर पसंद करते हैं, तो उस बात पर कायम रहें कि हमारे घर की स्वामिनी सर्वगुण सम्पन्न है। साथ-साथ राय सलाह करने से कई रास्ते खुलते है। कारण एक नारी चारों ओर की सोचती है। घर की देखरेख में घर की ऊंच-नीच को पहचानती है, जिससे उसे व्यापार की खोज खबर भी रहती है। बस वो बोलती नही है, जब बोलना चाहती है तो उसे यह कहकर चुप कर दिया जाता है कि तुम चुप रहो, घर के मामलों में दखल मत दो। यह कैसे बोल सकते है? जब वो आपके घर संसार की सारी जिम्मेदारी अपना घर समझकर निभाती है। जितना घर पुरुष का है, उतना ही औरत का भी है सिर्फ नाम ही नही चाहिए काम से नाम चाहिए। घर के हर फैसले और निर्णय में गृह स्वामिनी का अधिकार है।

❐ **नीरा मल्ल**, पुरुलिया (प.बं.)

एक निर्णय कभी मान्य नहीं

गृहस्वामिनी कह दिया पर अगर उसे घर, वर और परिवार से न जोड़ा जाए तो उसका होना अधूरा सा रहेगा। जीवनसाथी का अटूट बंधन होता है इसलिए कि वे जीवन में आई कैसी भी परिस्थिति को साथ मिल कर निभाएं। आजीविका या परिवार पालन के लिए पुरुष यदि बाहरी दुनिया से संपर्क रखता है तो स्त्री परिवार में रहकर अपने दायित्वों का सही से निर्वाह करती है। ऐसे में किसी बात के लिए गृहस्वामिनी से सलाह लेना उचित है या अनुचित? यदि इस पहलू पर बात करें तो मेरी सोच यही कहती है कि युगल दंपति का एकल निर्णय कभी मान्य नहीं होगा। जीवनसाथी से सलाह लेने में कोई झिझक या तनाव नहीं रखकर दोनों एक दूसरे के पूरक बन जाएं तो आपसी सलाह से घर परिवार और व्यवसाय सब कुछ संवर सकते है।

❐ **दीपा एम. खेतावत**, जोधपुर (राज.)

दंपत्ति मिलकर लें निर्णय

गृहस्थ के कामों में जीवन प्रबंधन के वह सारे गुण आते हैं जो किसी भी विश्वविद्यालय या संस्थान में भी सिखाए नहीं जाते। आज की इक्कीसवीं सदी की नारी तो हर क्षेत्र में अपनी योग्यता व कुशलता का परिचय दे रही है, तो उनके निर्णय कुशलता पर सवाल उठाना बेमानी है। हम कहने को आधुनिक हो रहे हैं लेकिन महिलाओं के प्रति आज भी हमारे समाज में वही विचार और वही मानसिकता है, जो पुराने समय में शिक्षा के अभाव में थी। बेशक गृहस्वामिनी की सलाह अवश्य लेनी चाहिए यह तो कहावत है ना 'एक से भले दो'। गृहस्वामिनी की घर के हर निर्णय में सलाह लेने से उनका विश्वास तो बढ़ेगा ही साथ में उनका योगदान भी मिलेगा। आज का समय पति-पत्नी दोनों के मिल बाँटकर काम करने वाला है, तो गृहस्वामिनी को सदा साथ लेकर चलने से जीवन आसान और मजेदार बन जाएगा। आज की नारी लड़कों के बराबर ही शिक्षित और कौशल से भरी है, तो उनके निर्णय समाज और परिवार की प्रगति में सहायक ही सिद्ध होंगे।

❐ **विनीता काबरा**, जयपुर

स्त्री भी योग्य होती है

विशेष विषय जैसे आर्थिक निवेश, रिश्ते, बच्चों की शिक्षा आदि निर्णयों मे महिलाओं की सलाह ली जानी चाहिए। यदि ऐसा नही करते तो हम महिलाओं के अनुभव, दूर दृष्टि आदि के लाभ से वंचित रह जाते हैं। महिलाओं मे कुंठा उत्पन्न होती है क्योंकि परिवार के प्रति पूर्ण समर्पण के बाद भी उनका घर में उचित सम्मान नही होता। यह कुंठा उनके स्वास्थ्य, परिवार के प्रति समर्पण पर विपरीत प्रभाव डालती है। कई बार आर्थिक आवश्यकता नही होने पर भी महिलाएं बाहर काम करना चाहती है क्योंकि वहाँ उनकी योग्यता का सम्मान होता है। परिवार और समाज दोनों ही स्तर पर महिलाओं की निर्णयों मे भागीदारी कम है। इस प्रवृत्ति को बदलने की आवश्यकता है। महिलाओं को भी आर्थिक निवेश, निर्माण, शिक्षा आदि विषयों की जानकारी रखनी चाहिए। चाहे इस के लिए अपने मनोरंजन आदि के समय को कम करना पड़े। स्त्री, पुरुष दोनों की निर्णयों मे सहभागिता होनी चाहिए।

❐ **नम्रता माहेश्वरी**, पाली (राजस्थान)

पत्नी परिवार की सबसे बड़ी हितैषी

प्रकृति ने नर-नारी को एकदूजे के पूरक रूप में उत्पन्न किया है। फिर हम क्यों कम आंके? नारी को अनादिकाल से संसार रथ के पहिये की उपमा दी गयी है, एक ही चक्र से रथ मार्गक्रमण नही कर सकता तो फिर गृह के अहम फैसले कैसे लिये जायें? पारिवारिक रिश्तो में नारी को अर्धांगिनी का दर्जा दिया गया है। उसकी हर कार्य में राय लेना पूर्णतः उचित ही है। नारी गृहस्थाश्रम की आधारशिला है, अकेला पुरुष संसारूपी सागर पार नहीं कर सकता, पुरुष जल्दबाजी में अहम से निर्णय लेते हैं, तो नारी सोच समझकर निर्णय लेती है। गृहनिर्माण, मांगलिक कार्य, शादी-ब्याह, बच्चों की पढ़ाई में अर्धांगिनी की सलाह लेना ही चाहिये। आज के आधुनिक दौर में वह सर्वथा सक्षम है फिर क्यों नजरअंदाज करें? आज की नारी उच्च विद्याविभूषित व अनुभवी भी है। रामायण काल में भी दशरथजी, कौशल्या जी से विचार विमर्श करते ही थे, हमें तो उनका आदर्श आखों के सामने रखना चाहिये। आज स्त्री, पुरुषों के कंधे से कंधा लगाकर कार्य कर रही है, चाहे चंद्रयान उड़ाना हो, पायलट का काम हो, संरक्षण कार्य हो, वित्तमंत्री, राष्ट्रपति का पदभार भी बखूबी से निभा रही है। फिर हम घर में क्यों उनको अनदेखा करें। गृहलक्ष्मी की सलाह से किया गया कोई भी कार्य प्रशंसनीय ही होता है, सिर्फ उसे नाम की गृहस्वामिनी न रहने दें। नारी परिवार के लिये सबसे बड़ी हितकांक्षी, शुभचिंतक होती है। नारी सशक्तिकरण सिर्फ कागज पर ही न रखें, जीवन में भी उतारा जाय तो वह उसका सही मायने में सम्मान कहलायेगा।

❐ **छाया राठी,** यवतमाल

इससे आपसी प्यार बढ़ता है

जब हमने गृह स्वामी-स्वामिनी का दर्जा दे ही दिया है, तो सलाह से परहेज कैसा? क्योंकि गृह स्वामिनी सिर्फ ग्रहणी ही नहीं वह 10 हाथों वाली दुर्गा है। एक ही समय में दिल, दिमाग हाथ और मुंह से काम करने वाली रणचंडी है। बच्चों की सबसे पहली गुरु है। गृहस्वामिनी को लक्ष्मी कहा जाता है, जिसके होने से हर समस्या का समाधान पलभर में होता है। गृहस्थ जीवन के साथ भगवत प्राप्ति और कौटुंबिक तथा सामाजिक तालमेल बैठाना उसे अच्छी तरह से आता है। कमाई हुई पूंजी का तथा समय का मूल्यांकन और नियोजन करना उसे बखूबी आता है। कुछ बातों को अंदाज, तो कुछ को नजर अंदाज करके वह घर की शांति बनाए रखती है। ऊंची आवाज में बात ना करना मर्यादा में रहना यह उसकी कमजोरी नहीं बल्कि बड़ों के प्रति सम्मान है। सभी मेंबर्स को प्यार से रखना उनकी दिनचर्या का तालमेल बिठाना यही वह अपना कर्तव्य समझती है। उसकी बैटरी कभी डाउन नहीं होती और यह सबके बस की बात नहीं है। गृह स्वामी से विचार विमर्श करने से मन को तसल्ली और सही निराकरण मिलता है। आपसी वार्तालाप में सहजता होने पर उनके निर्णय भी सही साबित होते हैं। सलाह लेना या मांगना इसमें कमी महसूस ना करें। इसके विपरीत आपसी वार्तालाप से प्यार और सम्मान बढ़ता है, रिश्ता मजबूत होता है। सिर्फ गृह स्वामिनी को इसका ध्यान रखना चाहिए कि विचारों की स्वतंत्रता मिलने पर इसका दुरुपयोग न हो

❐ **मीना कलंत्री,** मुंबई

गृहस्वामिनी की राय लेना एकदम सही

गृहस्वामिनी की राय घर में होने वाले सभी कार्यक्रम में लेना उचित ही नहीं, मेरे सोच से जरूरी भी है, क्योंकि गृह स्वामिनी घर की लक्ष्मी होती है। उसे पूरा हक होता है, घर में क्या काम हो रहा है, क्या होना चाहिए या कैसे करना चाहिए, किन-किन को बुलाना चाहिए और आए मेहमानों को क्या-क्या देना? उनकी व्यवस्था कैसे करनी चाहिए वो बड़े सुंदर तरीके से करती है। हमारे उन्हें पूछने से वो घर के लिए उचित ही राय देंगी, जिससे घर की शान में चार चांद लग जाएंगे। अपने ही घर का मान -सम्मान बढ़ाने के लिए वो सही व उचित राय ही देगी। यदि हम उन्हें उचित मान देंगे, तो घर में कलह की स्थिति पैदा नहीं होगी और गृह स्वामिनी के दिल में कुंठा व ईर्ष्या के भाव नही आयेंगे जिससे परिवारिक जीवन में अमृत रस बरसेगा।

❐ **भगवती शिव प्रसाद बिहानी,** चूरू (राजस्थान)

गृह स्वामिनी के बिना गृहस्वामी अधूरा

जैसा कि इसके शीर्षक से ही प्रकट हो रहा है- गृह स्वामिनी, अर्थात जिसका पूरे घर परिवार पर स्वामित्व हो। गृह स्वामी और गृह स्वामिनी दोनों ही मिलकर परिवार की धूरी को सशक्त बनाते हैं। ऐसे में यदि केवल गृह स्वामी से ही सलाह ली जाए और घर स्वामिनी को अछूता छोड़ दिया जाए, तो न्याय संगत नहीं होगा। यह तो सर्व विदित है कि प्रत्येक व्यक्ति सर्वगुण संपन्न नहीं होता। यहां हम यह भी कह सकते हैं कि दो लोगों की सोच व विचार अलग-अलग हो सकते हैं। ऐसे में हो सकता है परिवार के किसी व्यक्ति के मन में कोई सोच या विचार जन्म नहीं ले पाते हैं, तो ऐसी सोच या विचार गृह स्वामिनी के मन में जागृत हो और वह सही मार्गदर्शन देने में व किसी भी कार्य के सुचारू क्रियान्वयन में सहायक हो। नारी तो वैसे भी गुणों का सागर है, भावनाओं का भंडार है। उसके द्वारा लिए गए निर्णय न केवल सटीक होते हैं, बल्कि इच्छाओं, भावनाओं व समय की कसौटी पर भी खरे उतरते हैं। गृह स्वामिनी द्वारा लिए गए सभी निर्णय परिवार की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाते हैं। व्यर्थ का दिखावा वह पसंद नहीं करती। उसके द्वारा लिए गए सभी निर्णय परिवार व परिजनों के हितार्थ होते हैं। अतः किसी भी परिवार में गृह स्वामिनी से सलाह लेना अत्यंत महत्वपूर्ण व आवश्यक है। गृह स्वामिनी परिवार का मात्र एक हिस्सा नहीं वरन् एक वही है जो पूरे परिवार में प्राण डालती है। गृह स्वामिनी ही मकान को घर बनाती है।

❐ **पल्लवी दरक न्याती,** कोटा (राजस्थान)

आप भी दे सकते है मत-सम्मत के लिये विषय

''**मत-सम्मत**'' सामाजिक समस्याओं पर चिंतन का ''**श्री माहेश्वरी टाईम्स**'' का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है। इसके द्वारा न केवल सम्बंधित विषय पर प्रबुद्ध पाठकों के विचार व सुझाव ही प्राप्त होते हैं, अपितु यह पाठकों को विचार-विमर्श का ''**एक मंच**'' भी प्रदान करता है। अतः पाठकों से निवेदन है कि यदि मत-सम्मत में विचारों का पक्ष-विपक्ष रखने योग्य आपके पास कोई सामाजिक विषय हो तो हमें अवश्य प्रेषित करें। इस विषय पर भी विचार आमंत्रित होंगे। विषय का अंतिम चयन सम्पादक मंडल का होगा, जो सर्वमान्य होगा।

सम्पादक

खुश रहें - खुश रखें

जब भी कोई गलती हो जाए तो उसे सुधारने के लिए जोश से नहीं, शांति से काम लेना चाहिए

पं. विजयशंकर मेहता

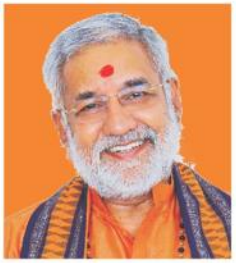

(जीवन प्रबन्धन गुरु)

कहानी - स्वामी विवेकानंद अमेरिका में व्याख्यान दे रहे थे। उनके सामने अधिकतर भारतीय बैठे हुए थे। उनका विषय था स्वदेशी वस्तुएं अपनाएं।

स्वामीजी देसी कपड़े पहने हुए थे। वहां मौजूद सभी लोग बड़े ध्यान से उनकी बातें सुन रहे थे। उस समय किसी अंग्रेज महिला का ध्यान उनके पैरों की ओर गया। विवेकानंदजी ने कपड़े तो देसी पहने थे, लेकिन उनके जूते विदेशी थे।

जब उनका व्याख्यान खत्म हुआ तो वह अंग्रेज महिला उनके पास पहुंची। महिला ने कहा, 'स्वामीजी आपने बड़े दबाव के साथ कहा कि स्वदेशी वस्तुएं अपनाएं। मैं भी आपकी बातों से बहुत प्रभावित हुई हूं, लेकिन जब मेरी नजर आपके पैरों पर पड़ी तो मैंने देखा कि आपने जूते तो विदेशी पहने हैं। ऐसा क्यों?'

स्वामीजी ने किसी मजबूरी की वजह से विदेशी जूते पहने थे। उन्होंने अपनी मजबूरी वाली बात नहीं कही। उन्होंने कहा- 'हमारे देश में अंग्रेजों का स्थान क्या होना चाहिए, कभी-कभी ये बताने के लिए मैं विदेशी जूते पहनता हूं।'

ये बात सुनकर सभी श्रोताओं ने तालियां बजाईं। अंग्रेज महिला के चेहरे पर भी इस बात से मुस्कान आ गई। विवेकानंदजी ने ये उत्तर देकर अपना विरोध अंग्रेजी व्यवस्था के खिलाफ प्रकट किया था, लेकिन हंसी-मजाक के साथ।

सीख - कभी-कभी जब हमसे कोई चूक हो जाती है तो लोग हमारे काम पर सवाल उठाते हैं। उस समय हमें गुस्सा नहीं करना चाहिए। चूक को सुधारने के लिए शांति से काम लें और सवाल उठाने वालों को जवाब देते समय ऐसे शब्दों का उपयोग करें, जिनसे उनके चेहरों पर मुस्कान आ जाए और हमारा उत्तर भी उन्हें मिल जाए।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'।
इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित **डॉ. विवेक चौरसिया** के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.

जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/- डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है. बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ... इसी के सूत्र बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी की पुस्तक "खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद".

Rs. 120/- डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -
- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - **"ऐसा क्यों?"** लेकिन इसका उत्तर देगा कौन? **इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक**

Rs. 100/- डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

KHANA KHAZANA

होली स्पेशल रेसिपी

1. फ्रूट पंच

सामग्रीः अनानास एक मध्यम, संतरा 10-12, चीनी चार टेबल स्पून, नींबू का रस एक टेबलस्पून, अदरक का रस 2 टीस्पून, बारीक कटा हुआ पुदीना एक टेबलस्पून, नमक स्वादानुसार, सफेद मिर्च पाउडर स्वदानुसार, चाट मसाला।

विधिः अनानास का जूस, संतरे का जूस, नींबू का रस, अदरक का रस, पकाया हुआ अनानास, संतरे का गुदा, पुदीना, नमक, सफेद या काली मिर्च पाउडर, चाट मसाला और बर्फ अच्छी तरह से मिलाएं।

ठंडा फ्रूट पंच गिलास में डालकर अनानास के स्लाइस और चेरी गिलास के किनारे पर लगा कर पेश करें।

2. वाटरमेलॉन कूलर

सामग्रीः तरबूज एक मीडियम, नींबू का रस दो टेबलस्पून, चीनी स्वादानुसार, नमक, स्वादानुसार, सफेद मिर्च पाउडर स्वादानुसार, चाट मसाला स्वाद अनुसार, बर्फ आवश्यकता अनुसार

विधिः तरबूज को बीच में से कट करके स्कुपर से बॉल निकाले।

तरबूज का पल्प (गुदा) निकाल कर उसे बड़े टुकड़ों में काट ले, गुदा मिक्सी में डालकर कम स्पीड पर थोड़ा-थोड़ा घूम कर मिक्सी बंद चालू करें, इससे तरबूज के गुदे का रस बन जाएगा परंतु बीज नहीं टूटेंगे। जूस छानकर उसमें नींबू का रस, चीनी, नमक, सफेद मिर्च या काली मिर्च पाउडर, चाट मसाला और बर्फ मिलायें। ग्लास में तरबूज का जूस डालें स्ट्रा से सजाकर पेश करें।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

रमन्ते तत्र देवता...

खम्मा घणी सा हुकुम नारी विशेषांक में आपा बात करां नारी रे सम्मान री ..

अह ! नारी रो सम्मान! इने लेने हर कोई चिंतित क्यों है? कांई यौ मुद्दों उतो ही महत्वपूर्ण है जिता कि समाज रा अन्य मुद्दा ?

हुकुम.. आपाणे समाज री मानसिकता कुछ इण तरह री हैः नारी रो सम्मान तो सब चाहवे, पर जण वा खुद ने सम्मानित करण री कोशिश करें, तो सगळा मिळ ने विने अलग-थलग कर देवे।' समाज री आंखों में, नारी रो सम्मान वो ही है जो दिन भर घर रो काम करती रेहवें, घर मे हर सदस्य रे खाणे और हर सदस्य री फरमाइश रो ध्यान राखणो पसन्द करें' पर .... कदैई यो भी सोचियो कि काई यो ही सब कुछ है नारी रो सम्मान? कांई ऊनि महत्वाकांक्षाओं ने धूल धूमिल कर देवणो चईजे, कांई उने विचारों ने घर री चार दीवारों रे भीतर ही बंद कर देवणो चईजे, कांई यो ही है नारी रो सम्मान?

हुकुम नारी रे सम्मान री बात जणे भी आवे हैं, तो समाज रे बाजार में विने सिर्फ सामाजिक जेब में रखने देखियों जावें। हुकुम नारी एक पत्नी है, एक माँ है, एक बहन है - पर कदैई उन बारें में सोचियो है ऊना भी कुछ सपना है और वा भी अपने सपनों रे पीछे भाग री है, वा भी खुद री महत्वाकांक्षाओं ने पूरा करण रे वास्ते जूझ रही है?

नारी रो सम्मान वो ही है जिणमें उनी भी इच्छाओं ने सम्मान मिळे जैड़ी वा है ऊने स्वीकार करें, न कि कि समाज ऊने बणाणों चाहवें। ऊने आपरे सपनों री ऊंचाई तक पहुंचण रो अधिकार दियों जाणों चहिजे। वा एक राजनीतिक नेता, एक वैज्ञानिक, या फिर एक कलाकार एक साहित्यकार हूँ सके। बहन बहु बेटी ने समानता रो दर्जा मिळनों चहिजे । वेद लिखे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता अर्थात जठै उणरो सम्मान है वठै देवता निवास करै हुकम।

वा शक्ति है, वा श्रद्धा है,
वा सपनों री परिभाषा है।
नारी रो सम्मान करों हुकुम
समृद्धि री राह में, वा एक आशा है।

मुलाहिजा फ़रमाइये

▸▸ *ज्योत्सना कोठारी*
मेरठ

- महफूज़ रह न सकेगा, ज़माने में अब कोई भी,
साज़िश हवाओं में है, दस्तरस में है कोई भी।
- किरदार ने मासुमियत अब खुद ही नीलाम की है,
आवारगी है चलन में, बहक सकता है कोई भी।
- जहरीले मंसूबे परोस रखे है पैकर में चाशनी के,
दोष नही किसी का, निगल सकता है कोई भी।
- जगमग सी भले दिखती हो ये रहगुज़र मुकाम की,
कालिख छिपी है मौके में, लपक सकता है कोई भी।
- दलदल है ख्वाहिशों की, हर अहलेकदम के नीचे,
उड़ने की कोशिशों में, रपट सकता है कोई भी।
- बुलंदी की जिद में मशीनों के जंगल बसा लिए,
चैन ओ सुकूँ की खातिर, भटक सकता है कोई भी।
- दिखावा है मुस्कुराहट, चोटिल है हसरतों के पर,
जीस्त के समझौतों से, सिसक सकता है कोई भी।
- जख्मों की टीस उतनी, जितनी रिश्ते से नज़दीकी,
दर्द मौत से भी ज्यादा है, गुज़र सकता है कोई भी।

कार्टून कौतुक

राशिफल संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

आपकी राशि वालों के लिए यह महीना उत्तम फलदाई रहेगा। मंगल उच्च राशिगत रहने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। आय के साधनों में सुधार होगा। व्यवसाय सम्बंधी कोई नवीन योजना बनेगी। महीने के उत्तरार्द्ध में कुम्भ राशि में 'मंगल- शनि' योग रहने से शारीरिक कष्ट तथा आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। एक के बाद एक समस्या सामने खड़ी रहेगी। संपत्ति में वृद्धि के योग रहेंगे। भौतिक सुख सुविधाओं पर खर्च करेंगे। ईश्वर के प्रति विशेष रुझान एवं विश्वास रहेगा। इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी।

वृषभ

यह महीना आपकी राशि वालों के लिए अत्यंत शुभ रहेगा। अचानक धन लाभ के योग रहेंगे। लोकप्रियता की प्राप्त होगी। धार्मिक यात्रा व शुभ कार्यों में भाग लेंगे। संतान के कार्यों की चिंता तो रहेगी परंतु काम बन जाएंगे। आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी परन्तु खर्च भी बढ़-चढ़ कर रहेंगे। व्यस्तता अधिक रहेगी, क्रोध पर नियन्त्रण रखें।

मिथुन

इस महीने में आपकी राशि वालों के लिए लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम सप्ताह के पश्चात स्वास्थ्य-हानि, अत्यधिक खर्च, तनाव एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। आर्थिक व घरेलु उलझनें बढ़ेंगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता मिलेगी। राजनीतिक संपर्क का लाभ होगा। आय में अचानक वृद्धि के योग रहेंगे एवं समाज परिवार में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। भूमि भवन से लाभ के योग प्रबल रहेंगे। संतान के सोचे हुए कार्य में सफलता मिलेगी।

कर्क

आपकी राशि वालों के लिए इस माह के प्रारंभ में क्रोध एवं उत्तेजना बढ़ेगी। वाहनादि सावधानी से चलाना चाहिए। आँखों में कष्ट एवं सिरदर्द से परेशानी आ सकती है। महीने के उत्तरार्ध में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। गुप्त रोग का भय रहेगा। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। आय के साधनों में वृद्धि होगी। भूमि भवन से लाभ होगा परंतु दांपत्य जीवन में वैचारिक मतांतर रहेंगे। शिक्षा जगत से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी।

सिंह

आपकी राशि वालों के लिए इस माह में सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। दांपत्य जीवन की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। प्रेम-प्रसंग में सफलता मिलेगी। उच्च पद प्राप्ति के योग रहेंगे। उच्च वाहन सुख का लुफ्त उठाएंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे किंतु रक्त विकार से कष्ट के भी योग बने रहेंगे। मानसिक तनाव एवं सच बोलने की वजह से परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

कन्या

यह माह आपकी राशि वालों के लिए मिला-जुला प्रभाव करने वाला होगा। बिना सोचे बोलने के वजह से परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। रक्त विकार के योग रहेंगे। विरोधी परास्त होंगे। भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी। शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूलता रहेगी। गुढ़ रहस्यमय ज्ञान की प्राप्ति के योग प्रबल रहेंगे। पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। विद्यार्थियों को अपने परिश्रम का लाभ मिलेगा।

तुला

आपकी राशि वालों के लिए इस महीने में रुके हुए कार्यों में कुछ सफलता प्राप्त होगी। आवश्यकता अनुसार धन प्राप्ति के योग प्रबल होंगे। विरोधी परास्त होंगे। जीवनसाथी से वैचारिक मतांतर बनेंगे। जैसे पैसा आएगा उसी रफ्तार से खर्च हो जाएगा। किसी कला के क्षेत्र में सफलता अर्जित होगी। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। शिक्षा जगत से जुड़े लोगों को अपने परिश्रम के अनुपात में फल कम मिलेगा।

वृश्चिक

आपकी राशि वालों के लिए इस माह में अचानक धन प्राप्ति के योग रहेंगे परंतु यश नहीं मिल पाएगा। शिक्षा जगत के जुड़े लोगों को लाभ मिलेगा। वाणी के कारण अपने बनते हुए कार्य बिगड़ जाएंगे। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। स्थाई संपत्ति में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। आय बढ़ाने के लिए नवीन साधनों के लिए योजना तैयार करेंगे। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा।

धनु

आपकी राशि वालों के लिए यह माह उत्तम फलदाई रहेगा। शासकीय नौकरी के योग प्रबल रहेंगे। भूमि भवन से जुड़े कार्यों में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। संतान के रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। वाणी की वजह से कार्य में व्यवधान उपस्थित होगा। मित्रों से सहयोग मिलेगा। चुनौती भरे कार्य को युक्ति युक्त तरीके से करने में सफलता अर्जित होगी। सर्दी-जुकाम से कष्ट के योग प्रबल रहेंगे।

मकर

आपकी राशि वालों के लिए इस महीने में इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न रहेगा। भूमि भवन से संबंधित कार्यों में लाभ होगा। नेतृत्व क्षमता बढ़ेगी। स्थाई संपत्ति में वृद्धि के योग रहेंगे। प्रेम प्रसंग के योग प्रबल रहेंगे। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। चुनौती पूर्ण कार्यों में श्रेष्ठ सफलता के योग रहेंगे। कार्य व्यस्तता भी बनी रहेगी। संतान कार्यों में सफलता मिलेगी। अचानक लाभ होने के योग प्रबल रहेंगे।

कुम्भ

यह माह आपकी राशि वालों के लिए मिला-जुला प्रभाव करने वाली होगी। इच्छित कार्यों में सफलता मिलेगी। विपरीत योनि की ओर अधिक आकर्षण बढ़ेगा। आय पर्याप्त तो होगी परंतु उसी अनुपात में खर्च भी हो जाया करेगा। भाई परिवारजनों का स्नेह तो प्राप्त होगा परंतु सहयोग नहीं। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में उलझने बढ़ेगी। कार्य की व्यस्तता अधिक रहेगी। प्रत्येक कार्य में प्रथम व्यवधान उपस्थित होगा फिर कार्य पूर्ण होगा। शेयर बाजार या तेजी मंदी से संबंधित कार्यों में सावधानी बरतना परम आवश्यक रहेगा।

मीन

आपकी राशि वालों के लिए यह माह परिश्रम की तुलना में फल प्राप्ति में विलंब एवं न्यूनतम प्रदान करने वाला रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। मानसिक तनाव जल्दी आ जाया करेगा। विवेक की अधिकता रहेगी। आय पर्याप्त होगी। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में उलझने आ सकती है एवं दांपत्य जीवन में नोकझोंक बनी रहेगी। पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। शिक्षा जगत से जुड़े लोगों को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

IS:1786

CM/L - 6943589

GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7,000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 22 Hospitals: 1 million patients treated

Over 75 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant.

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccine in Maharashtra. Over 4,000 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4,500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2023-2025
Despatch Date - 02 March, 2024

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com